

ASHA ARCHIVES

2282 1



आभारकाथि

2282 I

वनी ॥
॥१॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्रीस्वस्थानीपरमेश्वर्यै नमः ॥ ये वस्त्रा वरुणो इन्द्र
मरुतस्तत्त्वतिदिवैस्तवे वै देवांगपदक्रमोयनिष्येदेर्गायति ये ताम्रगाः ॥ ध्यानावस्थित
जलेन मनसा पश्यंति ये योगिना यस्यासंनविदुः सुशक्तु रगगा देवा यत लो नमः ॥ ५ ॥ श्रीन
चंदनचर्वितोज्ज्वलवपु उक्तो वरा मल्लिका मालालंकृत कुरा ला प्रविलसन्तु तावली शोभि
ता ॥ सर्वज्ञानविधानप्रस्तक ॥ वरा रुद्राक्षमाला वरागुदेवी वदन्तां तु ने वसन्तु मे त्रेला
कामा ताचिरं ॥ २ ॥ मूकं करोति वाचालं पंगुलं च यत्नेन गिरं ॥ गहपतम हं वंदे परमानन्दम
ध्ववं ॥ ३ ॥ ओं नमो भगवते तस्मै वासायामितने ज मे य स्य ज सा ॥ ४ ॥ वक्ष्यामि ना रायणा क
था मिमां ॥ ५ ॥ ॥ कुमार आज्ञागर्हन् ॥ हे अजन्त भक्ति नि निरु क चित्त मे लुन ॥ आदि यो
संसारमाजलामय छदा पर वक्ष्य विहृतं जलभिन्न गगना मित सय नगरिरु दा विहृका

॥१॥

नाभिदेविमहेश्वरदलकमलउत्पत्तिमयो ते सैकमलमा विवस्नातसिमेसारगर्गावितायारव
स्नाकाकानचिलायोर आम्भु हातकाकाहि अंशुलातका नाउजीरिका केदिदिया ते सैकामा
गुजीदेविबडावीरपराकमिमधु केटभनाउगया माउ देव विमय त्रिदेस लेकाकाकाकुभ
निजलामयसेसारमाभ्रमनगरिफिदीवस्नालाइदेव देव नतगारभयो तववस्नाइरा
इकनयोगमाया आरधनागया हेइश्वरीविह्वलाइजागागराइदेव नतगारभयो तववस्नाइरा
न्याकावचनसुनिविह्वलाइजागागराइदेव विह्वलाइजागागराइदेव नतगारभयो तववस्नाइरा
षिको धलेचोरे शुद्धगर्गा जपिमया देववर्षसाठिहज्जा १०००० वरुसममलमा उद्धमया
लेपनिमधु केटभ देसलाइ जित्तिसकेनर विह्व आजागदर हे देसलोतिमिरुवडापरा
कमिरहाछा मसंता धमना वरदानले उभन्या रयतिविह्व कावचनसुनिमधु केटभ दे

स्व. नी॥

॥२॥

तपले अहंकार गरि भन्यो॥ हे विष्णु उद्धम तला इहामिले जित्यो तें का वर दान देला सत्तेरा इ
हा भया हा मि संग वर दान माग यति मधु कैट भदै सले भन्या को सुनि श्री विष्णु ले भन्या॥ हे देस
हो म वर मागद कुवा चा वा ध भन्या र मधु कैट भदै सले प तिते ले ज्या मागला स सो अवस्य दिउला
भनि वा चा वा ध्या विष्णु आजा ग क न॥ हे देस को अरु थो क वर का मा श्रुति मि दु वे ला इ म मा रु मे
रा हा त दे वि म र विष्णु ले य सा व च न ग या का सु नि मधु कैट भदै सले भन्या॥ हे विष्णु तें ले क प ट व
र मा गि स ते प नि हा मि ले वा चा मा हा यो का ग रुं ज ला म य सं सार दे वि ज ल न भ या का ठा उ मा मा
र भन्यो॥ यति मधु कैट भदै सले भन्या प छि विष्णु ले नि दु वे दे स ला इ का घ मा लि हे ले सित मा
या॥ ति दे स रु रु को वो सो जा मि पृ थि भ यो ज सै सित का ल मा नु सा रा ले पा नि जा न्द छ त सै मे र
हो मा सु ल प र्व त भ यो हा ड ले प त्थ र भ यो॥ तो दे वि द ह ले अव स सार शृ ङ्ग रु भ नि प हि ले

॥२॥

[illegible]

वनी॥
॥३॥

श्वरतिमिकस्ताभन्या आशुभाया ले वस्त्रा शरु संसारतुल्या इ आ फे माया ले भुले रह्य कायस्ताति
मिलाइ कोटि २ नमस्कार फेरि एक मूर्ति ले तीन मूर्ति भै वस्त्रा विह्वल महे श्वर नाम भै रह्य काय
स्ता पर भै श्वरतिमिलाइ कोटि २ नमस्कार फेरि जगत्संसार का धनि सर्व व्यापि भै रह्य काय स्ता
तिमिलाइ कोटि २ नमस्कार ॥ हे इ श्वरति नाम हि मागरी अनंत मूर्ति विह्वल ले पनि न सका
को मक सो गरि स कला तिमा प्रसाद ले भू वन पाताल पर्वत शृष्टि गरि सका अ व पाणि हू हू
शृष्टि गरि सकुं यति वरदान दिनु हू वसु भन्या ॥ यति वस्त्रा लभन्या का वचन सुनि श्री म हा दे
व आज्ञा गर्छन् ॥ हे सूर्य अष्टाष्टिकर्ता पनि भया भूत भया शि हू हू को शृष्टि गरि पनि सका
भनि वरदान दिया वस्त्रा ले मन पा हू धि मान गरि श्री म हा देव ला हू सा ध्यायणा म गरि शृष्टि गरि
भनि सु मेरु पर्वत विषे गया श्री म हा देव पनि अंतर्ध्वं भया वस्त्रा पनि कैलास पर्वत गइ शि

॥३॥

व लोकविष्णु लोकवसु लोकसुन्द लोकजाना लोकभृष्ट गिरिसेवेभन्दा माधिधर्म लोकभृष्टि
गया ॥ फेरि सुमेरु पर्वत का पूर्व दिशा अमरावति भृष्टि गया अग्रयकोणा मा भद्र वति भृ
ष्टि गया दक्षिणादिशा मायमरे रिभृष्टि गया नैऋत्या कोणा मा कल्पावति भृष्टि गया पश्चिम
दिशा मा भद्रावति भृष्टि गया वायव्य कोणा मा गांध्यावति भृष्टि गया उत्तरदिशा मा अलका
परिभृष्टि गया दृशान कोणा मा जलोवति भृष्टि गया ॥ यतिभृष्टि गिरि सकि स्थावर जंगम
भृष्टि गया ॥ फेरि माशि हुरु भृष्टि गरी लाग्या पहिले कक्षप प्रभृति एक शय १०० कृषि मन ले
चिता उदै मा भृष्टि भया ॥ हे अगस्त्य मुनि भनि कुमार ले कलार अगस्त्य मुनि भं कन् ॥ हे सु
न्द कुमार ति प्रावचन रूपी अमृत कार समेरा का न रूपि जिभाले फेरि शपि उन घोज दछ
भृष्टिका उर कल्या को सुनि सका अवदेवता देत्य प्रनुष कस्तान रुले भृष्टि भया सो सु

सूची ॥
॥४॥

अथ कागर्ह आजागरयति अगस्त्य मुनिकावचनमु नि कुमार आजागर्ह न ॥ हे अगस्त्य मुनि
कश्यप ऋषिका आदिति १ दिति २ दनु ३ काश ४ योगा ५ सिंहिका दक्रोधा ७ पाधा ८ वलिष्ट ९ वि
नता १० कपिला ११ कुंडु १२ मनु १३ यस्ताना उगमाका ते रु सिधिया ॥ दितिका गर्भ देवि हिर
राप कश्यप प्रभृति देस्य जन्मा आदितिका गर्भ देवि चन्द्रसूय इन्द्र प्रभृति तितिक्षोदि देवता
जन्मा दनु का गर्भ देवि दानव हरु जन्मा ॥ काश योगा का गर्भ देवि गर्भ व हरु जन्मा सिंहिका
गर्भ देवि राऊ जन्मा क्रोधा का गर्भ देवि क्रोधा जन्मा पाधा का गर्भ देवि रंभाति लोत मा उर्वसि
प्रभृति अस्मरा जन्मा ॥ मनु का गर्भ देवि ब्राह्मणा क्षत्रि वैश्य शूद्र मनुष्य जन्मा वशिष्ठ विमता
का गर्भ देवि अरुणा गरुड संपाति मयूर कोकिल च रेवा जिवति मुनि या वो विनीवा जहं स
प्रभृति पक्षि हरु जन्मा कपिला का गर्भ देवि कामधेनु सिंह सांडल वाघराति घोडा भेडा बोक

॥४॥

मृगजरायो गैश वराहाप्रभृति पशुहं जन्मा कुंडुकागर्भ देवि शैशनाग अनन्तनाग
वासुकीनाग मरुतापन्ननाग कुलिकनाग कर्कोटकनागत शकनाग संघपालनाग प्र
भृतिनागरुहजन्मा ॥ हे अगस्त्य मुनि यस्तान्तरुह ले देवता कृषि यक्ष गन्धर्व किन्नर रा
क्षस असुरा नाग मनुष्य पशु पक्षि भृष्टि भयाकां देवि ब्रह्म ले अव इतला इ आकाराष्ट
हिंगरु भनिजु प्याधान जौतील प्रभृति नाना अन्न भृष्टि गया ॥ हे अगस्त्य मुनि अहिल
संक्षेप ले मात्र कंरुहु अरु पुग गान्तर देवि विस्तार उ जालायति भृष्टिका कृगकत्या अ
वतिमिला इज्या सुभु इछा छ भन भनि कुमार ले आज्ञा गयार अगस्त्य मुनि भंछन ॥ हे पा
वती कानन्द न कौन भवन मा कौन देवता छन दिक्पालक स्ता तरुह ले भया त्यो आज्ञा गर
यति अगस्त्य मुनि ले भन्या को सुनि कुमार आज्ञा ग छन ॥ हे अगस्त्य मुनि कैलास भवन मा

स्वः नी ॥

॥ ५ ॥

श्रीमहादेव छन्द वेङ्कटाश्रवणमाविष्टुछन्दसस्य लोकमावृत्ता छन्द उमाश्रवणमापार्वती
छन्दस्कन्दश्रवणमामकुशुमश्रवणमाशुक्रविछन्दनैकस्यश्रवणमाअरुक्रविछन्द
यतिश्रवणकाकुशकल्याअवदिकपालभयाकोकुशकरुहु ॥ कश्यपकृषिकाउत्रइन्दुलहि
मालयपर्वतमाजाइधैरैकालसम्ममहाकलुगारितपस्याग्यारश्रीमहादेवसंतुष्टुभइ ॥
हेइन्दुतैराभक्तिदेविमसेतोषभजावरदानलेउभनिष्ठवदिशाकादिकपालभइसुभनि
अमरावतिकाअधिपतिगरिपठाया ॥ फेरि एककोहिजाइतेसैगरितपस्याग्यारश्री
महादेवसंतुष्टुभइअग्निभनिनामराषिअग्रयकोशाकोदिकपालभइसुभनिष्ठ
दावतीकोअधिपतिगरिपठायाफेरि एकालेजाइतेसैगरितपस्याग्यारश्रीमहादेव
संतुष्टुभइयमभनिनाउराषिदक्षिणादिशाकोदिकपालभइसुभनियमउरिकाअधिप

॥ ५ ॥

तिगरिपठाया फेरिये काले जाइ ते सै गरित पस्याग यार श्री महादेव संतुष्ट भइ नै कृत्य को रा को
दि कपाल भइ सुभ नि कृष्ण वती को अधिपति गरि पठाया ॥ एकाले जाइ ते सै गरित पस्याग
यार श्री महादेव संतुष्ट भइ वरुण नाउ राघि पश्चिम दिशा को दि कपाल भइ सुभ नि श्रद्धा व
ती को अधिपति गरि पठाया ॥ फेरि उपचास वायु ले जाइ ते सै गरित पस्याग यार श्री महादेव
संतुष्ट भइ वरुण नाल उभयार उन्नपचास वायु ले हा मि सवै सै के रुत स कुं हा श्री रूप का
हि न दे पुन शव मात्रे सु नु न वल ले पनिक से ले न पाउ न भ नि मा ग्यार श्री महादेव ले तथा
स्त भ नि वरुण नाल दया वा सुभ नि नाउ राघि वायव्य को रा को दि कपाल भइ सुभ नि गाभा वती
को अधिपति गरि पठाया ॥ फेरि एकाले जाइ ते सै गरित पस्याग यार श्री महादेव संतुष्ट भइ कु
वैर भ नि नाउ राघि उत्तर दिशा को दि कपाल भइ सुभ नि अल का री को अधिपति गरि पठाया

स्वनी॥

॥६॥

फेरि एकाले जाइते सै गरित पसाग मार श्री महादेव संतुष्ट भइ विश्व कर्मा भनि नाउ राखि इशान को
गाको दिक पाले भइ सभनि यशोवती को अधिपति गरि पठाया ॥ हे अगस्त्य मुनि यति दिक पाल भ
या का कुग कह्यो ॥ अव श्री महादेव कि स्त्रि सप्त देवि मदी उत्तर पात भया का कुग कह्यो सुन भनि कु
मार ले आजाग मार अगस्त्य मुनि भंडन ॥ हे कुमार सप्त देवि श्री महादेव कि स्त्री कसौ गरि भइ न
कस्ति पुत्रि कुन कस्तार रहल मत्स्य भइ न का उत्तर पात भयो सो आजागर यति अगस्त्य मुनि को
वचन सुनि कुमार आजाग कह्यो ॥ हे अगस्त्य मुनि अष्ट प्रजापति भनि थिया आठ प्रजापति मा
श्रेष्ठ दक्ष प्रजापति कुन तन्कि स्त्रि विरनि नाउ गया कि थिइ न दशमा सप्तरी भै पुत्रि जन्मि न
कस्ति भन्नाह ज्जार सूर्य जस्ता तेज भया कि छत्ति सलक्ष गाले पुत्र भया कि पद्म पत्र जस्ता तेज
भया कि रक्तवर्णी अरु गाउद ये भया जस्ति रस्ति परम सुन्दरी पुत्रि जन्मा को देखि दक्ष प्रजाप

॥६॥

तिले मनमा आनन्दगरी आम्ना पोहित वशिष्ठपुत्रतिरुविहुरुजोतिषिला इशकि विधि
पूर्वक नामकर्मगगाया ॥ वशिष्ठपुत्रतिरुजोतिषिले जौतिकशास्त्रविचारगरी ॥ हे दक्षप्रजाप
तियस्रवालषिको नाम सप्तदेविभनित्रिभुवनमापस्यातलोलाभम्भारुसप्तदेविनामगाथा
दक्षप्रजापतिले पतिश्रद्धा पूर्वक दक्षिणादिभोजनगगाया ॥ आम्ना २ आम्भ्रममागया ॥ इति श्री
स्कंदपुराणे माघमाहात्म्ये केदारखरोडकुमारअगस्त्यसंवादे सप्तदेविउत्पत्तिनाम श्रीस्वस्था
निपरमेश्वर्याकथाप्रथमाध्यायः ॥ १ ॥ हे अगस्त्य मुनियो कुरा असंख्यरुतिमिलाइ संक्षप
ले मात्रकहेतु ॥ यस्मै तत्तत्तुल्ये दक्षप्रजापतिले अक्रिस्त्रिविरागाकागर्भदेविले तिस्रैकारिकं
न्याज न्याजे तिस्रैकारिकं न्यालाइ दक्षप्रजापतिरुविरागाले यथायोग्यले हितगरी पादिराया
लाहा अगस्त्य मुनिमुखा उक्त्वा ॥ हे कुमार दक्षप्रजापतिकाने तिस्रैकारिकं न्यादेव तारुले कस्त

स्वनी ॥
॥७॥

तरुहलेविभाहागयास्योआजागरभन्यारुभारआजागर्हन् ॥ हेअगस्त्यमुनिस्वर्गकासंप्र
र्गादेवताकृषिःयक्षगन्धर्वकिन्नरअष्टवसुदशदिक्पालप्रभृतिवसिसभागरिरुदाहामि
रुरुकास्त्रिदशप्रजापतिकालेतिस्कोटिकेन्याहन्विभाहागरुभन्यामाग्नकस्ताइप
ठाउभनिसवैलेमतोगरिनारदकृषिहेउभन्या ॥ हेनारदमुनितिमिदक्षप्रजापतिहेउजा
उउन्किंकन्यादिन्धुन्किमागिआउभन्यारयतिदेवतारुरुकावचनमुनिनारदकृषिलाइदे
वतारुरुलेपठायारलौभनिदक्षप्रजापतिकाघरगयादक्षप्रजापतिलाइभेदिशेष्टाचारगागमा
दक्षप्रजापतिलेपनिकाकाममाआउभयोभनिसुध्यायानारदकृषिलेआफुलाइदेवतारुरुले
पठायकाकुरावतान्तकह्या ॥ हेदक्षप्रजापतितिन्त्रातेतिस्कोटिकेन्यातेतिस्कोटिदेवतालाइदिउ
रुवस्रभन्यारयतिनारदलेभन्याकोमुनिदक्षप्रजापतिवहुतेषुसिभइ ॥ हेनारदमुनिभलोभ

॥७॥

जो भन्यो म धन्ये रखा छु मे राते ति स्कोटिके ना ते ति स्कोटि देवता ला इ दिना एक सत्त देवि मा त्रै दिना है
न का हा भन्यो मे रा पुत्र है न संपत्ति को रखा को गरि दे ला अरु ते ति स्कोटिके ना भन्यो देवता हुरु जै ले
भनन ति मि ज श्ला इ दिनु भनौ ला त सै ला इ दिना ति मि देवता हुरु है उ जा उ वि भा हा को दिन ठ ह
रा इ आ उ भनि ना ला उ पचा र ले पू जा ग मा य ति द क्ष प्र जा प ति का व च न सु नि ना र द क षि ले म जो छु
भनि द क्ष प्र जा प ति है उ वि दा भै स्व र्ग मा ग या ॥ देवता हुरु है उ उ गि द क्ष प्र जा प ति है उ भ या का क रा
स व ह त्तान्त क ह्या सत्त देवि वा है क द क्ष प्र जा प ति का ते ति स्कोटिके ना ते ति कोटि देवता हुरु ला इ दि
या ॥ अ व वि भा हा को दिन ठ ह रा इ प ठा उ भ न्या य ति ना र द सु नि ले भ न्या को सु नि देवता हुरु पु सि
भै ध न्ये ना र द भ नि वि भा हा को दिन ठ ह रा इ प ठा या ॥ सा मा गृ त या र ग रि द क्ष प्र जा प ति का घ र ग
या द क्ष प्र जा प ति ले देवता हुरु आ या का दे वि म न भा आ न न्द ग रि ना ना मं ग ल जा त्रा ग रि आ कृ

सूची॥
॥८॥

मञ्जीदाले सन्त देवि वाहे कते निस्कोटिके न्या ते नि सै कोटि देवता लाइ कं न्या दान दिया ॥ देवता हर
ले कं न्या दान पाइ आ फार खिलि आ फार आश्रम मा जाइ मा हा आनन्द ले विराजमान भै वस्तु भ
या ॥ यो वृत्तान्त कैलास पर्वत मार ह्या का श्रीमहा देव ले चाल पाया र इ देवता हर ले म छे उ एक वच
न पतिन सोधि मलाइ वाहे क गरि आ फर ले मात्र कं न्या दान लिया छे न ॥ कैलास का अधिपति भै मे
रो खिछे नन् अवमलाइ कं न्या दान को देला भनि नाना प्रकार ले चिन्ता गरि ध्यान दहि ले विचार गरि
हे मार दक्ष प्रजापति का ते निस्कोटिके न्या मास वैवाहि जे ठि सन्त देवि रह्या कि छे देवता हर ले मे
रो मञ्जीदा त राष्ठा कोर हे छे सो कं न्या माग्ग दक्ष प्रजापति छे उ क श्ला इ पठा उं म आ फे जा छु भनि द
क्ष प्रजापति का घर गया ॥ दक्ष प्रजापति ले महा देव आया कोटा ठे वाट देषि हे खिलि सो आया को महा
देव हो का भन्ना आया भनि आ फर खिलि विरगि सित कुश गरि रह दा श्रीमहा देव पति दक्ष प्रजापति

॥८॥

का घर मुनि उगि हा कपा या रुद क्ष प्रजापति ले ज्य ल निस्कि मा । ^{मा} आ उ भ नि रा कि हे म हा दे व का काम
ले मे रा घर आ यो भ नि हे ले मि त भ न्यो र श्री म हा दे व आ ज्ञा ग र्ह न् ॥ हे द क्ष प्र जा प ति मे ले ति मा घर
आ उ नु अ रु का म त के हि पि य न ति मि ले क पा ग रा ले ते ति स्को टि दे व ता ले कं न्या पा इ उ ड्वा र भ
या स न्य दे वि र ह्या कि ह् सो म ला इ क पा ग र म जो ग कि प नि ह् य ति श्री म हा दे व का व च न मु नि द क्ष
प्र जा प ति को इ भे भ न्यो ॥ हे पा पि ह् म हा दे व मे रि क न्या स न्य दे वि नं जो ग कि क सो ग रि हो लि तं ष रा
जि य सि स र्प को ग रु ना ला इ वा घ को छ ला व टि इ न्द्र रु त्रि शू ल हा त मालि उ ठा व य ल मा च ठि हि द न्या
म सा न मा वा स ग न्या भो ग ध त्नु रा घा न्या रि ग न्द्र र दे वी भा प नि अ सो भा य स्ता ले ले मे रा मु र्खा जि आ
इ य स्ता क रा ग रि स जामे रा घर न व स भ नि पा षु रा मा स मा ति उ ठा या श्री म हा दे व ले य स्ता त र ह ले द
क्ष प्र जा प ति ले ना ना त र रु ल आ फ ला इ नि दा ग मा को मु नि ह् उ व च न मु नि व रु तै चित्त दुर वा इ वा

स्व. नी. ॥
॥ ५ ॥

हिरगया नाना तरुले चिंतनाग रिभं छन नदिमा भया दिन्त्रभन्या होइ जांथ्यो अवकता जाउ क
श्लेस्यो कंमामलाइ पारिदेला भनि विहृष्टे उगया ॥ विहृष्टे श्रीमहादेव आयाका देवि चाहे उठि आद
रग रि विहृष्टा उनामा वसालिका कामल परिश्रम गर्नु भयो भनि सुधा पार श्रीमहादेव भंद छन ॥ हे
विहृष्ट भनि आ फुले सस्य देवि माग्न दक्ष प्रजापति का घर गया का कुरा दक्ष प्रजापति ले आ फुलाइ जा
ना तरुले निन्दा ॥ गया का कुरा सब हतान क ह्या मे रि विहृष्टे ननु जस्का रिहृष्टे नते स्का घर छे न
तसर्थ येहि कुरा गरा आ जा ॥ जसा गरियो कन्या मे रि ऊं छे ते सै पुक्ति गर यति श्रीमहादेव का वच
न सुनि विहृष्ट आ जा गर्छन ॥ हे इश्वर यो काम म पुया उलास देहे न मान दक्ष प्रजापति छे उजाइ
हे रुमन आउन जाल ति मिना हि वस भनि श्रीमहादेव लाइ पर्वाइ आ फु दक्ष प्रजापति का घर
गया ॥ दक्ष प्रजापति ले विहृष्ट आयाका देवि आदर गरि माथि ठाकि विहृष्टा उनामा वसाइ ॥ हे वि

॥ ५ ॥

हम आज मेरी घर मा पवित्र गर्नु भये भनि वरा आदर ले सुधा या र विस्र आज गछिन् ॥ हे दक्ष प्रजा
पति केहि माग्नु आना तिमिले दिना भया केहि माग्नु भन्ना दक्ष प्रजा पति भन्छन् हे विस्र आज ग
रु तिमिले माग्ना पछि केहि भया ऊ दिदिउ ला मेले माग्ना को दिना भया सत्य वचन बोले भन्दा दक्ष प्रजा
पतिले विंति ग्या ॥ हे परमेश्वर जी मा गोला स्व सत्ये दिउ ला भनि वाचा ग्या र यति दक्ष प्रजा पति
ले भन्ना पछि विस्र आज गछिन् ॥ हे दक्ष प्रजा पति मे वक्र गछ को अधिपति भइ मेरा सिद्धि छैनन्
तिमिले कृपा गरे ता ले तै तिस्रो दि दे वता ले के न्या पाइ उ झार भया सत्य दे वर ह्या कि छैनन् सो मलाइ
कृपा गर ॥ यति विस्र ले आज ग्या पछि दक्ष प्रजा पतिले मन मा विद्या त गरि भन्ना ॥ हे विस्र मेरा
पुत्र छैनन् सम पति को रक्षा गर ता ग्या कि दिनु त थिये न का गरु वाचा मा हा म्या र दिनु पयो
सो के न्या त भइ सु दिन ठरु राइ के न्या दान लेउ ॥ यति दक्ष प्रजा पतिले भन्ना पछि विस्र ले

स्व.नी॥

॥१०॥

लौभनि वै कृ ग ग या वि ह्यु आ या का दे वि श्री महा देव आ ज्ञा ग र्छन ॥ हे वि ह्यु ति मि ग या को का म क सो ।
भ यो भ नि स्र ध्या या र श्री वि ह्यु आ ज्ञा ग र्छन ॥ हे ज ग दी श्व र भ ग या को का म सि द्ध भ यो दि न लग्न प
नि ठे गा ना भ यो ए क यो क मा त्रै भ ये न का भ न्या ति मि ला इ भ नि मा गे न म ला इ भ नि व च न के
डा या भ नि वि ह्यु ले भ दा श्री महा देव ले स र्म मा नि शि र उ धो ग रि आ ज्ञा ग र्छा ला ग पा ॥ हे वि ह्यु
म क्का भ नु ज सा ग रि ऊ रू त सो ग नु रु व स भ नि आ ज्ञा भ यो ॥ ता हा पा कि वि ह्यु आ ज्ञा ग र्छन
हे स्वा मि ज ग दी श्व र य सो ग नु प म्मा लग्न आ इ प्र णा प कि क न्या दान दि न्यो वे ला मा नि पि द्ध रु प
स न्या सी मि श्रु क भै द क्ष प्र जा प ति का दार मा आ ड नु ते स वे ला मा क्का आ ज्ञा ग नु भ न्या ॥ हे द क्ष
प्र जा प ति हे वि ह्यु म ला इ भि क नु दि क न क न्या दान ग यो भ न्या दि न्या लि न्या डे वे ज ना ला इ श्रा
प ग रु ला भ नि आ ज्ञा ग नु ॥ ते स वे ला मा मै ले ति मि क न डा कि ॥ हे स न्या सि मे रो वे ला वि त्त ।

॥१०॥

लार्पोकं न्यादानं भैसत्रिविधं कैदिउलाभ्रापनगरभाहोआइवसभानिमवस्याकाठउमा
वसालिगपुलारुदक्षप्रजापतिलेकं न्यादानं दिदाउत्काआषाछलितम्राहानपादिदिउ
ला॥यतिविष्णुलेआज्ञागयाकोसुनिश्रीमहादेवपनिमनमारुषभैअसर्धानलेके
लासपर्वतविषजाभयाताहाप्रातकं न्यादानकोदिनआइउगोरविष्णुलेमहादेव
आउनत्तानिभनिदक्षप्रजापतिकोघरगयादक्षप्रजापतिलेपनिविष्णुआयाको
देविचौडेउठिआरिल्याइहस्ताधपादार्चगरिकनप्रोहितडाकियज्ञमालात्तल्याइ
सामागृतयारगरियज्ञगराउंनलाया॥यज्ञगराइविविधिरिसकिंकन्यादानदिन
तयारभया॥श्रीमहादेवभन्याविषभागधत्तुरुषाइमातिकनदक्षप्रजापतिकोघ
रजानविस्मातवविष्णुलेमहादेवभन्याआयननकन्यादानकोबलाभयोअवकसो

स्व. ॥
॥११॥

गरुभेराहातमाथाप्रभन्नाश्रीमहादेवलाइऊदेनकसोगरुभनिचिन्ताआकलगरिरह्याता
हाथातश्रीमहादेवलेकन्यादानदिन्यातआनहोविष्णुगयाऊभनिममज्यारवदसंन्यासि
कारूपभैचांउवायुवेगलेगरिदक्षप्रजापतिकोघरगया॥यज्ञसालाकानजीकमाघशभैभं
॥हेविष्णुहेदक्षप्रजापतिमअतिटाढादेघिआत्राभोकलागिरहेकुंभिक्षादेउमलाइभि
क्षानदिकेन्यादानदिन्यालाइयनिलिन्यालाइयनिआयगरुलायतिसंन्यासिरूपश्रीमहादेव
लेआजागयापछिविष्णुले॥हेभिक्षुकमेरावेलावित्तलागेकन्यादानभैसकापछितिमिला
इभिक्षादिउलाआपनगरअहिलेआहाआइवसभनियज्ञसालामाडाकिआक्रादाहिनाति
रवसालिगया॥भिक्षुकमहादेवकसावेलामाप्रग्नगयाभन्याविरगिलेसुवर्गाकाकमराउल
लेजलधारागरिदक्षप्रजापतिलेसत्येदेविकाहातसमातिविष्णुकाहातमासोपनलागदाते

॥११॥

स्तावेलाभापुनगयाविष्णुलेआक्रामायालेहोपिदक्षप्रजापतिकाआमाछलिसत्तेदेविकोहा
तसंन्यासिरूपमहादेवकाकान्तमायारिदिया॥सोदेविदक्षप्रजापतिवहोविष्णातगरिविष्णु
भन्या॥हेपापिविष्णुतिमिकपटिरह्याछोतिमाविस्वाममापदामेति॥किप्रविमत्तेदेविवडि
अवस्थापरिचयतिदक्षप्रजापतिलेभन्यापछिविष्णुलेसत्तेदेविश्रीमहादेवलाइकंन्यादानपा
रिदिअवमजोकुभनिसेन्यासिरूपश्रीमहादेवहउविदामेवैकुण्ठविषेजादाभया॥विष्णु
गयापछिदक्षप्रजापतिलेसत्तेदेविहउभन्या॥हेप्रविमत्तेदेविपापिविष्णुलेहल्दायुस्तो
ह्वद्रसंन्यासिस्वामियाइसत्तेयनिसंदहनमानतेराहामिछोतलाइहामिपालोलाअहिलत
तनेकासंगमाजायतिआक्रापितादक्षप्रजापतिलेभन्याकोसुनिवेनिरुसवैलेदेवतास्वामि
पायाकोसंमजिसत्तेदेविलेभविष्णुलेहल्दायुस्तोह्वद्रसंन्यासिस्वामियाइसत्तेयनिसंदहनमानतेराहामिछोतलाइहामिपालोलाअहिलत

॥ स्व. नी. ॥

॥ १२ ॥

राकर्ममायसैलेव्याकोरहेरु अवरोइकागरु कसैभयापनिवावामरुतारिलेदिया कोमेरास्वामिप।
निपागइनेदेवतापनिइनेभनिधैर्यभइताहायांतसंन्यासिरूपश्रीमहादेवलेसत्तेदेविकेउआ
जागया॥ हेस्त्रिअवनाहावसिकागरु आक्राघरजाउतेरावावामरुतारिकेउविदाहोयतिआक्रु
स्वामिलेआजागयाकासुनिसत्तेदेविलेहवसभनि॥ हेपितामाताअवमजांकुभनिविदामागिनर
जाभनिविदादिया॥ सत्तेदेविलेप्रणामगरिविदाभैसंन्यासिरूपश्रीमहादेवपछितागिगइन्वा
टामाजादासंन्यासिरूपमहादेवलेआजागछन॥ हेसुन्दरीकैहेघरदेविननिस्कन्यासुखमार
ह्याकि कोमलतंपरिश्रमहालासुस्त२आभन्यासत्तेदेविविंतिगछिन॥ हेस्वामिमत्तहिरुनस
ऊलातपानिहवावस्थाभयाकोछोपरिश्रमऊनजालासुस्त२हिरुजहवसभनियसैतरहलेअ
न्यान्यऊरागदेगया॥ सत्तेदेविलेसंन्यासिरूपश्रीमहादेवकोहवावस्थादेविइनिभन्याहवाव

॥ १२ ॥

साभया काम भन्या यस्ति जु वा नि मे रा स्वा मिला इ क सै ले के हि ग रि म ला इ रु रि लै जा न न कि भ नि म न ले ।
ना जा चिंत ना ग रि एक छि न प नि न छा डि स ग ला गि ग इ न ॥ कै ला स प र्व त मा उ ग्गा र से न्या मि रु प श्री म
हा दे व से स न्ये दे वि का च रि न हे नी नि मि त्त कै ला स प र्व त का टा पु मा एक ष र ले त्त ल्या या को घर उ त्त ति ग
रि भं क्त ॥ हे स्त्रि हा मो घर य हि हो आ इ उ ग्गा भ नि दे वा या भि त्र जा भो क ला गो हो के हि भ या या म
ला इ प नि प रि भ्र म भ यो एक छि न सु त्तु भ नि वि ष भा ग ध त्तु र षा इ वा हि रे सु त्त स न्ये दे वि ले त्यो ।
ष र ले त्त ल्या या को घर दे षि आ म्बु वा का द क्ष य जा प ति को घर स म्भ रि ते स्ता सु व र्णा का घर मा व स्ता म
ला इ य स्ता ष र का घर मा सु त्त प यो भ नि व क्त ते वि ष्या त्त ग रि आ खा दे षि आ म्बु ष सा लि न् ॥ फे रि मे रा क
र्म ले य सै प रि ल्या यो का ग रु भ नि म न तु ज्ज इ न् र व र्का का छे उ ले ओ सु प छि घर भि त्र प सि न् स वै वा
उ मा मा कृ रा का जा ला ले च इ वा टा ग्गा रै भ या को क सिं ग र भ न्या एक हा त वा लो दे षि न् त्या दे षि व्र चा

॥ स्वामी ॥
॥ १३ ॥

ले मा ऊ रा को जो लो मिल्का इ क सिंग र ला इ न ॥ फेरि स्वा मि जा गा रु न न क्यार वा न दि उ ला भ नि षा न्या व सक्त हे
रा ला गि न के हि पा ह न न र चित्त आ कृ ल ग रि सं न्या सि रूप श्री म हा दे व सु सा का ठा उ मा जा इ पा उ मु नि
व सि रहि न ॥ नौ दि न भ या प छि श्री म हा दे व जा गा भ या र स न्ये दे वि की सु ख हे रि ॥ हे पा पि वृ म ला इ य कै
वा हि र सु ता इ स आ ऊ मि त्र सु ति स ते सो ग रि स्ता प नि त ला इ षा न प र्दे न थो कि के हि षा इ स्ति षा इ
न स भ नि ना ना त रु ले वै ग रा ला गा ॥ आ कृ स्वा मि सं न्या सि रूप श्री म हा दे व ले ना ना त रु ले वै ग रा
ला गा को सु नि स न्ये दे वि ले ह सा इ लो उ र व ग रि आ कृ स्वा मि को सु ख हे रि विं ति ग छि न ॥ हे स्वा मि ति मि
ला इ सा हे नि न्द्रा प या को दे पि जा गा ग रा उ न स कि न म सु त्या कि प नि छे न ना हि आ इ व सि र ह्या कि दु
मे ले त भं डा र मा ज्या भ या को मि ठा इ त्या दि षा ना आ ऊ का वा उ रुं छ भ नि न ॥ स न्ये दे वि क ति भ न्या स वै
शृं गार ग रि रि स मा प नि र स मा प नि उ ज्वा लो ग रि स्वा मि भ क्त मा चित्त ला इ र हं धि न उ ति स न्ये दे

॥ १३ ॥

विलेभन्यापछि ना हा का थि पोर वा इ हो लि भ नि य स स न्ये दे वि कि म न मा पा प र हे न छ भ नि फेरि कर
शा मूर्ति सैन्या सि रूप श्री म हा दे व ला इ अ ति क रु शा भ योर हे प्रि य हा मेा घर यो हो इ न त्यो घर का भि
ता च्या लि हे भ न्या र स न्ये दे वि भं छि न् ॥ हे स्वा मि भ या को घर भ का इ न भ या को घर क ता हे रा जा उ फेरि
वे ना उ न प म्या नि मि स डा व स्ता भ या का म स्त्रि जा ति को व मा इ दे ला य ति स न्ये दे वि कि व च न सु नि स
न्या सि रूप श्री म हा दे व उ ठि ष र का भि ता मा ला त ले हा नि मि ल्का या र कै ला स का म रु ल स न्ये दे वि ला
इ दे र वा या ॥ तो म रु ल स न्ये दे वि ले दे वि न र भं द छि न् हा इ २ क स्तो रा मो म रु ल र हे छ मे रा वा वा को
घ र चा हि रा मो म रा मा नि का घर ना ना र त्त ले ज डा उ ग या का सु व रा व ने का दे वि स न्ये दे वि व
ऊ त उ सि भ इ ॥ हे स्वा मि यो घर क स्को को ला भ नि न र सैन्या सि रूप श्री म हा दे व ले ॥ हे स्त्रि यो घर का
भो हा भ न्या र इ इ स्त्रि उ रु व आ कृ स्वरूप दर्शन भ नि कै ला स का म रु ल का चो क मा डा कि ल गि हे छि
दिन

स्व-नी॥
॥१४॥

चो फका मा ऊ म रा तु ल गा इ का गो व र ले म रा तु ला का र ग रि पो त भ न्या क य ति आ फु स्ता मि का आ ज्ञा मु
नि स त्पे दे वि ले गा इ को गो व र स्था इ मा ऊ म रा तु ल पो ति दि इ न् सं न्या सि रु प श्री म हा दे व प नि तो पो
त्पा को ठा उ मा जा इ ह द्रा व स्ता छो डि आ फु स्त रु प धा रि स त्पे दे वि ला इ दर्शन दि या श्री म हा दे व
का स्त रु प क स्तो थि यो भ न्या के व ल फु टी क को व र्णा भ या का अ सं त शो भि त म न ऊ न् के सो ऊ न् के र्णा
म न ऊ न्या य स्ता रु प का श्री म हा दे व ला इ दे वि न् र त व ज स त्पे दे वि ले म न मा अ ति रु ष मा न ग रि
आ र का दे वि रु ष का आ सु व हा इ ध न्ये २ मे रा भो ग्ये मे रा स्ता मि त श्री म हा दे व र स्था क न् भ नि अ
सं त रु ष भै अं ज लि वा धि ती न फे रा प्र द क्षि शा ग रि फु ल का मा ला ग ॥ ॥ ला मा प दि रा इ सा र्णा ग
प्र णा म ग रि न् ॥ सा हा पो त उ इ स्त्रि पु रु ष पंचा म त त या र ग रि भो ज न ग र्दा भ या ॥ भो ज न ग रि स
कि डु इ स्त्रि पु रु ष व डो आ न न्द स ग र रु दा भ या ॥ कै ला स प र्व त क स्तो थि यो भ न्या चा दि का प र्व त ॥

॥१४॥

जस्तो अने करतन वजीत भया का फटिक का घुम्ब वसाया का सुवर्ण का जाल मणि माणिक जड्या
का अति सुन्दर मठ वसा का यस्ता स्थान मास ते देवि सहित वावै का घमारा शिव नन्दि भिन्दि दा
हिना पाउमा राघि अघि पछि भूत येत लाइ कन सत्ते देवि सहित श्री महा देव कैलास पर्वत
मा विगज मान ग रिरु दा भया ॥ इति श्री स्कन्द पुराणे केदार खण्डे माघ माहात्म्ये कुमार अग
स्त्य सम्वादे सत्ते देविकैलास प्रवेश नाम श्री स्वस्थानि परमेश्वर शक्ति कथा द्वितीयाध्यायः ॥ २ ॥ कुमा
रै फरि आजा गछे न ॥ हे अगस्त्य मुनि दक्ष प्रजापति लेते तिस्कोटिकं न्याते तिस्कोटि देवता ला
इके न्यादान दिस वैलाइ जुवां नितु लाइ कार्य सिद्धाइ आनन्द मार साया थिया एक दिन दक्ष प्र
जापति ले आ फिस्त्रि विरली छे उभया ॥ हे त्रिहामिले अस्व मेध यज्ञे गरी चिता या को धरे का
लभयो योधन संपत्ति भाले का गरुडोरा छे न योधन दुवका कार्य मा लाउ अवयो धन धन

॥ स्व. ती ॥

॥ १५ ॥

गरिअ स्वमेध यज्ञगुरुभन्या र विरणीले पनि वढि गभनि आक्रापोरुत बरु स्पतिलाइ कोलाउ
न पठाइ न ॥ बरु स्पति पनि आइ प्रगार दक्ष प्रजापतिले प्रणाम गरि विंति गछु न ॥ हे गुरु ति ॥
मिलाइ विंति गछु अरु थोक होइन केन भन्या हाम्रा छोरा छैन सन्ने देवि सम्पतिकोर बवार भ
निगषा को विहनु ले छु ल्या र मरु देव लाइ पायो अव योधन यचर्च गरि अस्व मेध यज्ञगरी आद्या
तमर्थ कसा गन्या हो का का सामा गृचाहिं छु भनि विंति गयार बरु स्पति भन्छु न ॥ हे दक्ष प्रजा
पति यो काम वढि गयो हो भनि दिन के रा लाग्ना दिन ठे गाना गरि बरु स्पति गया ना ला पछि द
क्ष प्रजापतिले आक्रिस्त्रि विरणी लाइ सामा गृत पार गर भन्या र श्री मरु देव र सन्ने देवि
वाहे क स वै छो रि जु वाइ बुझा विहनु प्रभृति देवता कृषि यक्ष गभर्व किन्नर देव नाग अप्स
रा दशादि गणालरु रुलाइ निमंत्रणा गरी पठाउ भन्या र यति आक्रास्त्रा मिदक्ष प्रजापतिले

॥ १५ ॥

भन्याको सुनि विरगी ले पनि संपूर्ण सामा गृत्तयार गरि नरुम रुा देवर सत्ते देवि वा दे क स वैछो
रि जु वानि वस्त्रा विस्त्र प्रभृति देवता कृषि यक्ष गन्धर्व किन्नर दे सनाग असरा दशदि कपाल ल
इ निमंत्रणा गरी पठाइ न॥ दक्ष प्रजापति का स वैछो रि जु वानि देवता कृषि यक्ष गन्धर्व किन्न
र दे सनाग असरा दशदि कपाल रु रु ले नाना वस्त्र अले कार पै हियु ज मा हो सु भ नि सु व री
मरिा मा गिक ना ना इ वलि दक्ष प्रजापति का घ र ग या॥ दक्ष प्रजापति ले स वै जु वानि छो रि
सित श्रेष्ठा चार ग मा सु दिन मा क न व ल ती थ मा अश्व मे ध य ज ग री आ र भ ग या॥ क सो
य ज भ न्या ज सै श्री म रुा दे व ले न नि नि च त्त व रि जो गि नी भू त प्र त पि शा च प्र म थ ग रा
ले स ग भै व स्ता ज सो स्व भा य मा न दे विं छ त सो अ रु मं ग ल र्श ण घ ट इ त्या दि तै ति स्को टि छो
रि तै ति स्को टि दे व ता जु वानि वस्त्रा विस्त्र प्रभृति देवता यक्ष गन्धर्व किन्नर दे सनाग अ

स्व.नी॥
॥१६॥

मंगला इश्वर्या निगमिमासी करत्न नाना वस्त्र अलंकार लोमिता च गी दवाद्य यज्ञग
दा स्व भायमान देवियो ॥ यस्तान्तरु लेमाहा आनन्द लेय जग रिरु दाना रदक धिले को
आया को आयन न भनिय ज देवि उठियता उता हो रिरु इ न लाग्पा दक्ष प्रजापति का तति
कोटि कं न्या वस्त्रा विलु प्रभृति देवता तेति स्कोटि कं धिय क्षग भव वं कि भू रु दे स नाग अ
मरा दश दि कपाल सवैला इ देव्या श्रीमहा देव र सन्ने देवि दु इ ला इ दे व ज न र श्रीमहा
देव सन्ने देवि आयन न कि दक्ष प्रजापति ले नि मंत्र गाग री वि स्था कि नि मंत्र गा ग र न न
विना श्रीमहा देव ले दक्ष प्रजापति को यज्ञ क सो ग रि को ला यो का हेतु हो विचा र ग रि हेतु
भनित त्वा ले उठिय देवि अंत र्धान भै कै ला स पर्वत मा ग या श्रीमहा देव र सन्ने देवि दु वै
का पा उ मा शि र ग वि अलगै अं जलि वा पि षडा भै र ह्या ॥ कस्त श्रीमहा देव भ न्या ज ट म कू

॥१६॥

८ भयाकावचम्वरलेकम्बरवेष्टितगयाकागजचर्मवल्याकाभस्मलेपनगयाकाठाउभमासर्पको
गरुनालायाकाभुगारुमालोषेहि याकावाउकाप्रमासत्तदेविलियाकानन्दिभिन्दिभूतप्रेतपिशा
चप्रमथगरालेयुक्तभयाकाकोटिस्तूर्यकाजसोतेजभयाकासत्तदेविलेचालपाउनिनभनिदु
वेस्त्रिपुरुषयासाषेत्नलागाकाधिया॥ पासाषेत्नमाजगाकसोषियोभन्याशोशनागकाआग
माकोठावनाइगोटिभन्यासताइसनशत्रकावत्तिसयोगिनीकापासावन्याकाचन्दुस्तूर्यसाहि
राधिकनसत्तदेविलाइभुलाउनाकानिमित्तयस्तातरुसितशिवशक्तिपाशाखलिबत्याका
धियायस्ताश्रीमहादेवलनारदकृषिआयाकोदेधि॥ हेनारदकाभन्नआयोभन्यारुयतिश्रीम
हादेवलेआज्ञागयापछिनारदकृषिविंतिगर्हन्॥ हेपरं वस्त्रदक्षप्रजापतिकोअस्त्वमेवयज्ञ
मावृक्षाविल्लप्रभृति॥ स्वर्गमर्त्यपातालतिनेलोककादेवताकृषियक्षगन्धर्वकिन्नरदेवनाग

॥ स्तनी ॥
॥ १७ ॥

असरा अख सुदशदिक्पालसर्वे आयाका छन फेरि सत्ते देवि वारे क द स प जा पति का तति स्कोटि
के न्यापनि आयाका छन तिमि कान जानु भयेन ॥ सत्ते देवि यज्ञ कर्ता तिमि हे रुस्त्रि पुरुष न देव्या को
देवदा भलाइ संदेह भयो र क्य कारणा हो भनि विचार ग र्वा आजा यति नारद मुनि ले भन्या को सुनि ।
श्रीमहोद वले त्यो दुगन सुनाउ भुजु वारे लिहारि र ह्या कुते रि आमा ले जिति रा व्याको छ मछे उके
हि कुरान गर भ नि श्रीमहा देव ले भन्या का सु नि नारद के हि वी ल्प सके न न ता हा या त सत्ते देवि भ
दि न ॥ हे स्वामि त पात्रि ले कान ते सो आजा गर्नु ऊं छ आज त पात्रि ले कानु भ यो मै ले जित्ता पनियो
संपत्ति त पात्रि को हो भो लि भे ले कानु त पति त पात्रि जित्नु हो ला त पति त पात्रि के हो के न ते सो आजा ग
र्नु ऊं छ भनि सत्ते देवि व कु ते चित्त उरवाइ आ पा दे वि ओं सु प सालि ॥ हे स्वामि सवै लाइ डा क ता हा ।
मिलाइ के न डा के न न हो भ नि श्रीमहा देव सित विंति गरि न श्रीमहा देव आजा गर्नु ॥ हे पृथ्वी ।

॥ १७ ॥

तें उन्का मनन पया कि उत्रि म मनन पया को उवा निडा के नन्ता जान दे ते ग म छंदे कु सं दे न गर उ
न्का यज्ञ मा हा मि न ग या का हो ला भ नि रु जा या र स ते दे वि भं छि न ॥ हे स्वा मि उ न्ने श के नन्ता प नि
य ज दे ष न म ला इ व ऊ ते इ छ भ यो जा इ आ उ कि भ नि विं ति ग रि र श्री म हा दे व आ ज्ञा ग छ न ॥ हे
ए य न हा कि आ की को य ज मा क सो ग रि जा उ वि शे ष ते आ कृ मा ने मा र हा कि अप मा ने कृ न जा
या य स र्थ ले जा न्ता का मन गर ॥ तं ग इ स भ मा अप मा न हो ला भ नि आ ज्ञा भ यो र य ति श्री म हा दे व
ले भ न्ता प छि स ते दे वि ले हे इ श्व र न्ता जान भ न्ता नार द का स ग मा जा इ य ज हे रि चा शे ग रि आ उ
ला म जां कु भ नि ति पि ग रि श्री म हा दे व ले न जा भ न्ता भ न्ते नार द का स थ ला गि ग इ न्द्र ॥ ता हा
प छि स ते दे वि र नार द कृ षि प नि वा ठा मा ज्ञा दा नार द कृ षि भं छ न ॥ हे मा ता स ते दे वि त पा नि
यो वा ठा जा उ रु व स भ यो वा ठा जां कु भ नि फे र वा ठा स ते दे वि ला इ प ठा या सो ज्ञे वा ठा आ कृ वा

॥ स्वनी ॥
॥ १८ ॥

उवेगलेगयार यज्ञगयाकाठा उमा उगाकहि पनिग यज्ञ कभन्या जसोपा रिकन आका आसन
मावसिजो अघिगयाका कामसोहितर रुसगपाठगरीलागण ॥ सत्तेदेविगयाकावाढेफेराऊना
लेथोरैवेरपछिउगगइन् यज्ञमापुगिदक्षप्रजापतिरुविरशीलाइप्रणा मगरिभंछिन् ॥ हेपिता
मातातन्त्रायज्ञमासंभृती देवताकृषि यज्ञगभ्वर्ककिन्त्ररदेसनाग अमरातन्त्रातेतिस्को
टिकेन्यासवैलाइडाकौलाभिडुइस्त्रिगुरुमलाइकेनवाढेकगमोयायज्ञकर्ताजगदीश्वर
श्रीमहादेवसंभृती देवताकापनिदेवता शृष्टिस्थितिसंहारकर्तापति केहिकार्यमापनि
नभैनेऊन्यायस्ताश्रीमहादेवलाइवाढेकगरिअथयज्ञगमोआजेपनिभैलेभन्याको
मानछोत श्रीमहादेवलाइडाअपठाइयज्ञमारायतवतन्त्रायज्ञसंभृतीसाफल्यहोहार
फलमित्तासंकरलाइअसंकरनगर ॥ विनासंकरलेतन्त्रायज्ञकसोगरिसिद्धहोलाकिपोव

॥ १८ ॥

स्मारात्तु गोलमादुद्धसे करभयो किभनि सत्ते देविले भनि नर दक्षप्रजापतिभं छन् ॥ हे प्रतिसत्ते
देवि दुःखनमानं सुन् ते रास्वामि मद्देव कस्तो भन्या अंगमाधरा निघस्याको वाघको कालाक
म्बरमावेद्याको कान्तिको काला वल्याको सर्पको गरुजा लायाको मुरादुमाला लायाको इन्द्रजि
भूलहातमालिकाको विषभागधरु रक्षान्याजटा मकूट गरिभूतप्रेत पिशाच प्रमथगरा स
गमालिहि दुन्या दिगम्बर ते स्ताला इव स्मा विष्णु प्रभृति सहरा देवता क्रुषियक्षगन्धर्व किन्न
र दैत्य नाग अप्सरा हरु ले नाना वस्त्र अलंकार पै दि श्रीस्वरा सुगन्ध लेपन गरि उच्चा हिउ रा
म्भाभ इव स्याका मेरा यस्ता यज्ञमा कसो गरि डा कुल लाइ डा का त्यो आउ ला किभनि तलाइ प
निन डा का को हा ॥ ते भ्राइ यज्ञकर्त्ता श्रुति स्थिति संसार गन्या भनि सु त्यो यज्ञकर्त्ता श्रुति स्थिति
संसार गन्या कसो गरि हा ला त्यो देवता को इ न व ऊ ला पो हो ॥ यज्ञकर्त्ता विष्णु ऊ न श्रुति स्थिति

संज्ञा

॥१५॥

संज्ञा रगनी ब्रह्मा कन ते श्ला इतडा कि मे रो यज्ञ क सो ग रि अशु इ हो ला अशु इ भ या प नि ते श्ला इतडा
भ्या है न ॥ वै ऊ रा ठ का अधि प ति वि लु ज ति आ या का क न्ता सो न आ या ले का हो ला सो न भै मे रो यज्ञ क
न्या है न कि भानि य स्ता तरु ले द क्ष प जा प ति ले आ फ्रा स्वा मि श्री म हा दे व ला इ निं दा ग या को दे वि श्व
द व च न ग या को सु नि स न्ने दे वि ले व ऊ त वि र वा त मा नि म न ले स रु न न स कि भं छि न ॥ शिव भ नि
श्री म हा दे व का आ ज्ञा न मा नि आ नार य स्तो भ यो अव को न ना के ल र ऊ श्री म हा दे व ले का भं न न ॥
इ नि रु रु ले न दि या का ठा उ ना ग या को प नि हो इ न अ नि मे रा स्वा मि क न इ न रु रु ले हा स्य ग रा को
योग प नि है न वै लो क का अधि प ति मे रा स स म ऊ न ॥ इ न रु रु का उ वा नि रु रु का प ति स्वा मि श्री म
हा दे वै ऊ न भ नि य स्ता तरु ले ऊ रा ग रि कौ ध उ ठि ला ल २ आ वा ग रि आ वा दे वि आ स्य स लि दं
त कि टि द क्ष प जा प ति को उ र व रे रि य ज ऊ रा ल मा जा इ ती न फे रा प रि क्र म ग रि य श्च मे रा स्वा मि ज

॥१५॥

गदीश्वर श्रीमहादेव लाइनिन्दागमो शिव २ भनि श्रीमहादेव का नाम उच्चार रागरिय ज ऊ राउल
मा प्रवेस गरि नरु हिमालय पर्वत कि स्त्रि मे ना कि ग भ मा वास लि न ग इ न ॥ सत्ते देविले य ज ऊ
राउल मा प्रवेस गरि प्रा रा का ड्या को दे वि समू री देवता ऊ वि य स ग भव कि नर दे स ना ग अ
स रा रु रु ले मा रु अनर्थ भयो का य स्तो भ यो भ नि रु रु कार ग रा ला गा दि ग दा रु भ यो वा यु ले वि प
रित मित व दि य ज मा रु ला का देवता ऊ वि य स ग भव कि नर दे स ना ग अ स रा रु रु ला इ उ रा उ
न ला गो ना ना उत्तर पात भ यो ॥ त्यो दे वि को हि भा गु न ला गा को हि भू मि मा प या को हि दु ला २ स्वर गरि
क रा उ न ला गा रु त व द क्ष प्र जा प तिले मन मा सं दे रु गरि न ड ग उ २ भ नि सं वे ला इ भो रो सा दि आ
ऊ रु रु रु स ति क्री षे छे उ जा इ ॥ रु रु रु अव क सो ग र्मा को भ नि य ति वृ त्तो न दे वि ना र द ऊ वि के
ला स पर्वत ग इ श्री महादेव लाइ सा रा ग प्र रा म ग रि ला त जो रि ॥ हे न ग दी श्व र या पि ह द क्ष प्र जा

॥ स्व. तः ॥
॥ २० ॥

पतितेतिमिलाइनातातरुलेनिन्दागमाकोसुनिआफुलाइअपमान्येगमाकोदेष्टिमेरिमातासमे
देविलेसहननसकिकोधलेशिवभजितमानाउउच्चारणागरियज्ञकरागुलमाप्रवेशगरिपारा
हाडिनशरीरभन्यातमाडरलेअग्निलेदग्धगरीसक्याकोकेनमहाअनर्थभयेयतिऊरागरी।
आनाजसागर्णहोगर्नरुवसभनिसत्तेदेविममाकोबुत्तातकहा॥यतिनारदकावचनसुनि
श्रीमहादेवआज्ञागर्हन्॥हेनारदयोऊरानिश्रयहाकिभन्यारनारदभंकुन॥हेइश्वररुजुर
मितअभिध्याऊराकसागरिगरुलाधानदृष्टिलेविचारगरिहेनरुवसश्रीमहादेवतेपनिध्या
नदृष्टिलेविचारगरिहेमारकोधलेदातकिटितीननेत्रदेष्टिअग्निकाज्वालानिकासिरुतामि
चि॥हेनारदविनाअराधमापापिष्टदक्षप्रजापतिलेमेरागनिन्दागरिमेरिपारासमानकिस
त्तेदेविमारिदिशोआजतेस्कोयज्ञविषंसगरिपारालिउला॥तेतिस्कोटिदेवतातेस्कोसाहाय

॥ २० ॥

मै आया पति अवसन पारि छोड़ देन ॥ हे नारद तिमि आऊ आश्रम जा उभन्यारु वस भनिसा ह्ये
ग प्रसा मग रि वस लोक माग या ता का प्रान्त श्री मरु देव ले आक्राशिर देषि एक ज टनिकालि भूमि
मापछाया त व मे पले ग ज मान ग या ज सो सर ग रि मरु भयं कर चतु षष्टि योगिनि ग गाले सहित
भै मरु कालि उत्पति भइ न क ति मरु कालि भन्या अग्निका ज्वाला जस्ता आ धा भ या कि लाल रंदा
त भ या कि कुम्बर माव घम्बर ले वेष्टित ग या कि के सफि न्या कि पे ट रु को कि दहि मरु त माख ड
लि या कि के हं हा स्या के हं जि श्री चण्ड न्या य स्ति भि ष ग मूर्ति श्री मरु देव का मु र्वा जि आइ म
लाइ का न आरु ध ना ग यो भ नि ष ग भै रहि न ॥ फेरि दो भा ज टालि भूमि मा प छाया बहे सिं
रु ना द सोर ग रि मरु विर विर भइ उत्पति भ या क स्ता वि र भइ भन्या रु ज्वा र स्त य का ते ज भ
या का मु राद मा ला ला या का दा हि ना हा त मा काल ज स्ता वि भू ले लि या का य स्ता वि र भइ श्री म

॥ स्व. श्री ॥

॥ २९ ॥

हृदेवका उर्यां जि आइ मलाइ कान अवाहनग यो भनिष सभै रखा ॥ यति महाकालि ।
विरभइ का वचन सुनि श्री महादेव आज्ञा गर्हना ॥ हे माहाकालि हे विरभइ नन्दिभि ।
न्दिभि अज्वर चतुषष्टि योगिनी भूत प्रेत पिशाच प्रमथग गासमेतभैति निरुद्ध दक्ष
प्रजापति कोय जमा जाउर तेति कोटि देवता होर भागरि ग व्याकाणपिष्ट दक्ष प्रजापति
कोय ज विव्वंस ग रि इन्द्रादि तेति कोटि देवता कृषियक्षग भव किंचर दैत्य जाग ते स
य जमा जो जो रखा काहे नति कोना सगरि आउति निरुद्ध लाइ आरधना गमा कोय तिका
म लेहो ॥ यति श्री महादेव ले आज्ञा गमा का सुनि महाकालीर विरभइ ले श्री महादेव का
आज्ञा शिरच हाइन न्दिभि न्दिभि अज्वर चतुषष्टि योगिनि भूत प्रेत पिशाच प्रमथग
गासमेतभै पलय काल का म पले गज मान गया ज सोस्वर गरि के लास पवत दे विग

॥ २९ ॥

यातिनाचालमाष्टिपनिकेपमानभयो ज्ञावत्तजीवात्माछन्नतिनलाडुत्राहिरभयोदक्षरा
पजापतिकायज्ञमापनिउत्तरपातभयो कस्तोउत्तरपातभयागृद्धकाकलेमगाउललिनलागो ज
म्बुआइभुक्लागो रक्तवृष्टिभयो यस्तेजानाउत्तरपातभया कौदेषियज्ञमाख्याकादेवता
कृषिगञ्जवृक्षकिन्नरदैत्यनागरुल्लेयो अमंगलको फेरिपनिकाकाऊंछभनिसंदेहमा
निरत्वा॥ तेमैओसरसामरुकालिवीरभइतन्दिभिन्दिभिष्मज्वरचन्द्रषष्टिशिगिनीभूतपत
पिशाचप्रमथगगाले सहितभैरवगका फौदमा भिरुजाइलाग्दाऊदक्षप्रजापतिकायसमा
जाइलाग्दाभिरुलेभिरु॥ १॥ ॥ सितपुंछगया जस्तो देवैपक्षकासेनाकोपरसरयुअभयो
सौदेषिदक्षप्रजापतिकातेति कौटिकेना कृषिवास्त्रावालषअसरावुढारुल्लाइत्रा
हिरभैरोइविश्वसितकगइभागिदशदिशागया॥ विलुपभतितैतिस्काटिदेवता

॥ स्व. ती. ॥
॥ २२ ॥

यश्च गन्धर्वकिञ्चरदैस नागलेदक्षप्रजापतिकानिमित्त आक्राशशस्त्रप्रहारगरिलइतला
गा॥ कस्तोशस्त्रास्त्रभन्त्या वृक्ष असु इन्द्र असु देव असु वायव असु वरुणा असु अग्ने अ
सु शक्तिसोमसु भिन्दिपाल सुदुग्गदा मुशल मुजल कुन्ता नागपाश यज्ञाशस्त्रास्त्रवसाया॥ महा
काली वीरभद्रले आक्रमधि शस्त्रास्त्रवसाया कोदै विजो धले नन्दि निन्दि चतुषष्टि योगि
नीभूतप्रेतपिशाचप्रमथगरा समतभैशत्रुशयका कसेका शिरकुट्याया कसेका हा
तपावकुट्याया कसेका रक्तपिया कसेका मासुषाया॥ रक्तलमातिता चनला ग्णाकोहि
हा सनला ग्णाकोहि दणुशीला ग्णाया सैतररुल कोटि २ देवता दक्षप्रजापतिका सेनासे
हारपाया॥ देवता यश्च गन्धर्वकिञ्चरदैस नागदक्षप्रजापतिका सेनाले फेरि २ महाका
लीमाधि शस्त्रास्त्रवसाया तोशस्त्रास्त्र महाकालिका नगीचमापनिमात्रे भस्मभैगयो॥

॥ २२ ॥

महाकालिचतुषष्टि योगिनीभूतप्रेतपिशाचप्रमथगरालेफेरिदक्षप्रजापतिकोसेना
मारिदियाभिष्मज्वरलेपनिसर्वैकाशरीरमापवैसगरिअचैलागरायाविष्णुलेसंमर्गादेव
तायक्षगन्धर्वकिन्नरदेवनागदक्षप्रजापतिकोसेनाअचैलाभयाकोदेविमितागज्वरउ
त्पत्तिगरिअचैलागराया॥नानाशस्त्रास्त्रलिअग्निकाज्वालाभापतंगजाइलागदाऊँविर
भद्रमायिजाइलागावीरभद्रलेत्रिभूलउठाइसिंहनादस्वरगरिसुकाकाघूरमाआगो
लागदाऊँक्षनेमाकोटिदक्षप्रजापतिकोसेनामारिदिया॥कसैकाशिरनाहिकसैकाहल
नाहिकसैकापावनहियस्तोदेविकोहिरक्षागरभनिभागाकोहिभागजननसकिभूमिमा
पमायज्ञपतिविश्वंसगरिदिया॥वीरभद्रलेयज्ञातरुलेदेवतायक्षगन्धर्वकिन्नरदे
वनागदक्षप्रजापतिकोसेनामायाकोभागजलागाकोदेविविष्णुकोधमैलालआखा

॥ स्वामी ॥
॥ २३ ॥

गरिनाग ले निस्सास गदी है सुस्सास हलि आगिका ज्वाला जसा भै वाउ हात ले पांच जने सेख
वजाइ दाहिना हात ले को मोद कि गदा उठाइ संहार काल का रुइ जा दोहे वीर भद्र का सेनामा
थि जाइ लागण ॥ सो देखि देवताय क्षग भव वी किन्नर देखे नाग दक्ष प्रजापति को सेना ले ध
न्य २ विलुति आजय कल्याण रु वस भनि आक्रा २ शस्त्रास्त्र लि विलुका संग ला गिल इ
न लागण ॥ सो देखि मरु काली को धले अगिका ज्वाला जसा बंदाते जनि का सिख डू उठाइ च
तुष छि योगिनी भूत प्रेत पिशाच प्रमथ गगाले सहित भै जाइ लागण ॥ जसे हुले वाउ चल्दा मे
घ गवराउ २ भै फाड़ु छत सौ देवताय क्षग भव वी किन्नर देखे नाग दक्ष प्रजापति को सेना लाइ द
हादिशा भगाइ न विलु ले निध क भै विर भद्र का छाति मा को मोद कि गदा प्रहार गया सो गदाग
यो र वीर भद्र का छाति मा ला गि मुछा भै भुमि मा पमा फेरित निदि निदि चतुष छि योगिनी भूत प्रे

॥ २३ ॥

तपि शाचप्रमथग गाला इत्राहि २ गग इषो च जन्म शंख लाइ वजा इग दास मा ति जाइ साग
प्रकार पतिग मार नदिभिन्दि चत्तु षष्टि योगिनी भूत प्रेत पिशाच प्रमथग गा शंख काश बृग
दा प्रकार ले भूमि मा परि मुर्छा भया ॥ कोहि भाग्न लागा सो देवि देव साय भग भव किन्नर देस
नाग दक्ष प्रजापति का सेना ले धन्य २ विष्णु भनि स्तुतिग मा पुष्प हृष्टि गरया ॥ विष्णु ले पांच
जन्म शंख वजा मा को दक्ष प्रजापति का सेना ले धन्य २ विष्णु भनि देव साय भग भव किन्नर
देस नागरु ले स्तुतिग मा को शब्द ले मुर्छा भै र ह्या का वीर भद्र का काल मा पया र चणभ
या ॥ आम्हा सेना कोहि भूमि मा पया को कोहि २ भाग्न लागा को देवि को धन्य लाल २ आ वा गरि
विष्णु ल उठा इविष्णु का छाति मा सा कि प्रकार गग मा ॥ विष्णु ल का प्रकार ले विष्णु मुर्छा भै भूमि
मा पया विरभ दले विष्णु मुर्छा पया को देवि प्रलय काल का मे घले गज मान ग मा ज सो स्वर ग

॥ स्वनी ॥

॥ २४ ॥

रिपो कगया तो देषि नन्दि भिन्दि चतु षष्टि योगिनी भूतप्रेत पिशाच प्रमथ गगा धन्ये रवीर भद्र भ
निना नास्तु लिगमा को को लोला शब्द मुनि विलुला इचे ह्यभयोर नन्दि भिन्दि चतु षष्टि योगिनी
भूतप्रेत पिशाच प्रमथ गगा समेत भैरवा कावीर भद्र लाइ देषि विलुले को ध भै भ चला ग्या ॥ हे
पापि कवीर भद्र आज ते रोना सगरुला ते राया रा लि द क्षप्र जातिका यज्ञ से पूरा ग रुला त व
से हरी देवता क वि यक्ष गन्धर्व किन्नर देव नाग लाइ संतोष होला आज का दिन रुका दश रुद्र
सहाय भै आया पनित लाइ रक्षा गरी संके न न सं पूरा इष्ट को विना सगर्भा यो चक्र देषि सकि
भनि सुदर्शन चक्र देषा यवीर भद्र ले विलुले भन्या काय साक्षु द च न मुनि को ध ले विलुला इ भ
न्या हे पापि विलु विर भै कन ते रा ते सा अहंकार रुना हो इ न सं पूरा इष्ट को ना सगर्भा भ
नि देवा इ स य स चक ले ना सग रुला भनि ते रा प रा क्रम मा फिक सा चक्रम छे उपहार गर

॥ २४ ॥

मपनि देषि काल सुख ले मात्रे भनि रहनु सो इन यति वीर भद्र का वचन सुनि विलुको धमै ।
अघि सरिकन सु दर्शन चक्र मंत्र गा गरिहात छु माइ अघोर सग कर इ वीर भद्र लाइ ता कि भु
दर्शन चक्र प्रहार गया ॥ सो सु दर्शन चक्र कस्तो गरि गयो भन्या कोटि सूर्य का ते जभै प्रलय काल
कामे धले गर्जमान गंगा जसो शब्द गरि काल रुद्र जा दाजे यस्ता तरु ले ग या को सु दर्शन च
क्र लाइ देषि नन्दि भिन्दि चन्द्र षष्टि यो गिनी भूत प्रेत पिशाच प्रमथ गगा भिष्य ज्वर आदि सबै
ले लाला कार गरि मरु देव रभ नै क राउ दे मरु काली वीर भद्र का शर गा मा ग या ॥ सु दर्शन चक्र
आ या को वीर भद्र ले देषार काल समान त्रिभूल मचाइ कन अघोर शब्द गरिहा सिकन आ
का श जसो सुख वाइ कन सु दर्शन चक्र सुखे माथा मिरा ॥ जसै समुद्र मथन गर्दा काल रु
द्र विष निस्कार श्री मरु देव ले निहा था तसै वीर भद्र ले निल नत या रभ या वीर भद्र ले सु द

॥ स्वामी ॥
॥ २५ ॥

शंखचक्रनीलनलागणको विलुले देवधारचाई आइ कनवीरभद्रको मुखको सुदर्शनचक्रजिकि
कनताहा देवि अंतर्धानले भागि वैकुण्ठमा जा दाभया ॥ इति स्कंदपुराणो केदारखण्डमाद्यम
हात्म्य कुमार अगस्त्यसंवादे सप्तदेवियज्ञकुरलप्रवेशनाम श्री स्वस्मानि परमेश्वर्या कथा तृ
तीयो ध्यायः ॥ ३ ॥ हे अस्तु निविलु अंतर्धान भै वैकुण्ठगया पक्षि यक्षगन्धर्व किन्नर देव
नाग दक्ष प्रजापति कासेनाले चाल पायार हेर २ वीरभद्रले विलु जसाका सुदर्शनचक्र अ
मिथ्या गरिदियार विलुला इभगाया अवदक्ष प्रजापतिको कसो गरि रक्षा होला अव आक्र
रक्षा गन्यो हो भनि दशदिशा भाग्य ॥ ताहा पक्षिमहापराक्रमि भयाका वीरभद्रले श्री नाराय
णका सुदर्शनचक्र वैर्था गरिदिया को श्री नारायण भागि गया को तति स्कोटि देवता यक्षगन्धर्व
किन्नर देव नाग सबै भाग्य को देवि दक्ष प्रजापति को उत्रि रु रु रु सति प्रभृति कृषि सबै आ

॥ २५ ॥

प्रशस्ति उक्ता उक्तानि मित्र यत्र तत्र भाग्यको देवि तारुण्यं विरभद्रमस्तु काली लोक
मोग्याभन्यामस्तु को धले लाल २ आवाग रिप्रल यकाल कामे घले गजमान गया ज
ज्ञास्वर गरि दक्ष प्रजापति माधि जाइ लाग्ना ॥ हे पापा पिष्ट दक्ष प्रजापति तैले त्रि
भुवन का इश्वर श्रीमस्तु देवला इना ना तरु ले निन्द्या गरि स्र यय गरि सत्त दे
विला इमारि स्र अवतला इपनि यसे यशमाला स्र स्र काला मि स्र वैला इ स्र तो वलो
ला भनि दक्ष प्रजापति का जगल दा समाति लोटा पार जा घमापा वदि म य कुत्या
इय ज कु रा ल मा पु सा मा ॥ तो देवि मस्तु कालि वस्तु वष्टि यो जिनी नन्दि भि न्दि भूत
प्रेत पिशाच प्रमथ गरा सवैले स्र के चो ट मा सो गे कुत्या गरि पृष्ठि पति के पमान
गरि वही घो क पारि जाइ लाग्ना ॥ धन्यै २ विरभद्र शिवला इ निन्द्या गन्या पा पिष्ट द

॥ स्त्री ॥
॥ २६ ॥

क्षप्रजापतिको सेल रग यौ ॥ हे विरभ इति मि दे वि दी र प रा क मि वि भु व न मा प नि ऊ नु
दुल्लभ भति ना ना सति ग मा ता हा प्रा त द क्ष प्र जा प ति की स्त्रि वी र गी ले आ कृ स्वा मि
दक्ष प्रजापतिको शिर रु द्या इ य ज्ञ क रा ल मा हो म्या को दे वि के रा का था म ठ ल्दा र्हे भु मि मा
परि मु द्वा भ र्म फे रि ॥ चे षा भ यो र सो क ग री ला गि न ॥ हे स्वा मि म ला इ य स्ता अ व स्ता पा रि अ
ना थ लु ला इ त पा त्रि क ता जा नु भ यो भ नि वि ला प ग री ला गि न ज ग दि श्व र श्री म हा दे व ला
इ य ज्ञ मा न डा क ता य ता भ यो यो ति मि ले न जा मा को ले म् ठ ज्ञा न म न मा लि शि व ला इ नि
न्दा ग दा ति म्रो प्रा गा ग यो मे रो यो अ व स्था भ यो भ नि ना ना त र रु ले सो क ग रि वी र ॥ भ इ छे
पु जा इ वि ति ग रि न ॥ हे इ श्व र वी र भ इ द क्ष प्र जा प ति भ मा को अ ज्ञा नि ऊ न अ हं का रि प
नि ऊ न ति न ला इ ज्ञा न को चे षा छे न न ते स्ता उ र्व ला इ ना सि ति मि ला इ का व डा त्रि हो ला

॥ २६ ॥

दक्षप्रजापतिलाइजीववरदानदिमेशोउकारगर्जकवसुमलाइविधुवानतुल्याइदिउरु
वसुस्वामिवरदानदेउ॥ मेरास्वामिदक्षप्रजापतिलाइजियाइमलाइउकारगर॥ हेवीरभ
इआप्रलेभृष्टिगरिआफैलेसंसारगर्जयोग्यछैन॥ तिमिकस्ताभन्याभृष्टिस्थितिसेरार
काकर्त्तव्यमैहोमहारुद्रपनितिमिहोआदिदेवपनितिमिआदिउरुषपनितिमिब्रह्मावि
ष्णुपनितिमिमहादेवपनितिमि॥ हेभक्तवत्सलमेशमुखहेरिदक्षप्रजापतिकामंदरी
अपराधहेमागरेजियाइदेउभन्यारआकाशभावसिइन्द्रादिदेवतालेपनिवीरभइमहा
कालीलाइअनेकप्रथमविश्वसाइकनवितिगरीलागा॥ हेवीरभइतेसदक्षप्रजापति
लाइजियाइवीरगीलाइसेतोषदिन्याहोभन्यारइन्द्रादिदेवताको॥ वचनसुनिवीरगी
लिशोकगयाकोदेविवीरभइलाइवशेदयाभयोरवीरगीकोमुखहेरिभक्तलागा॥ हेवीरगी॥

॥ स्व. श्री ॥
॥ २७ ॥

निमित्तले विलाप गमा को देषि मेरो अर्पित करुणा भयो अनिते रानि मित्र इन्द्रादि देवता ले पनिय
ऊतै विंति गमा तै ले पनि वऊतै सक्ति गरि सते रानि सक्ति देषि मवऊतै संतो वभआ तलाइ स्वा
मि वरदिं कुते रानि मि दक्ष प्रजापति को शिर मैले यज्ञ कुगुल मा लो म्या यज्ञ मा बलि दान ग
मा को वो क्का को टाउ को जोरि जि या इदिं कु लै जा का रुभ म्या तै श्वे जगदिश्वर श्री महा देवता
इ वरे रनि राग मा को रु य स अर्थ ले पसु कै टाउ को जोरि दिउ ला ॥ यति वीर भद्र ले भन्या पाछि
वि रानि ले रु व स भनि अंजलि बाधिरु हि न् ॥ वीर भद्र ले वो क्का को टाउ को त्याइ पछि तिर मु
ख फ को इओरि दक्ष प्रजापति लाइ जि या इदि या दक्ष प्रजापति जि या पाछि वीर शीपनि अति रुष
भै कन ॥ हे परमेश्वर ति आ प्रसाद ले म विधु वा भइन धन्ये ॥ तिमि भनि दक्ष प्रजापति सि
त सहित भै वाउ संतो व सित महा काली वीर भद्र लाइ सक्ति गरि प्रणाम गरि आ फ्रा घर ग

॥ २७ ॥

इन्द्रमहाकालीवीरभद्रलेपनि कोटि २ देवताय भगवत् सर्वकिञ्चरदैत्यनाग दक्षप्रजापतिको
सैनामारियज्ञविध्वंसगरि नन्दिभिन्दिचतुषष्टियोगिनीभूतपिशाचप्रमथगणसमेत
सैनाहो देवि अंतर्धान भैरवै लासपर्वतमागयार श्रीमहादेवलाइ साहाय्य प्रणामगारि ॥ हे
जगदीश्वर तिम्रा आजाले पापिष्ठ दक्षप्रजापतिको शिरकुट्याइ यज्ञकुशुमाहो मिआम्भू
वीरशीलाइ स्वामि वरदानदि आम्भू भनि वृत्तान्त कथा सुनि श्रीमहादेव संतोष
भैरव महाकाली हे वीरभद्र तिमिरु रुधेन्यै रखाछो कोटि २ देवताय भगवत् सर्वकिञ्चरदैत्यनाग
दक्षप्रजापतिको सैनामारि दक्षप्रजापतिको शिरकुट्याइ वलिदानदिय ज्ञविध्वंसगरि आयो म
संतोष भना भनि आक्राशीरमालि नगरिलि ॥ इति श्री स्कंदपुराणो माघमहात्म्यके
दारवरगोब्रुमार अंगस्य सेवाये यज्ञविध्वंसनाम श्रीसुस्थानि पश्येन्मन्त्रा कथाचतुष्टोत्राय

॥सू.नी॥

॥२८॥

४॥ हे अस्य उनिता हा प्रांत श्री महादेव ले सत्ते देविला इ समजि दक्षय जा पतिले यज्ञग
या काठा उमाग या यज्ञ कुरा मा प्रये सभै रखा कि सत्ते देविला इ देवि यज्ञ कुरा देवि जि
कि का व मालि तिने आ वा देवि आ मुष सा लि. हा सत्ते देवि २ आज के ला सभै न्य गरि मला
इ ए ले कोरि यस्ता अव ज्ञा मा पारि कता ग इ सभ निव रु ते अ धै र्य भ इ रुष ट त्या जै गरि मु
मि मा प या र मुर्छा भ या ॥ फ रि चे हा भ या र हा प्रा गा २ अव मै ले जि या को वा धा क रु क छि न ॥
प नि न का डि मै र मुखा जि व सि भै ले क ह्या का उ रा गा न्तर क था हा मा भु लि र हं धि स आ
व को व श्वा क ह्या इ मु ना उ ला फे रि मै रा वा न्या व स्त वि ष भा ग ध त्तर ये मे रा स्वा मि ले वा न्या
भ नि हि त भा व ले र शा ग रि रा ष धि स अव को र शा ग रि दे ला फे रि म हा हि जा इ आ उ रा हा त
मा क म न ल लि चा इ पा उ धु न आ उ धि स अव को धो इ दे रा हा प्रा गा पि या रि त दि ना मे रा चि

॥२८॥

अंक
तक सो गरिहठगुरुलाभनिकै हे का घमालिमा कै हे मालगर्भा कै हे मुरवहे न्या कै हे उम्वनगर्भा
कै हे कातिमा हातगयना यज्ञातरु लेनानातरु गरिसने देविला इपिठमालि हासने देवि
भनिवहुलाजसाभै एधिमाभ्रमनागरि । हिडदाभया ॥ श्रीमहादेव ले पीठमालि याका ऊ
ले सने देवि पनिगलीतभद्ररु दुर्गभ्रपनिभये निद्रामापमाजसै भैरहिन ॥ इति श्रीक
दपुराणोमा घमालास्य केदारवरशेकुमार अगस्त्यसम्पाद श्रीमहादेव एधिभ्रमणा नाम ।
श्रीस्वस्थानिपरमेस्वरी कथा पंचमाध्यायः ॥ ५ ॥ ताराप्रतरु अगस्त्यमुनि इन्द्रादितितिस्कोटि
देवता ले श्रीमहादेव ले सने देवि पिठमालि एधिमाभ्रमणागरि हिड्या के देवि मरु ननसकि
वेकुराठ मा गे विरुहे उविंतिगया ॥ हे परब्रह्मणो ब्रह्मागुरु संसारतिमिले श्रीमहादेव ले र
क्षा गरि राव्याथौ तिमि डुवै ले रक्षानगमा को रक्षागली दक्षप्रजापतिको यज्ञमा सने देवि

॥ स्व.जी ॥

॥ २६ ॥

मनीले सत्ते देवि पीठ मालि श्रीम हा देव एधि मा भ्रम राग रिहि डू दा भया ॥ जा हा स म सत्ते देविको
शरीर रुला ता हा स म श्री म हा देव ले ने सै गरि हि उ न्या छ न य स र्थ ले आ फ्रा मा याले मा रवा उ त्त
ति गरि ओ सा पारि सत्ते देविको शरीर गला इ पत न गरि दे उ भ नि डू न्द्रा दि देव ता ले श्री विलु का
रु जुर मा कर जो रि वि ति ग मा ॥ य ति डू न्द्रा दि देव ता का व च न सु नि श्री ना रा य गाले ॥ हे डू न्द्रा दि
देव ता को ति मि रु रु ले व डि या भ भो मे रा मा याले मा रवा उ त्त ति गरि ओ सा पारि सत्ते देविको शरी
र गला इ पत न ग रा उ ला स दे रु न ग र अ व ति मि रु रु अ म रा उ रि जा उ भ न्द्रा य ति श्री विलु
ले आ जा ग मा को सु नि डू न्द्रा दि देव ता रु रु ले रु व स भ नि श्री ना रा य ता ला इ सा हा ग प्र रा म
ग रि अ म रा उ रि वि षे ग या ॥ ता हा प्रो त्त श्री विलु ले आ फ्रा मा याले मा रवा उ त्त ति गरि ओ सा पा
रि सत्ते देविका शरीर गला इ पत न गरि दि या ॥ जा हा सत्ते देविको अंग पत न भ यो ता हा २८

॥ २६ ॥

कपिठ उत्पत्तिभयो ताहिश्चत्तुर्गव व्रह्माले एकश्च पञ्चलिंग उत्पत्तिगराया ॥ पैरुनेपालख
गाड माजा इउख पत्तनभयो रनेपालपिठ श्रीउखभरीदेवि श्रीचतु यराय योगिनी सिद्धेश्वर
श्रीमहा देव उत्पत्तिभया शिवशक्तिस्वरूपलेखा ते सउत्प भूमिमा इडादि देवता आइत
पस्या गमा रुडभरी संतुष्ट भै ॥ हे देव लोक तिमिर रु सत्तत्रेता ह्य पर कलि चौर गुण माति
ति स्कोटि देवता भनि प्रख्यात भया भनि वरदान दिइन् ॥ १ ॥ फेरिकाम रु मा जा इछाति प
त्तनभयो र कामरुपिठ कामेशा देविकर्ता योगिनी चक्रेश्वर मरुहा देव उत्पत्तिभया शिवश
क्तिस्वरूपलेखा ते सउत्प भूमिमा यथागा आइत पस्या गमा रुडभरी संतोष भै स्वप्तिमत्त पा
ताल तिले लोक मा प्रख्यात भया भनि वरदान दिइन् ॥ २ ॥ फेरिकानार सिमा जा इथा पलो प
त्तनभयो र वानार सिपिठ विशाला सि देवि संकटा योगिनी विश्वेश्वर मरुहा देव उत्पत्तिभया

॥ स्तुती ॥

॥ ३० ॥

शिवशक्तिरूपलेख्याते सपुन्यभूमि मागध्वर्वरु आइगाउना वजाउना गरित पस्याग यारइश्व
री प्रसन्न भइति मिरु रुको बाकसिद्ध रु वस भनि वरदान दिइन् ॥ ३ ॥ फेरि पोर वन्ध माजा इ
हाहिना हात पतन भये र पोर वन्ध पिठ अन्विको दविचन्द्र वेगा योगिनी धनेश्वर महा
देव उत्पति भया शिवशक्तिरूपलेख्याते ससिद्ध भूमी मादेत्यगगा आइत पस्याग यारइ
श्वरी प्रसन्न भै देवगगा लाइजित्त सको स भनि वरदान दिइन् ॥ ४ ॥ फेरि कस्मिर माजा
इजि भोपतन भयो रुक स्त्री र पिठ सारदा देवि धार च राग योगिनी भ्रम धारेश्वर महा
देव उत्पति भया शिवशक्तिरूपलेख्या ॥ ते सपुन्यभूमि माकिन्नरगगा आइत पस्याग
यारइश्वरी प्रसन्न भै मनो वांछा कामना पूर्ण रु वस भनि वरदान दिइन् ॥ ५ ॥ फेरिका
न्या कुञ्ज माजा इअंग कोछा लापत नभये र का न्या कुञ्ज पिठ रुकेश्वरी देवि चन्द्रा योगि

॥ ३० ॥

निडुग्वेश्वरमहादेवउत्पत्तिभयाशिवशक्तिरूपलेख्यातेसमोक्षभूमिमाजाइरावरा
आइतपस्यागमारइश्वरीप्रसन्नभैतैलेदेवलोकजित्तसक्यासभनिवरदानदिइन्
॥६॥फेरिपूजागिरिमाजाइवाउआखापत्तनभयोरपूजागिरिपिठपूजागिरिदेविकपा
लकुराउलायोगिनीचन्देश्वरमहादेवउत्पत्तिभयाशिवशक्तिरूपलेख्यातेसकृषभ
मिमाअपरागगाआइतपस्यागमारनाचगीदगगिरिइश्वरीप्रसन्नभैइन्दुकाभुखा
जिकैहैपनिनचुकासभनिभरदानदिइन्॥७॥फेरिअमुगगचलमाजाइतटप
त्तनभयोरअमुगगचलपिठमुकैविकोदेविकालीकायोगिनीइछावगेश्वरमहादेव
उत्पत्तिभयाशिवशक्तिरूपलेख्या॥तेससिद्धभूमिमानारदकृषिआइतपस्यागमारइ
श्वरीप्रसन्नभैतेरावाकसिद्धरुवसभनिवरदानदिइन्॥८॥फेरिआश्राटकमाजाइ

॥ स्व. नी ॥

॥ ३९ ॥

दाहिना हात पतनभयोर आश्राटक पिठ कर्त्तेश्वरी देवि एकाक्षि योगिनी निद्रापतेश्वर महादे
व उत्पत्तिभया शिवशक्तिरूपलेख्या ॥ ते स पुन्य भूमिमा जा इराधिका गगाले तपस्या गयारुड
श्वरी प्रसन्न भैसदा सर्वदा कल्पति प्राउपर दाहिना हवस्रभ निवरदान दिडन ॥ ५ ॥ फेरि
एकावरमा जा इवा उका न पतनभयोर एकावर पिठ सिद्धेश्वरी देवि सिद्धा योगिनी दधेश्व
र महादेव उत्पत्तिभया शिवशक्तिरूपलेख्या ॥ ते स पुन्य भूमिमा कर्णावीर प्रभृति श्रमशा
न आइत पश्याग यारु इश्वरी प्रसन्न भैसदा सर्वदा कल्पति प्राउपर दाहिना हवस्रभ निवरदान दि
डन ॥ १० ॥ फेरि चित्तमा जा इमल हार पतनभयोर त्रिसुत पिठ महाकालेश्वरी देवी विकट
दना योगिनी त्रिशूलेश्वर महादेव उत्पत्तिभया शिवशक्तिरूपलेख्या ते स पुन्य भूमिमा
यमराज आइमाना उपचार लेख जात पग रि वस्यारु इश्वरी प्रसन्न भै वस्यारु को भृष्टि सं

॥ ३९ ॥

कारगरीसकासभनिवरदानदिइन् ॥ ११ ॥ फेरिकामरोस्तमाजाइकाठपतनभयोरकाम
रोस्तपीठकामीनिदेविलम्बिकायोगिनीकालेश्वरमहादेवउत्पत्तिभयाशिवशक्तिरूपले
रह्या ॥ तेसउरणभुमीमाष्टविमाताआइनानाउपचारलेप्रजागरितपस्यागरिन्इश्व
रीप्रसन्नभइतिमिलेसर्वेभारावोकनसकोसभनिवरदानदिइन् ॥ १२ ॥ फेरिकेलासमाजाइ
दाहिनागोडापतनभयोरकेलासपीठपार्वतीदेविलम्बिकायोगिनीविश्वभरमहादेव
उत्पत्तिभयाशिवशक्तिरूपलेरह्या ॥ तेससिद्धभूमिमाचतुर्भुवब्रह्माआइनानापञ्च
गरितपस्यागमारइश्वरिप्रसन्नभैवरदानलेउभनिन्ब्रह्मालेस्वर्गमर्त्यपातालतिनै
लोकमाभूतिकर्ताऊनसकोसभनिवरदानमागारइश्वरीलेतथास्तुभनिवरदानदिइ
न् ॥ १३ ॥ फेरिभृगुमाजाइमाधित्वादासपतनभयोरभृगुपीठमिनाक्षिदेविवज्रदेहायो

॥ स्वनी ॥

॥ ३२ ॥

गिनीम तेश्वरमहादेव उत्पत्ति भया शिवशक्तिरूपलेख्या ॥ ते स प्रणभूमिमा धर्म दत्त राजा आ
इ योगमार्गले तपस्यागमार इश्वरी प्रसन्न भइत लाइ के सैले जित्त न स कुन भ निवरदान
दिइन् ॥ १४ ॥ फेरि केदारमा जाइ वाउ लात पतन भयोर केदार पीठ केदारेश्वरी देवि मुगल यो
गिनीकोटेश्वरमहादेव उत्पत्ति भया शिवशक्तिरूपलेख्या ॥ ते स प्रणभूमिमा एकादशरुइ
जाइत पस्यागमार इश्वरी प्रसन्न भइन् र वरदान माणा एकादशरुइ ले कामि सैव को वरीव
र ते जरु वस भनि माणा इश्वरी ले तथा सु भनि वरदान दिइन् ॥ १५ ॥ फेरि चन्द्र प्रमा जाइ दाहि
ना आघा पतन भयोर चन्द्र प्रपीठ सिद्धि काली देवि सिद्धा योगिनी प्रकाशेश्वरमहादेव उ
त्पत्ति भया शिवशक्तिरूपलेख्या ॥ ते स प्रणभूमिमा दशदिक्पाल आइना नाउ पचार ले
इ जागरित पस्यागमार इश्वरी प्रसन्न भै वरदान लेउ भनिन् दशदिक्पाल ले आकाश दि

॥ ३२ ॥

कस्मिं रुवसु भनिवरदानमाग्यारु इश्वरीले तथा स्तु भनिवरदानदि इन् ॥ १८ ॥ फेरि श्रीमाजा
इतालपतनभयोरु श्री पीठ भद्राक्षिदेवि भद्रायोगिनिकमलेश्वरमहादेवउत्पत्तिभयार
शिवशक्तिरूपले रक्षा ॥ ते सप्रणभूमीमा अष्टवसु आ इषोऽस उपचारले प्रजागमा इश्व
री प्रसन्नभैवरदानले उभनिन् अष्टवसुले इच्छासिद्धिरुवसु भनिमाग्यारु इश्वरीले तथा
स्तु भनिवरदानदि इन् ॥ १९ ॥ फेरि सुकावीरमाजा इनाभिपतनभयोरु सुकावीरपीठ श्री विरि
देवि गोरक्षियोगिनी हारकेश्वरमहादेवउत्पत्तिभयार शिवशक्तिरूपले रक्षा ॥ ते सप्रणभूमीमा
नागरुरु आ इहिरा नैतिना नारत्नचक्र इ प्रजागमारु इश्वरी प्रसन्नभैवरदानले उभनि
न् नागरुरुले सप्तपाताल कोअभिषिन्ति ऊं भनिमाग्यारु इश्वरीले तथा स्तु भनिवरदानदि इन् ॥ २० ॥
फेरि जाले वरमाजा इतलो ओठ पतनभयोरु जालंधर पीठ जालपादेवि ज्वाला मुखियोगिनी

॥ स्वनी ॥
॥ ३३ ॥

पिशाचेश्वर महादेव उत्पत्ति भयाशिव शक्ति रूप ले रखा ॥ ते स सिद्ध भुमिमा काम धेनु गाइ आइ
निसिद्ध दचक्र इत पस्या गरिन् इश्वरी प्रसन्न भै वरदान ले उभ निन् काम धेनु गाइ लै मेरो इद
मल मुत्र पवित्र रु व स भनि मा गित् इश्वरी ले तथा स्तु भनि वरदान दिइन् ॥ १५ ॥ फेरि मत्त व
मा जाइ वा उ पै ताला पतन भयो र मत्त व पीठ महा काली देवी क गलियोगिनी भू पा ले श्वर महा
देव उत्पत्ति भयाशिव शक्ति रूप ले रखा ॥ ते स पवित्र भुमिमा द्वादशा दिस आइ त पस्या ग मार
इश्वरी प्रसन्न भै वरदान ले उभ निन् द्वादशा दिस ले हे इश्वरी यो वा कु मै ह को कृतु निको
न निको गर्नु क पा रु व स भनि मा गार इश्वरी ले तथा स्तु भनि वरदान दिइन् ॥ २० ॥ फेरि कुसल
तक मा जाइ क पाल का केश पतन भयो र कुशलां तक पीठ इम शान काली देवी मु राउ प राय योगि
नी शि रेश्वर महादेव उत्पत्ति भयाशिव शक्ति रूप ले रखा ॥ ते श भुमिमा अश्विना दिस ताइ

॥ ३३ ॥

शनश्च त्र आइत पस्पागमार इश्वरी प्रसन्न भैवरदान लेउ भनिन् नश्च रुह ले जोतिष शास्त्र हा
मा अधिन रुवस भनि मागार इश्वरी ले तथा स्तु भनि वरदान दिइन् ॥२१॥ फेरि देविको टमा जा
इदाहि नास्त पतन भये र देविको ठपिठ भद्राक्षि देवी ललिता योगिनी माने श्वर महा देव उ
त्पत्ति भया शिव शक्ति रूप ले र ह्या ॥ ते स पुन्य भूमि मा मेघा दिवा कुरा सि आइत पस्पागमार
इश्वरी प्रसन्न भैवरदान लेउ भनिन् द्वादश रासि ले मनुष्य रुह रुह मा अधीन मारु न्भ
नि मागार इश्वरी ले तथा स्तु भनि वरदान दिइन् ॥२२॥ फेरि गोकर्ण मा जा इवा उकान प
तन भये र गोकर्ण पीठ भैरवी देवि एक जंघा योगिनी मा गेश्वर महा देव उत्पत्ति भया शि
व शक्ति स्वरूप ले र ह्या ॥ ते स पुन्य भूमि मा विष्णु भादि सत्ता इस जोग आइत पस्पागमा
र इश्वरी प्रसन्न भैवरदान लेउ भनिन् सत्ता इस जोग ले जोतिष शास्त्र हा मा अधिन

॥ स्वामी ॥
॥ ३४ ॥

मारहो सभनि मागार इश्वरी ले तथा सक्त भनि वरदान दिइन् ॥ २३ ॥ फेरि मातुरे श्वरी माजा इदा
हिना सन पतन भयो र मातुरे श्वरी पिठ योगेश्वरी देवी पिंगला योगिनी दुधगंधेश्वर महादेव
उत्पति भयार शिव शक्ति स्वरूप ले रक्षा ॥ ते सरत्त भुमि माक स पप्रभृति ऋषि रुद्र आ इत प
साग मार इश्वरी प्रसन्न भै वरदान ले उभनि नरुषि रुद्र ले चक्र वेदे दक्षान्ना अधिन मारहो
सभनि मागार इश्वरी ले तथा सक्त भनि वरदान दिइन् ॥ २४ ॥ फेरि अद्वैत समाजा इत तत्ता
दात्त पतन भयो र अद्वैत समाजा पिठ भुमरि देवी शंख धरा योगिनी सप्तभूतेश्वर महादेव उत्प
ति भयार शिव भक्ति स्वरूप ले रक्षा ते स पवित्र भुमि मावाग्मति प्रभृति गंगा आ इजल चक्र
इभक्ति गमार इश्वरी प्रसन्न भै वरदान ले उभनि नरु गंगाले भुक्ति मुक्ति को अधिन रहो स
भनि मागार इश्वरी ले तथा सक्त भनि वरदान दिइन् ॥ २५ ॥ फेरि विश्व माजा इवा उत्तम प

॥ ३४ ॥

ननभयोरविश्वपीठभुवनेश्वरीदेविभूवनाख्ययोगिनीकृत्स्नवर्णेश्वरमहादेवउत्पत्तिभ
यारशिवशक्तिस्वरूपलेख्या॥तेसपुण्यभुमीमाश्रीकृत्स्नआइतपस्यागमारइश्वरीप्रसन्न
भैवरदानलेउभनिनश्रीकृत्स्नलेतीनैलोककास्त्रिरुमदेविमोरुहउन्नभनिमागार
इश्वरीलेतथास्तुभनिवरदानदिइन्॥२८॥फेरिगजगृहेमाजाइदाहिनाकुहिनापतन
भयोरगजगृहपीठगजगृहेश्वरीदेवीउत्तामुखियोगिनीरुणेश्वरमहादेवउत्पत्तिभ
यारशिवशक्तिस्वरूपलेख्या॥तेसमोक्षभुमिमावायुआइसुगन्दवहाइतपस्यागमार
इश्वरीप्रसन्नभैवरदानलेउभनिनजावत्तजिवात्माछन्तिन्काप्राणावायुऊनसकुभ
निमागारइश्वरीलेतथास्तुभनिवरदानदिइन्॥२९॥फेरिमाहापंथमाजाइदाहिनाहा
तपतनभयोरमाहापंथपीठप्रचरितकादेविरेउकायोगिनीविस्वामित्रेश्वरमहादेवउ

॥स्व.नी॥

॥३५॥

त्यतिभयारुशिवशक्तिस्वरूपलेख्यातेसपुण्यभूमिमाअसगरुआइकननाचगिद
गरितपसागमारइश्वरीप्रसन्नभैवरदानलेउभनिनअसरागगालेइन्द्रादिदेवता
लाइमोरुगगीसकंभनिमागारइश्वरीलेतथास्तभनिवरदानादिइन्॥२८॥फेरिकोलाह
रमाजाइउदरपतनभयोरकोलाहरपीठमहालक्ष्मीदेवितन्दयोगिनीइमशानेश्वर
महादेवउत्पतिभयारुशिवशक्तिस्वरूपलेख्या॥तेसपुण्यभूमिमागुरुआइतप
सागरिरत्नादिफलफूलचक्राइहजागमारइश्वरीप्रसन्नभैवरदानलेउभनिनग
रुडलेनागरुमेगआकाशहउत्तभनिमागारइश्वरीलेतथास्तभनिवरदानादिइ
न्॥२९॥फेरिपकहरमाजाइदाहिनाप्रणपतनभयोरपकहरपीठसाधुक्षिदेविसक
पायोगिनीउत्तभैवेश्वरमहादेवउत्पतिभयारुशिवशक्तिस्वरूपलेख्या॥तेसपवित्र

॥३५॥

भूमिमासिलाहुरुआइतपप्पागमारइश्वरीप्रसन्नभैवरदानलेउभनिन्नसिलाहुरु
लेदेवताकाअंगमालागुभनिमागारइश्वरीलेतथास्तुभनिवरदानदिइन्॥३०॥फे
रिउंकारेश्वरमाजाइउपत्ताओठपतनभयोरउंकारेश्वरपीठमात्तकादेविपूरीदे
रियोगिनीनिसन्नानेश्वरमहादेवउत्पत्तिभयाशिवशक्तिस्वरूपलेख्या॥तेसमाक्ष
भूमिमाकल्पवृक्षआइतानाफलफूलचङ्गाइइजागमारइश्वरीप्रसन्नभैवरदान
लेउभनिन्नकल्पवृक्षलेजोचितायाकोस्वफलाउनसअंभनिमागारइश्वरीलेतथा
स्तुभनिवरदानदिइन्॥३१॥फेरिजयंतिहरमाजाइकलेजोपतनभयोरजयंति
हरपीठजयंतिदेविस्वचरियोगिनीकल्पश्वरमहादेवउत्पत्तिभयाशिवश
क्तिस्वरूपलेख्या॥तेससिद्धभूमिमात्तलसिद्धसआइतपप्पागमारइश्वरीप्र

॥स्व.नी॥
॥३८॥

सन्न भैवरदानले उभनिन्न तुलशि कूशले स्वर्गमर्षण तालति नै लोकमा लामिला इ
माउन्न भनि माणा रतिमिरु संसारमा मान्ये गगे सुवा हे मै हा का कार्तिक मै हा मा
प्रवैले तुलसिको भावना गरुन कूशपनि समस्त कार्यमा प्रसस्त रुव स्रभनि वरदान
दिइन् ॥३२॥ फेरि उर्जय निमाजा इरक्त को डेला पतन भयो र उर्जय निपीठ महाकाली देवि
ललजि ह्या योगिनी रुं केश्वर महादेव उत्पत्ति भयार शिवशक्ति स्वरूप लेख्या ॥ ते ससिद्ध भि
माहिमालय पर्वत आइत पम्पा गमार इश्वरी प्रसन्न भैवरदानले उभनिन्न हिमालय प
र्वत ले देवता देस मनुष्य सबै ला इ मोक्ष दिन्न सैको भनि माणा र इश्वरी ले तथा स्त भनि वर
दान दिइन् ॥३३॥ फेरि चरित्र पूरमाजा इ दाहिना करं पतन भयो र चरित्र पूर पीठ स्वर्गे स्व
रि देवी चित्रवरा योगिनी वायव्येश्वर महादेव उत्पत्ति भयार शिवशक्ति स्वरूप लेख्या ते

॥३४॥

सप्रणभुमिमा योगिनीगगा आ इतपस्यागगार इश्वरी प्रसन्नमैवरदानले उभनिन योगि
नीग गाले मेत्रसिद्धि रुव सभनिमागार इश्वरी ले तथा स्तुभनिवरदानदि इन् ॥३५॥ फेरि क्षि
रिका घर मा जाइ भुडि पतन भयो रुसिरिका घर पीठ गुगाद्यां देवि कलंकि नि योगिनी सरुश्र
नेत्रेश्वर महादेव उत्पति भयारु शिवशक्ति रूप ले रत्ना ॥ ते स मोक्ष भुमिमा मात्रिकागगा आ
इजाना उपचार ले पूजा गरितपस्यागगार इश्वरी प्रसन्नमैवरदानले उभनिन मातृका
गगा ले थान रमा अधिपति रुभनिमागार इश्वरी ले तथा स्तुभनिवरदानदि इन् ॥३५॥ फे
रि रुक्मिना घर मा जाइ दारि नौ कुम पतन भयो रुक्मिना घर पीठ चण्डेश्वरी देवी कोटेश्वरी
योगिनी सुसुखा रेश्वर महादेव उत्पति भयारु शिवशक्ति स्वरूप ले रत्ना ॥ ते सप्रणभुमि
मा सुदर्शनचक्र आ इतपस्यागगार इश्वरी प्रसन्नमैवरदानले उभनिन सुदर्शनचक्र ले

॥ स्वस्था ॥

॥ ३७ ॥

संसारकर्त्री कृष्णनिमागार इश्वरीले तथा स्रष्टा निवरदानदि इन्द्र ॥ ३६ ॥ फेरि उदीममा जाइ शिरप
तनभयोर उदीमपीठ विमला देवी षिं गा शि योगिनी यक्ष भ्रमर महादेव उत्पत्ति भयार शिव शक्ति
स्वरूप ले रक्षा ॥ ते सभुमी माहनु मान आइ नाना फल फूल चक्रा इन्द्र दिग्बलि प्रजागम्यार इ
श्वरी प्रसन्न भैवरदान ले उभनि नरुनु मान ले श्रीगामजि कसि ठक भैलंका दहन गगरी स कुं
भनिमागार इश्वरीले तथा स्रष्टा निवरदानदि इन्द्र ॥ ३७ ॥ फेरि प्रियागमा जाइ फोक्सा पतन
भयोर प्रियागपिठ मुन्दरी देवि सिंहा वेगा योगिनी महेन्द्र भ्रमर महादेव उत्पत्ति भयार शिव
शक्ति स्वरूप ले रक्षा ॥ ते सप्रणभुमि मा दश औतार आइ त पद्मागम्यार इश्वरी प्रसन्न भैव
रदान ले उभनि नरु दश औतार ले सत्त्वैता द्वापर कलि चारै युग को देख संसार गरी स कुं
भनिमागार इश्वरीले तथा स्रष्टा निवरदानदि इन्द्र ॥ ३८ ॥ फेरि विश्वमा जाइ मृगा उलाप

॥ ३७ ॥

तनभयोर विश्वपीठं के श्वरीदेविकाली योगिनी कुशेश्वर महादेव उत्यतिभयादिवश
क्तिस्वरूपलेखा ॥ तेषां सिद्ध भूमिमा विश्वकर्मा आ इति त्रिविजगतिदेवालयवना इत्युपस्थाग
मार इश्वरीय सत्त्वभैवरदानले उभनिन्न विश्वकर्मा ले मेरी कृति सत्त्वनेता द्वापरकालिचारे
युगमा स्थिररक्षे स भनिमाणा र इश्वरीले तथास्तु भनिवरदानदिदृन् ॥ ३५ ॥ फेरिमायाप्र
माजा इ. फि. याप तनभयोर मायाप्रपीठ मायादेवि चंचला योगिनी तपस्येश्वर महादेव उत्य
तिभया रक्षिवशक्तिस्वरूपलेखा तेषां तपस्ये भूमिमा चतुषष्टिलिङ्ग आ इत्युपस्थानगति
तपस्यागमार इश्वरीय सत्त्वभैवरदानले उभनिन्न चतुषष्टिलिङ्ग ले स्वयं भुलिङ्गभैरवं
भनिमाणा र इश्वरीले तथास्तु भनिवरदानदिदृन् ॥ ३६ ॥ फेरि मत्तागिरिमाजा इवा उ कुभप
तनभयोर मत्तागिरिपीठमालिकादेविकोकरा योगिनी कुश उत्यनेश्वर महादेव उत्यति

॥स्वनी॥

॥३८॥

भयार शिवशक्तिस्वरूपलेख्या ॥ ते स प्रत्यभूमिमाभूतप्रेतपिशाच आइनाचिखेलिसेकागमार
इश्वरीप्रसन्नैवरदानलेउभनिन्नभूतप्रेतपिशाचलेसर्वेतिम्राछानामावस्त्रणउभनिमा
माग्यारइश्वरीलेतथास्तभनिवरदानदिइन् ॥४१॥ फेरिमलयागिरिमाजाइआसनपतन
भयोरमलयागिरिपीठवज्रश्वरीदेविकोमलायोगिनीजागेश्वरमहादेवउत्पतिभयारशि
वशक्तिस्वरूपलेख्या ॥ ते स प्रणभूमिमासत्तेगगाआइतपस्यागमारइश्वरीप्रसन्नैवर
दानलेउभनिन्नसत्तेगगालेसत्तेमारुत्यारुल्लाहउद्धारगर्गसद्धंभनिमाग्यारइश्वरीलेत
थास्तभनिवरदानदिइन् ॥४२॥ फेरिसेनमाजाइमुढापतनभयोरसेनपीठउमादेविअष्ट
दलकर्त्तायोगिनीकाकेश्वरमहादेवउत्पतिभयारशिवशक्तिस्वरूपलेख्या ॥ ते स प्रणभूमिमा
आदित्यादिनवग्रहआइतपस्यागमारइश्वरीप्रसन्नैवरदानलेउभनिन्नआदित्यादिनव

॥३८॥

गुरुलेलाभअलाभरुनि को अधिकारहवस्रभनिमागारइश्वरीलेतथास्तुभनिवरदानदिइ
न॥३॥फेरिमेरुगिरिमाजाइमुचिस्थानपतनभयोरमेरुगिरीपीठप्रणीदेविकरालिनि
योगिनीजिह्वासतेभरमहादेवउत्पतिभयारशिवशक्तिस्वरूपलेख्यातेसमोक्षभुमिमासम
नागआइहिरामोतिमारीकनानारत्नचक्राइप्रजागमारइश्वरीप्रसन्नभैवरदानलेउभनि
नमनागलुरुलेहाम्राशरीरअगम्यहवस्रभनिमागारइश्वरीलेतथास्तुभनिवरदान
दिइन॥४॥फेरिमहिन्दुमाजाइदाहिनोतिगोपतनभयोरमहिन्दुपीठइन्द्राक्षिदेविउर्जग
मविगोनिनीतारेश्वरमहादेवउत्पतिभयारशिवशक्तिस्वरूपलेख्या॥तेसउगणभुमिमा
लक्ष्मीआइनानाद्वयचक्राइप्रजागरिन्इश्वरीप्रसन्नभैवरदानलेउभनिनलक्ष्मीले
कार्तिककलस्रओसिकादिनमांसपणीलोकलेप्रजागरुन्भनिमागिन्इश्वरिलेतथास्तुभ

॥ स्व. नी. ॥
॥ ३५ ॥

निवरदानदिहन् ॥ ४५ ॥ फेरिवावनपरमाजाइका उकुमपतनभयोरवावनहरपीठकामेश्वरि
देविभैरुगणयोगिनीवेदान्तेश्वरमहादेवउत्पत्तिभयारशिवशक्तिरूपलेख्या ॥ तेसमाश्रम
प्रिमाकमलादिनानाफलआइसुवासनादितपस्यागमारइश्वरीप्रसन्नभैवरदानलेउ
भनिनकमलादिफलरुलेप्रजाकालमाप्रसन्नकुंभनिमाणारइश्वरीलेतथास्तुभनि
वरदानदिहन् ॥ ४६ ॥ फेरिहिरण्यपरमाजाइसुतस्यानपतनभयोरहिरण्यहरपीठ
नवरत्नश्वरीदेविपुरेन्द्रायोगिनीनारदेश्वरमहादेवउत्पत्तिभयारशिवशक्तिस्वरूपलेख
या ॥ तेसुरत्नभुमिमासरस्वतिआइअनेकश्लोकसरुस्वनामपाठगरितपस्यागमारइश्व
रिप्रसन्नभैवरदानलेउभनिनसरस्वतीलेजावतजीवात्माछनरतिन्काजिह्वाभामेरोवास
रुवसभनिमागिनइश्वरीलेतथास्तुभनिवरदानदिहन् ॥ ४७ ॥ फेरिमहालक्ष्मीपरमाजा

॥ ३५ ॥

इ वा उ करे पतन भयो र मा काल श्री प्रणीठ कम ला सि दे वि डि ग म ग योगि नी त्रि कु दे श्व र म
हा दे व उ त्त ति भ यारु शिव शक्ति स्वरूप ले र ह्या ॥ ते स सिद्ध भूमि मा जाल न्ध र प्रभु ति अष्ट
सिद्धा आ इ योग मार्ग ले त प स्या ग मारु इ श्वरी प्र सन्न भै ति मि ह रु क न अष्ट सिद्धि भै
के के म्ब ल न रु व स भ नि इ श्वरी ले व र दान दि इ न ॥ ४८ ॥ फेरि उद्या न मा जा इ के ह्या
उ लो प त न भ यो रु उ द्या न पीठ त्रि म र रु न्दरी दे वि सु मे का ली या गि नी भै र वेश्व र म
हा दे व उ त्त ति भ यारु शिव शक्ति स्वरूप ले र ह्या ते स आ नन्द भूमि मा मे घ आ इ मान सि
उ प चार ले प्र जा ग मारु इ श्वरी प्र सन्न भै व र दान ले उ भ नि न् मे घ ले ज ल दि से सा र ला इ
उ द्धार ग र्गी स के भ नि मा गारु इ श्वरी ले तथा स्तु भ नि व र दान दि इ न ॥ ४९ ॥ फेरि छा या छ
त्र मा जा इ से व अंग से प्रणी पतन भ यो रु छा या छ त्र पीठ श्री छ त्रे श्वरी दे वि सु मे का दरी यो

॥ स्तुती ॥
॥ ४० ॥

गिनी पिशाचे श्वर श्री महादेव उत्पत्ति भयार शिव शक्ति स्वरूप लेख्या ॥ ते स पुराण भूमिमा
अष्टभैरव आइ जाना वलि उ पचार ले पूजा गगार इश्वरी प्रसन्न भै वरदान ले उ भनि नर
अष्टभैरव ले मान्द कागगा को अधिपति ऊं भनि मागार इश्वरी ले तथा स्तु भनि वरदान दिइ
न ॥ ५० ॥ यसै नर रुले जाहा २ स ते देविको अंग पसन भयो ताहा २ रुक २ पीठ उत्पत्ति भयो
स वै पीठ को साखा साहे सात कोटि ७५००००००० पतिक हि या का पचास पीठ माए के पीठ
को मात्रे जो दर्शन गरी सपनि इ कामि दिहव सम न ले वचन ले कर्म लेग माका से पूरा पाप
को ना सहवस ॥ मनुष्य जन्म भैयो पचास पीठ माए के पीठ को पनि दर्शन गरी सके न भन्या
ते को जन्म व्याधी हो नाम मात्रे लिखा रनि नाम मात्र सुखाप नि देवलोक मा वास गरी पाउ
लाभ नि चतुर्भुव वहाले आजाग दी भया ॥ इति श्री स्कंद पुराण गोमाघ महात्म्य के दारख

॥ ४० ॥

गुरुकुमार अगस्त्यसंवादे सत्ये देवि अंग पतन पीठ उत्पत्ति नाम श्री स्वस्थानि परमेश्वर्या क
था वृत्त मोक्षाय ॥ ६ ॥ अहंता वरुण उज्जु ॥ रु अगस्त्य मुनि ता हा प्रात सत्ये देवि को सं पूर्ण अं
ग पतन भे स का प कि श्री महा देव ले वि न द ह ग ग न स कि हा सत्ये देवि श भ नि भू मि मा
परि मु क्ति भया ॥ फेरि चे हा भ यो र सु स्के रा हा लि मन ले सत्ये देवि स म्नि व रु ला ज सा भै जा
हा ता हा फि रा हा ग्वा ले सा त र रु मि ते ग रा का श्री महा देव ला इ ता र का सु र दे स ले दे व्यो र ॥
आ मु मे वि ह्ने उ भ यो ॥ रु मे त्रि सत्ये देवि म नाले श्री महा देव हि द्या को दे वि स कि रु व रु ला ज
सा भै हा सत्ये देवि श भ नि जा हा ता हा फि री रु ह्ने रु ग स ओ सर मा यु द्ध ग रि इ न्द्र का अ म
रा व ति लि उ आव हा मि ला इ को का ग रा स क ला जा उ भ नि आ भ्रा से ना अ धि ला इ मं त्रि स मे
त ल हा नि ग रा भ नि अ म रा व ति वि वे ग यो त व दे व ता रु रु भ न्न ला ग्वा ॥ रु दे व ता हो अ व ना

॥ स्व. नी. ॥
॥ ४१ ॥

न वसौ क्य भन्या तार का सुर देस ला इ श्री महा देव ले वर दान दिया को छ ते श्वा इ पु दु ग रि जि
त्र को स कला अव भा गो भनि सवे देव ता स्वर्ग देषि आ इ नृ ग स्थलि मा वसिर स्या ॥ देव ता रु
भा ग्पा पछि तार का सुर देस ले इ नृ को इन्द्रा यणि प्रभृति अम राव तिलि स्वर्ग मर्त्य पाता लती
नै लोक मा रा ज ग रि आ नन्द ले र ह्यो ता ला प्रा ता ॥ हे अग स्त मु नि श्री महा देव पृथ्वि भू म न ग
र्द नृ ग स्थलि मा आ इ पु ग्पा श्री महा देव आ या का देव ता रु रु ले दे व्वा र सा ह्यो ग प्र रा म ग रि ॥ हे
इ श्वर ति मि छे उ म्भ त क छे न आ वा उ धा रि हे र पा पि छ तार का सुर देस ले इन्द्रा यणि प्रभृ
ति अम राव तिरु रिलि यो ते श्वा इ ति मि ले वर दान दिया को ऊ ना ले पु दु ग रा न स कि भा गि इ
न्द्रा दि देव ता ला ला आ इ व सि र ह्यो छो ला मो र र्शा ग र पा पि छ तार का सुर देस को से हार ग र भ
नि देव ता रु रु ले विंति ग मा ॥ यति इन्द्रा दि देव ता रु रु ले भ न्या का व च न सु नि आ वा उ धा रि हे मा

॥ ४१ ॥

इन्द्रादिदेवतालाइ देषिकेहि जवाफन गरिसने देविलाइ सन्निहा सने देवि^{मनि} तारा देविपनि
गया ॥ श्रीमहादेवले सो कग मा को जा वत जी वा त्मा छन कसे ले सहन सकेन न ए सै तर रु सै
ग श्रीमहादेवले ना ना सो कगरि एक समय १०० वर्ष सम्य एभि भ्रम न गरि हि उया ॥ इति श्री स्कंद पु
राणो माघमाहात्म्य के दार राव गेउ कुमार अगस्त्य संवा दे इन्द्रादिदेवता मृग स्थिति प्रवेश नाम श्रीत्त
स्थानि परमेश्वर शाकथा सप्तमाध्याय ॥ ७ ॥ हे अगस्त्य उनि ता ला यान्त दक्षिणादिशामा कर्णाट
क नगर कान गी च मा एक ब्रह्म र न गरि धियो तारा क धि एक समय १०० वर्षा काधिया तिक
धिरु रु गं गा मा ह्या न गरी जा दा श्रीमहादेव पनिते हि वा ट ग या श्रीमहादेव ग या का देषिक धि
पत्निरु रु ले देष्वा र आ फ स्मा वो ल न ला ग्या ॥ हे सगी नि हो ति ग या का श्रीमहादेव ऊ न हे र
सने देवि म नी ले व ऊ ला ज स्ता भै ते स्ता इ व ल सि त हि उ छ न ला म्रा क धि रु रु एक भक्त रु ना

॥ स्वामी ॥
॥ ४२ ॥

ले उर्वलपलपनिष्ठनरुमिरुहलाइकामले संतो यदि न सकतै न न पसंथ ले श्रीमरुदेव पछि जा
उपकसय १०० कृषि पतिरुहले मतोग रि श्रीमरुदेव पछि लागि गया ॥ तारु शो न गंगा स्नान ग
रागया का कृषि रुहला न गरिस कि फि रि घर आइ रुहला आ फि २ पति देव न न रुकता गया भ
निष वर गमा ॥ श्रीमरुदेव पछि लागि गया का चाल पार घ वर गे दे गया वाट मा जाइ भेदा पार क
घिरु रुभे छन ॥ हे मरुदेव ते ले रुमा स्त्री रु र गा गरि त्याइ सभ न्या र य सा कृषि रुका वचन सु
नि श्रीमरुदेव ले ॥ हे कृषि रुते न्या स्त्री म कान रु न गरि त्या उथा भ न्या र कृषि रुहले तिते रा य
छि आ या का को रुत व भ न्या र श्रीमरुदेव ले फ कि रुहला इ देव्या र मै ले न त्या या
को रुहला इ न कान आ या छन भ न्या र कृषि रुहले ॥ हे मरुदेव ते रा लिंग दे वि प छि लागि आ या का ऊ
न त्या ते रो लिंग पतन रु व सभ निश्चा पदि पा कृषि रुहला आ प ले श्रीमरुदेव का लिंग पतन भयो

॥ ४२ ॥

सोलिंगदेविज्योतिर्लिंगउत्पत्तिभैवृक्षागरसंसारहोपनलागोतववृक्षाप्रभृतिदेवताकृषियक्षगन्ध
र्वकिञ्चरलेचारे श्रीवित्पुष्टेउजाहअमेकप्रार्थनागरिविंतिगमा॥हेवैकुण्ठनाथश्रीमहादेवका
लिंगदेविज्योतिर्लिंगउत्पत्तिभैवृक्षागरसंसारहोपनलागोत्योदेविंतिगर्गाआम्भ्रअवजसोगत्याह
गरभनिकृषिरुरुकाभ्रापले श्रीमहादेवकालिंगपतनभयाकोकुरावतान्तकस्यायतिदेवताकृ
षियक्षगन्धर्वकिञ्चरकाकुरासुनिश्रीवित्पुष्टेनत्कालेउडिज्योतिर्लिंगलाइअगालोहालिराया
वित्पुष्टेअंगालोहाल्लैमाज्योतिर्लिंगसाम्यभैगयो॥सोदेविसंहरादेवताकृषियक्षगन्धर्वकिञ्चर
लेधन्यैश्वित्पुष्टिभनिकृतिगयारआफ्राशआश्रममागयाश्रीमहादेवलेज्योतिर्लिंगदेविपुष्ट्यक्षभै
कृषिरुरुहेभन्या॥हेकृषिरुविनाअपराधमातिमिरुरुलेमलाइश्रापदियोतिम्रापनिवाक्यअ
वनरुवसभनिश्रापदियाफरिद्राक्षगिरुरुलाइद्राक्षराश्रजिवैश्वर्यद्रचारेवर्गमातिमिरुरु

॥ स्तनी ॥
॥ ४३ ॥

एक पुरुष भनिरुन न स को स भनिश्रापदियार आऊ उत्तरा पंथ मा जाइ काम को धलो भ मोरु का
डि सं मरी इन्द्रिय बाधिति नै आरवा ले ॥ परं ब्रह्म ध्याइ वडा क हले त प म्या गरिर ह्या ॥ ताका प्रा न्तरि
माल पर्व तले आक्रि सिमे ना गर्भ नि भया को चाल पाया र व ऊ त पु सि भै आक्रा म ज्यो दाले गर्भा
धान कर्म ग रि दियार द श मा स गर्भ र गा भै स ते दे विले मे ना का गर्भ देखि पर्व त कि पु त्रि भै ज नि
न ॥ क ण्ठि पु त्रि भ न्या र क्त वर्गा भ या कि रु ज्जा र सूर्य का ज स्ता ले ज भ या कि काम ल अ ति सु न्द री प
म प त्र ज स्ता ने त्र भ या कि क म्ब र भ न्या ल क्ष्मी का ज स्ता भ या कि पा उ भ न्या सा वि त्र का ज स्ता स व ल
क्ष गाल पु क्त भ या कि य स्ति सु न्द री पु त्रि ज न्मा को देखि हि माल पर्व त ले व शि ष्ट प्र भृ ति कृ षि
जा ति कि ला इ रा कि वि धि स र्व क नाम क र्म ग रा या ॥ व शि ष्ट प्र भृ ति कृ षि जा ति कि ले ॥ हे हि मा
ल ये य स बाल यि को ना म पार्व ती भ इ न्द न्द भू व न मा प र म्या त हो ला ति मि प र्व त ऊ ना ले त म्नि

॥ ४३ ॥

होरिको नाम पार्वती भद्र नभनि नाम रागा ता हा पछि हिमाल यले पनि माणिक इत्यादि ना
नौरत्न दिभोजन गराया वशिष्ठ प्रभृति कृषि जोति किले भोजन गरि सका पछि फेरि हिमा
लये पर्वत छेउ जाइ भन्या ॥ हे हिमाल येति मिधमे रक्षा द्यौ का हा भन्या यसं बाल धिले श्रीम
हा देव त्वामि पाइ चतुर्दश भवन कि गनिऊ न्या छुन इने बाल धिले संहर्षा दैत्य को संहार ग
न्या छुन ॥ हे हिमाल य अव आजादि या आक्रा २ आश्रम मा जा दाऊ ॥ फेरि ति आभाव भक्ति दे
षि हा मि कृतार्थ भन्नु यति वशिष्ठ प्रभृति कृषि जोति किले भन्या का वचन सुनि हिमाल य प
र्वत उमि भै सा हांग परा म गरि जानु रु व सभ नि विदा दि यार वशिष्ठ प्रभृति कृषि जोति कि प
नि आक्रा २ आश्रम गया ॥ ता हा प्रोत अहं पक्ष का चतु मा बढ्या ऊँ दि न दि नै व दि ठु लि भद्र न
रेव ल्या मा पनि श्री महा देव का हा ग रि रेव ल धि न के हि वस्तु घा न ला ग्या पनि श्री महा देव ला

॥ स्तवनी ॥
॥ ४४ ॥

इचक्रा इषान्धिन यस्य कारले श्रीमहादेवको भक्तिगिरिरुनुभया किपि इन् ॥ एकदिनमाना
रदकृषिले विष्णुके उजाइ भन्या ॥ हे वैकुण्ठनाथ हिमालय पर्वत किछोरि पार्वती नाउगया
किति मिजोग्य किछु न कसि भन्या लक्ष्मिचाहि पति परम सुन्दरी छुति सलक्षणा लेउक्त भया
किस पानिमात्र योग्य भया कि विभागाग नुरुवस भनि नारद ले विंति गयारयति नारद का व
चन सुनि श्रीना गयगा आज्ञा गेऊन ॥ हे नारद का मिला इ दिन नका भन्या नारद भऊन
क्या न संदेह गर्ज ऊंऊं मजाइ अहिले ठेगाना गरि आउऊं भजि हिमालय पर्वत के उगयार
हिमालय लाइ भेटि ॥ हे गिरिराज तिमिछे उकेहि विंति गरा आना तम्रि उत्रि पार्वती वैकुण्ठका
अधिपति श्रीविष्णु लाइ देउ भन्या रयति नारद का वचन सुनि हिमालय पर्वत वरुत बुसि भै
हे नारद भलो भन्यो तिना आज्ञा ले मेरि उत्रि पार्वती विष्णु लाइ दिना विष्णु के उजाइ यसै भन

॥ ४४ ॥

भन्यारनारदमुनिफिरिवैकुण्ठमागयाहिमालपर्वतसगभयाकाऊरावतातकस्यासोऊरासुनिवि
छुउसिमैआजागुभयो॥हेनारदतिमिथन्यरखाहोअवआफुअममाजाउभनिदिदादियारनारद
कृषिपतिआफुआश्रमगयातारुप्रांतहिमालयपनिपर्वतीकंन्यादानदिनभनिसेरगासागृत
यारगरिनारदकृषिकनडाकिविलुकेउपठाया॥लगनठरुगडआफुगुरुवरुसुपतिप्रभति
सेरगादेवताकृषियशगन्धर्वकिन्नरदैसनागसर्वलाइनिमेंत्रगागुमाश्रीविलुपनिपा
वतीकंन्यादानलिनभनिहिमालयपर्वतकेउगयातारुप्रांतवरुसुपतिलेपनियज्ञगगातयार
भया॥मेनालेपर्वतीलाइहिरामोतिमाशिकेनानारत्नलेजडाउगयाकागरुतावस्त्रअलंकार
पहिराडसिंगारगरिगविन्तरुपकिहिमालयपनिगुरुवरुसुपतिलेयज्ञगराडकंन्यादान
गगातयारभयासोदेविजयाविजयाअजिताअपराजितानाउगयाकासगिमीरुलेपर्वतीकेउ

॥ स्वप्नी ॥
॥ ४५ ॥

भन्या ॥ हे पार्वती आ जत पाइ का विभा लाऊं ऊ विस्तुला उ कंसा दान दिन छन भनिक ह्यार यति सवि
रु रु का वचन सुनि पार्वती ले संदे रुमानि ॥ हे सवि को मै ले के ठा के टि देषि श्री मरु देव स्वामि पा उभ
नि उ नै लाइ ध्याइ र ह्या ऊ श्री मरु देव लाइ नदि अ रु क से लाइ दिया भन्या अ व स्प प्रा ता रु सा गरि म
ऊं ऊ यति पार्वती का वचन सुनि सवि रु रु भं छन ॥ हे पार्वती उ सो भन्या भा ला न व स ला मि क से
लु न दे स न्या ठा उ मालु काइ आ उ छो रु रु यति न ग मा थो रै वे र मा ति मि लाइ ले जां छन ॥ यति स
वि रु रु ले भन्या प छि पार्वती ले ज सो ग न्या को चारो गर भनि र सवि रु रु ले न दि का ती र व न माल
मि क से ले न दे स न्या ठा उ मालु काइ आ या ता रु प्रा न रु माल प प व त ले आ प्रा गु रु लाइ प ज मा
व सा ति वि धि ग राइ कं न्या द न दि न भनि पार्वती लाइ लि न प ठा या घर मा दे षे न पार्वती के हि प नि
छ न न क सो ग रु भ न्या र यति हि माल य का वचन सुनि स रु स्प ति रु धि ले य स ल ग न मा वि भा ला

॥ ४५ ॥

भयनभमिविलुके उवितिगया सोवसुत सुविलुप्रभरतिदेवतायक्षगन्धर्वकिन्नरआक्रा^{ति} २ अ
श्रमगया॥ तालाघातपार्वतीलाइसखिलरुललकाइआयापछिनदिकातीरमावसिवालुवाकाशि
वलिंगवनाइश्रीमहादेवआवाहनगरिसुजागरालागिनुएकदिनतेसवालुवाकालिंगदेवि।
श्रीमहादेवप्रत्यक्षभेआक्रासुरूपदर्शनदिया॥ हेपार्वतीमलाइकानआवाहनगरिसुभमा
रुपावतीवितिगछिन॥ हेजगदीश्वरवासुअवसादेविश्रीमहादेवस्वामिपाउभमिभजनगरि
रहाहु॥ हेइश्वरमंदेविप्रसन्नऊकुलोलाभनिनानातरहलेवितिगरिनुमेरापिताहिमालय
लेविलुलाइकन्यादानदिनुलागदभागिनाहाआयारशागरमंदेविप्रसन्नहोभनिवितिग रि
नुयतिपार्वतीकिंवचनसुनिश्रीमहादेवआज्ञागछिन॥ हेपार्वतीतेरावावालेकन्यादाननदि
तलाइखिभनुऊदेनकसोभभुभन्यारफेरिपार्वतीवातालेवितिगछिन॥ हेइश्वरजसागना

॥सुनी॥
॥४८॥

लोमला इउप देशगर श्रीमहादेव आजागर्हन ॥ हे पार्वती विलु आ इतला इउप देशगर्हन ते सैग
मास यति श्रीमहादेव ले आजाग मा पछि पार्वती ले ह वस भनि साष्टांग प्रणाम गरि नर श्रीम
हादेव अन्तर्धान भया पार्वती पनि अति रुष मान सित सधिरु रूप छि राषि फर्कि वा वा मरु
तारि वस्पा काठा उमा उग्र ग इरु हिमालय पर्वत ले पार्वती आया कि देखि को धले का हाग इ
धि स्र भनि साधार पार्वती भन्छि न ॥ हे पिता के दा के टि देखि मे ले श्रीमहादेव स्वामि पाउ भनि
उने ला इ ध्या इरु ह्या कु ति मिले विलु ला इ कन्या दान दिन ला ग्दालु अंग ग्या कि धि भा भनि न
र यति पार्वती को वचन सुनि हिमालय पर्वत ले वशिष्ठ प्रभु ति कृषि जो ति किले भन्या का व
चन सन्निधु पला ग्ग ॥ तारा प्रान्त पार्वती ले कै हे विलु आ उ न नर श्रीमहादेव स्वामि
पाउ ना निमित्त नाना तिर्थ व्रत दान धर्म जप तप यज्ञ गरी ला गि न आम्नि सखि रु रु ला

॥४८॥

इ पछि २ ला इना ना प्रकार ले धर्म कर्म गरि तीर्थ जात्रा गरि जाहा २ ग इन्त ताहा २ श्री महा
देव का मूर्ति लु ला इ ह जा गरि न् ॥ फेरि सुखे ला इ दिन प्रति अर्घ दि अनेक उपास एका
द सी आदि व्रत गरि अनेक प्रकार ले श्री महा देव ह जा गरि नि ला हा र रहि धेरै काल सम्म
रिन् ॥ फेरि प्रव २ काल मा कृषि लोक अनेक २ उपचार गरि भोजन गरि कोटि २ गौ दान म
शि मा निक भिक्षुक दरिद्र रुग्ण ला इ दान प्रदान गरि अनेक पुण्य आदिक था सु नि नाना
प्रकार ले पार्वती ले यज्ञांतर रु ले भक्ति ग या को देखि विलसं तोष भै ग रु हा मन गरि शोच च
क्र गदा पद्म लि आ का श मार्ग ले पार्वती छे उ आ इ आ जा ग छि न् ॥ हे पार्वती त्रिमिते यस्ता वा
ल य देखि नाना तिर्थ व्रत दान धर्म यज्ञ तप ग या को देखि मंस तोष भ भा व र दान ले उभ मार
पार्वती भे छि न् ॥ हे परब्रह्म श्री नारायण धन्य २ मेरो भाग ले त म्ना दर्शन पा ना त म्ना चरण

॥स्वः श्री॥
॥४७॥

कोनमस्कार॥ हे श्री नारायण आरु भो क क्वा वर मां श्री महादेव स्वामि पा उः यति पार्वती को
वचन सुनि श्री नारायण आजागुर्छन् ॥ हे पार्वती तिमिले जगदिश्वर श्री महादेव स्वामि पा उ
नलाहम् उपदेश करु सुनः संपूर्णातिर्ध्वज धर्म यज्ञ जप तप चाहि पनि उत्तम कर क
रु करु कचित्त गरि सुन ॥ श्री स्वस्थानि परमेश्वरी को वत गर तै सवत का प्रभाव ले जगदीश्व
र श्री महादेव तिमा स्वामि कुन नभ नियति विलु ले आजाग मा का सुनि पार्वती फेरि भ छिन्
॥ हे लोक नाथ ते स्तुत को विधिक सो हो क्वा क्वा चाहिं हं क सो गनु पहुं सो आजागुं रु वस भ
नि नर श्री विलु आजाग छिन् ॥ हे पार्वती यौषध रु री मा को दिन देखि वत आरंभ गनु हात
गोहा का नड काटि स्नान गरि अचि भै एक भक्त रहि एक चित्त गरि मे हा दिन सम्म म ध्यान काल मा
नि स श्री महादेव का पूजा गनु मा य अरु री मा को दिन अ हो त र शय रे टि १०८ अ हो त र श

॥४७॥

य अक्षता १०८ अष्टोत्तरशाय वेलिपुष्प १०८ अष्टोत्तरसय जनिमुत्र १०८ अष्टोत्तरसय पान्
१०८ अष्टोत्तरसय कुट्टकास्य पारि १०८ अष्टोत्तरशाय जात २ का फल १०८ तयार गरि आसिमा
जें कारले विगंगा जल लेखान गराउनु श्रीखराड रक्तचन्दन सिद्धफल फल पेक्षु उनु धूप
दियेने ये वस्तु भेटि चढाउनु शोधेश प्रचार लेख जागु जपस्तोत्र ध्यान गनु अर्घ दिनु ॥ १ ॥
मावती स्वस्थानि परमेश्वरी कस्ति भन्मा ॥ श्लोक ॥ अष्टदलै च अष्टचमात्त काशित आसन म
॥ खड्ग विभ्रल चोर्ध्व अर्धचक्र मुज्वलो ॥ १ ॥ चतुर्ध्व जं विनेत्रा च सवाल कार भूषिता म ॥ सु
वर्णा वाधिका बोसा स्वस्थानि जगदीश्वरि म ॥ २ ॥ अष्टदल पद्ममा अष्टमात्त का आसन गरिवस्था
कि खड्ग विभ्रल वर नीलोत्पल लिया कि चोरला तती न आवाभ या कि जाना आलंकार लाया
कि पीत वर्णाः सुवर्णा चादि पनि अधिक शोभायमान भया कि यस्ता स्वस्थानि परमेश्वरी लाइ म

॥ स्वनी ॥
॥ ४८ ॥

न ले ध्यान गरि ॥ हे उ श्वरी भनि वरदान मागु प्रसाद की क नु उहि पछि उनै अणे तर सयमा आठ
राटि ८ आठ अक्षता ८ आठ वलि पुष्प ८ आठ जग्गि सुत्र ८ आठ पान् ८ आठ ऊरु का सुपारि ८
सगुण समेत आऊ पुरुष लाइ सो पनु पुरुष न भया छो ग लाइ सो पनु छो ग न भया मित्का
छो ग लाइ दिनु मित्का छो ग न भया नु न्का म नाले आऊ ले वत ग मा को छ मेरा फलाना काम
मि ऊरु व सभनि गगामाल गि वरु उनु ॥ हे पार्वति स्वस्थानि परमेश्वरी को प्रसाद लिखा वे
ला मा श्री मरु देवति मि छे उ आइ उगन नू तेरा भक्ति दधि म सनेष भ भा श्री मरु देव स्वामि पा
या सभनि वरदान दिया स्वस्थानि परमेश्वरी को वत विधि क ह्या इति विस्व वर उति श्री ना
रायण ले आजाग मा पछि पार्वती ले मन मा आनन्द गरि श्रद्धा पूर्वक पूजा गरि प्रणाम गरि
नू पार्वती ले पूजा गरि सका पछि विलु ले गरुड माथि सवार भै ता हा देखि अंतर्धान भै वैज

॥ ४८ ॥

श्रीस्वस्थानीव्रतउपदेशोनाम

राठविषेगया॥इतिश्रीस्कंदपुराणोमाघप्रहात्म्यकेदारखण्डेकृष्णारअगस्त्यसंवादेश्रीस्व
स्थानिपरमेश्वरीकथाअष्टमोऽध्यायः॥८॥ताहासांतहेअगस्त्यमुनियौषधंशुक्रहरी
माभयोरुपार्वतीलेविष्णुकाओजालसरिवसमेतभैरवातगोराकानडूकाटिह्यानगरि
अचिभैरुकभक्तहरिकचिन्नगरिनित्यमध्याह्नकालमाश्रीमहादेवकाहजागरीरा
गिन्॥मैहादिनभयोरमाघशुक्रहरीमाकादिनमासेदि१०८अक्षता१०८यज्ञोप
वित्र१०८वेलिपुष्प१०८पान१०८कुटकासुपारि१०८संहरासामागृतयारगरिश्रीस्व
स्थानिपरमेश्वरीकोहजाध्यानजपस्तौत्रगरीलागिन्॥इन्द्रलेचालपायाहअवपाप
हृत्कारकासुरदैत्यकोनासकोकारगाआयोहिमालयपर्वतकिंपुत्रिपार्वतीलेश्रीमहा
देवस्वामिपाउनानिमित्तस्वस्थानिपरमेश्वरीकोव्रतगरिन्॥स्वस्थानिपरमेश्वरीका

॥ स्वप्नी ॥
॥ ४८ ॥

व्रतका प्रभाव ले श्रीमहादेव स्वामि पाया पछि पार्वती का गर्भ दे वि पुत्र जन्म लाते सवाल बले हा
म्राश उभया को तार का सुर देख लाइ मारि दिन नरुत व अभरा वति राजरा तग रा पाउला
भनिय सो विचार गरिति ति स्को टि देवता लाइ डा कि भव लागा ॥ हे देवता हो पापि हतार का
सुर देख ले स्वर्ग मा रा अंग या को धैरै काल भयो आवतै स्को ना सको कारणा आया कसो भन्नाहि मा
स य पर्वत कि पुत्रि पार्वती ले श्रीमहादेव स्वामि पाउ भनि स्वस्थानि परमेश्वरी को व्रत गरा ला
गि लु श्रीमहादेव स्वामि पाया पछि पार्वती का गर्भ दे वि पुत्र जन्म लाते सवाल बले हा म्राश उभ
या को तार का सुर देख लाइ मारि दिन नरु अव श्रीमहादेव भन्ना सत्य देवि मरी ले नाना सो कग
रि पृथि भ्रम नगरि उत्तरा पंथ मा जाइ काम को बलो भ मोरु छाडि संसारी इन्द्रिय वाधिति नै
आखा लाइ पर वल ध्याइ कन वडा कए ले तपस्या गरा ला गिर त्याका छन ॥ अव श्रीमहादेव

॥ ४९ ॥

लाइत पस्या देषि भ्रष्ट गरी फेरि काम क्रोध लोभ मोह माला उन्माउ पाय का कभ निस्वधार देव
तारु रुभे छन ॥ हे देवेन्द्र तो काम गरी काम देव विना अरु को सकला काम देव जाइ श्री महा
देव का हृदय मा काम वान प्रहार गरी आउन् यति देव तारु रुले भन्या पछि इन्द्र ले ते मेरो
भनि काम देव लाइ डाकिल्या उभ निवायुला इअ हाया वायु पनि इन्द्र का आज्ञा ले काम देव
छे उजाइ चोडे डाकिल्या या काम देव ले इन्द्र लाइ प्रणाम गरी मलाइ का काम ले डाकभयो
भनि सुधा यार इन्द्र आज्ञा गछन ॥ हे काम देव श्री महा देव ले उन्नत पंथ मा जाइ काम क्रोध
लोभ मोह का डिसें धरी इन्द्रिय बाधि पर वस्त्र मा चिन्तला इत पस्या गरी लागि रहा छन विना श्री
महा देव ले यो वस्त्रा राउ ससार को रक्षा को गलाय सफल ति मिले ता राजा इ श्री महा देव का हृद
य मा काम वान प्रहार गरी आउ फेरि काम क्रोध लोभ मोह माला उ यति इन्द्र ले भन्या को वच

॥स्व.नी॥
॥५०॥

जमुनिकामदेवलेस्योकाममगरिआउलाभनिआमिस्त्रिरतिसमेतभैउत्तगपंधमाश्रीमहादेव
लेतपस्यागमाकाठाउमागया.श्रीमहादेवलाइसाहांगप्रणाभगरिइन्दुकाआज्ञालेधनुषटंकार
गरिकामवानकानसम्भैचि श्रीमहादेवकाहृदयमाताकिप्रहारगमा.कामदेवलेकामवानप्र
हारगमाकोश्रीमहादेवलेचालपायारक्रोधलेआघाउघारिलेसातिलेआघादेघिअग्निकाज्वाला
निस्तेगारकामदेवभस्मभयो॥कामदेवकिस्त्रिरतिलेआकुस्वामिकामदेवभस्मभयाकोदेघिनाना
शोकगरिश्रीमहादेवकापावमापरिवेतिगर्गलागिन॥हेजगदीश्वरस्योअपराधमेरास्वामिकोहो
इन्इन्दुकाआज्ञालेतिम्राहृदयमाकामवानप्रहारगमाकोहो॥हेउगनाथकामदेवदेघिप्र
सन्नभैस्योअपराधभमागरिस्वामिवरदानदिनुरुवस॥हेकरुणामयतिमिकलाभत्याडुहको
संहरगरिसाधुकोरक्षागरिरहनायसातिमिलाइकोटि२नमस्कारतत्रावरीनगरीरुज्जार

॥५०॥

जिन्ना भयाका हो सना गले पनि नसकाको मस्तिजा तिले का सकला ॥ हे भक्त वत्सल मला इविधु
वानतुल्या उजुलोला मेरा स्वामि काम देव सगला इ संतोष सित घर पठा उभ नि युक्ता तरुले शा
कग माको देवि. स्तुति गमाको सुनि श्री महा देवला इ अतिकरुणा भयो र ॥ हे रति तैले शोक गमा
को देवि. स्तुति गमाको सुनि मला इ अतिकरुणा भयो यस जन्म मा तले रो स्वा मि पा उदिन स. हा
परका अंश मा विष्णु ले श्री कृष्ण भै औतार लिन न तेरा स्वामि काम देव ले श्री कृष्ण का उत्र प्रभु
भै जन्म लात वति मिस्त्रि पुरुष को भै टलोला अहिले त दुःख न मान घर जा भन्यार रतिले रुवस
भनि मन मा आनन्द गरि श्री महा देवला इ साखी गय रा म गरि घर फिरि गइ न ॥ ताका पोत श्री
महा देव ले सन्ने देविला इ समुज्यार का का जन्म लिन गइ भनि ध्यान दहिले विचार गरि हे मा
रुहि माल य कि उत्रि पार्वती ना उभै जन्म लि श्री महा देव स्वामि पा उभ नि के रा के टि देवि तिर्थ व

॥ स्तुती ॥
॥ ५१ ॥

तदा न धर्म यज्ञ जप तप गमा को फेरि विलुका उपदेश ले श्री स्वस्थानि परमेश्वरी को व्रत गरी लाग्यो ।
को चाल पायार अव पार्वती को चरित्र हेरु भनि श्री महादेव ले इन्द्र रूप भै वज्र हात मालि से रावत
रुनि माचढि पार्वती ले व्रत गरि रक्षा का ठाउ मा उग्न गया पार्वती ले पनि संभूती व्रत गरि हात मा अर्घ
पात्र लि श्री महादेव स्वामि पाउ भनि स्वस्थानि परमेश्वरी लाइ अर्घ दि. स्तुति गरी लागिन ॥ हे इश्व
री निरज न निर्गकार तिमिलाइ कोटि २ नमस्कार संभूती तीर्थ पानि तिमि व्रत पानि तिमि धर्म पानि
तिमि व्रता विलु महादेव पानि तिमि शृष्टि स्थिति संसार कर्ता पानि तिमि तप भूत पानि तिमि
आदि उरुष पानि तिमि ॥ सत्वरज तम गुण पानि तिमि ब्रह्मा रास संसार मा आत्मा उरुष भै रक्षा का
पनि आदि शक्ति पानि तिमि काम रूप पानि तिमि आदि अंत्य पानि तिमि हात पावन भया का पानि ति
मि यस्ता अव्यक्त तन्मा वर्ण न गरी चतुर्भुज ब्रह्मा भया सरस्वती भद्र नंद शेष नाग भया इन

॥ ५१ ॥

हुरुलेपनिनसकाकोमकसोगरिसकुला॥हेइश्वरीमेराभक्तिदेविसंतोषहोभनिनाना
तररुलेस्ततिगारिप्रसादजिकनलाग्याइन्दुरूपश्रीमहादेवप्रणापार्वतीलेदेविनरइ
न्दुआयाछनभनिप्रयाजोगलेप्रजागारि॥हेदेन्दुकाकामलेआउनुभयोआज्ञागर्भनिन
इन्दुरूपश्रीमहादेवआज्ञागछन॥हेपार्वतीतमाभक्तिदेविमसंतोषभनाश्रीमहादेव
स्वामिपाउभनितिमिलेयोउतगमैश्रीमहादेवकसाभन्यावकुलाजसाप्रहानिर्घिनिस
पकागरुनालायाकाउठावयलगचढ्याकादाहिनाहातलेइमरुवजाउन्नावाउहातमा
त्रिभूललियाकाकम्बरमावाघकोछालावेढ्याकाभूतपिशाचप्रमथगगासगलियाकाविष
भागधतुरघान्यानिर्लज्याभिर्निर्घोरिअघोरमूर्तिभैमज्ञानमावासगरिहिडनातिमि
भन्यायस्तिकोमलपरमसुन्दरीतिमितमहादेवजोगकिछन॥हेपार्वतीतिमिलेप्ररुष

॥ स्तनी ॥

॥ ५२ ॥

लिन इच्छा भया स्वर्ग का सं प्रणी देवता कारा जा प्रला इ स्वामि त्रु ल्या उ स्वर्ग कि रा नि को लि यति इ
न्दु रूप श्री महा देव का वचन सु नि पा र्व ती ला इ अ ति को ध भ यो र भ च ला गि न् ॥ हे पा रि षु इ
द्र मै ले य स्ता स्व स्था नि पर मे श्व री को व त ग रि र ह्या का ठा उ मा आ इ य स्ता कुरा ग रि सु मे रा स्ता
मि श्री महा देव ला इ ना ना तर ह ले ॥ नि न्दा ग रि स यो मै ले स रु न स कि न त ला इ आ प दि कु भ नि
आ प दि न त यार भ इ न्द्र इ न्द्र रूप श्री महा देव ले पा र्व ती का आ प दे षि डु रा इ प र्ष २ हे पा र्व ती म
इ न्द्र हो इ न न ते रा च रि त्र हे नी नि मि ते इ न्द्र रूप भे आ का म हा देव ऊ भ नि ज्यो ति रूप ले
आ कृ स्त रूप दर्शन दि या ॥ ध न्ये २ ते रा भ ति दे षि म सं तो ष भ मा भ न्यार पा र्व ती ले श्री महा दे
व का दर्शन पा या प छि म न मा आ न न्द्र ग रि सा लो ग प्र णा म ग रि न् ॥ हे ज ग दी श्व र के टा के
टि दे षि मै ले ना ना ति र्थ व त ध र्म य ज्ञ ज प त प ग या ति श्रो द र्शन पा इ न आ ज वै कृ रा ठ ना

॥ ५२ ॥

थविल्लुकाउपदेशलेश्रीस्वस्थानिपरमेश्वरीकावतकाप्रभावलेतिमोदर्शनपानामेरो
मनोवाछाप्रणभयोधन्ये२मैराभाणअवस्वस्थानिपरमेश्वरीकोप्रसादरोटिसोपनला
इकन्यादानभयाकोछैनन्कन्यादाननभैकसागरिसोपयसर्वलेमैरावावामरुतारि
छेउजाउभनिअनेकसखिहेरुपछि२लाइश्रीमहादेवसहितहिमालयकारुजुरमाडा
किलगिन्हिमालयपर्वतलेश्रीमहादेवआणकादेविचरणामापणामगरिहस्तार्घपादाघ
गरिअडभयाकाआसनमागविमिरासनमाविगजमानगराइराषदाभया॥हिमालय
लेपनिमनमाआनन्दगरीआक्रिउत्रिपार्वतीलेश्रीमहादेवस्वामिपाउनलागिभनिवडि
रुषमानगरिआक्रिस्त्रिमैनाछेउजाइभन्या॥हेप्रियमैनाधन्य२तेरिभाणधन्य२तेरि
छारिपार्वतीकिभाणश्रीमहादेवजन्मास्वामिपाया॥हेस्त्रिरामिधन्यरह्योछापार्वतीकन्यादा

॥ स्व. नी. ॥
॥ ५३ ॥

नलिनभनि श्रीमहादेव आया अवकं न्यादानदिन लाइ सामा गृत्त गारगर भनि आह्वा पा वशिष्ठ
पृथ्वीति कृषि जोति कि लाइ शक्ति विचार गराइ अक्षत तीया कादिन ल गृत्त रुग इस्वर्ग मन्त्र पाता
लति नै लोक का देवता कृषि यश गभ्वर्ग किन्नर देस नाग असरा रु रु सर्वे निमंत्रणा गमा कं न्या
दान कोदिन जव आया रु वृक्षा विस्तु प्रभृति देवता कृषि यश गभ्वर्ग किन्नर देस नाग असरा
आइ यज्ञ भाव सा ॥ चतुर्मुख वृक्षा ले यज्ञ गरा लागा कृषि रु रु ले वेद पढ न लागा गभ्वर्ग रु रु गी
दगा उन लागा असरा रु रु नाच न लागा देव कं न्या कृषि कं न्या यश कं न्या गभ्वर्ग कं न्या किन्नर क
न्या देस कं न्या नाग कं न्या रु रु ले ना ना वस्तु अलंकार पै छिउ चाहिउ रा मा भै पावती कन्या दान दिया
कोहे री भनि आया ॥ हिमालय पर्वत किस्ति मेना ले पति आक्रि प्रवि पावती लाइ ना नाग भले पन
गरा इहिरा मोति मानी कना ना रत्न ले जडा उग मा का गरु ना क पडा पै ला इष्ट गार गर इना ना

॥ ५३ ॥

मंगलगीदवाद्यगुरिहिमालयपर्वतलेतिलकुशसमेतपार्वतीकारुतसमातिमेनालेसु
वशाकाकमगादललेजलधारागुरिवास्तुगालेवाक्यगगाइकेन्यादानदिनलागदाहिमालयपर्व
तलेश्रीमहादेवछेउभन्या॥हेविश्वभरयसलग्नमामेरिप्रविपार्वतीतपानिलेशदिंकुस
कल्पगदीगोत्रचाहिछकुरुवरुवसगोत्रविनासंकल्पऊदैनतिमोगोत्रकाछेविनागोत्रले
केहिकामनगनुभन्याकोछभनिशोधायजाहिमालयकावचनसुनिश्रीमहादेवलेके
हिउत्तरगगशीनसकिवऊतैसर्ममानिउधोमुखगुरिचुपलागिरह्या॥हिमालयपर्वतलेपा
र्वतीकारुतसमातिश्रीमहादेवकामुखरुरिरह्या॥विलुप्रभृतिदेवताकषियसगभ्रवकि
अरुदेसनागरुलेयसैहोभक्तकसैलेसकेननननतसओसरमासस्ये लोकवाटनारद
कषिआइसस्येदेविकोलाइकोयचवनाइशिवगीतगाइनाचदैहिमालयपर्वतछेउजाइ

॥स्व.त्रि॥
॥५४॥

आज्ञागगीताग्या॥ हे पर्वत गजहिमाल य पार्वती के न्या जगदीश्वर श्री महादेव लाइ के न्या दान दिन कि न
विलम्ब गछौ विलम्ब नगर के न्या दान चा हो दिहा ल॥ हे हिमालय तिमाम नमो संखाम नो ला फे हि
संखामो उ पदे न॥ हे गिरी राज जज्ञा माया ले यो वस्त्रा गर संसार मा भृष्टि स्थिति संसार भया को बके
हे संसार गछे न फेरि रुके ले वस्त्रा विलम्ब महादेव तिनै भया का छन तिनै ले एक पुनि ऊं छन॥ य
ज्ञा आदि पुरुष तिनका वाचापनि छे न न प्रह ता रि पनि छे न न जात पनि छे न न गोत्र पनि छे न न स
र्व व्यापितिनै तिति स्कोटि देवता कापि तां प्रह पुनिति नै ऊ न च तद दश भवन मा जा वत रजि वात
मा छन तिनका हृदय मा वसि पा पप्रणय का साहि भै रखा का पनिति नै निरंजन निगकार पनि
तिनै ऊ न यस्ता इश्वर का महिमा गरी रुज्जार जिह्वा भया का शे सनाग भया फेरि चतुर्मुख व
स्त्रा भया इन ले पनि नम का को म क सो गरि सऊला पार्वती जगदीश्वर श्री महादेव लाइ के

॥५४॥

न्यादानदेउ॥ हेहिमालयध्वस्यतिमाभागध्वसे२मेनाकाभागभनियतिनारदकषिलेभन्या
पछिसंभृतीदेवताकषियभगध्वर्वकिन्नरदेसनागरुहलेनारदकषिलेभलोभन्या
२भनिविलुप्रभृतिदेवतालेभन्यागवाहादेविहिमालयलेपनिमनमाअसेतहवमान
मैकविहुरुहलेवेदपारगागराहचन्द्रसूर्यसाक्षिगविश्रीनाशयनप्रभृति। तितिस्कोटिदे
वतागविअनेकगीदवागगराहअनेकजाजगराहहिमालयलेपार्वतीकिलानसमाह
मेनालाइजलधारालाललाइअक्षतनीयाकादीनअभवैलापारिश्रीमहादेवलाइपा
वसीकन्यादानदिशा॥ पार्वतीलेपनिहूलकामालाश्रीमहादेवकागलामापैलाइतिनफेरा
परिक्रमगरिकनपाउमापरिन्हिमालयपर्वतलेश्रद्धाहर्वकसंभृतीदेवताकषियभग
ध्वर्वकिन्नरदेसनागरुहलेहिमालयपर्वतछेउभन्या॥ हेहिमालयतिमिध्वसेरक्षाहो

॥ स्व. नी. ॥
॥ ५५ ॥

मेनाकागर्भपनिधनेरहे छति मि दु इ ज सा भा ग व न्त स स दी प मा प नि ऊ च उ ल्ता भ छ. ति मि
ले ज न्म लि पा के सा फ ल भ यो ॥ क्वा न भ न्मा उ न पि ना क धा री श्री म हा दे व ला इ यो गै श्व र ह
रु ले ध्या न द छि ले हे द प नि पा उ न स क ते न न. ते स्ता श्री म हा दे व ति मि ले उ वा इ पा पा यो
रु मि प नि क ता थ भ भू. अ व ति मि ले आ जा दि या. आ क्रा २ स्था न मा जा छो ॥ य ति दे व ता
कै षि य क्ष ग भू व कि न्न र दे स ना ग रु रु ले भ न्मा प कि हि मा ल य प व त ले जा नु रु व स भ
नि वि दा दि या र. आ क्रा २ आ भ्र म मा ग या ॥ इ ति श्री स्कं द उ रा गो मा च म हा त्म क दा र्श व रें
कु मा र अ ग स्त स वा दे पा र्व ती क न्मा दा न ना म श्री स्व स्था नि प र मे श्व री क था न व भो ध्या य
॥ कु मा र आ जा ग र्छे न ॥ हे अ ग स्त उ नि ता हा मं त पा र्व ती ले श्री स्व स्था नि प र मे श्व री
का य मा द रो दि ट अ क्ष ता ट वे लि उ ष ट ज गि न सु त्र ट पा न ट कु इ का सु या रि ट स गु रा स मे

॥ ५५ ॥

तस्याइ॥ हे स्वामि मेरा न पस्या मरी भयो केटा केटि देखि तिमिलाइ ध्या या को हो आज पात्रा भनि
श्री मरु देव का हात मा सोपि न सा हांग प्रणाम गरि॥ हे आदि पुरुष स्वस्थानि परमेश्वरी का
व्रत का प्रभाव ले मै लेति मिस्वामि पात्रा फेरि पनि म केहि विंति गहु वस्त्रा गर संसार मा को हि दु
खि छु न द रि डि छु न कोहि पापि छु न केसे का संतान छे न न केसे का स्त्रि छे न न केसे का पुरुष छे
न न यो व्रत प्रचार गरि दिया सबै का उद्धार ऊ न न भनि विंति गरि न र यति पार्वती का वच
न सुनि श्री मरु देव आज गछु न॥ माधु धन्य र तें दुखि द रि डि देखि तेरा त सो दया भनि
अश्वत्थामा क विलाइ डाकि पल्ले र सात ल पा ताल मा पठाइ डाउ न प्रचार गरि दिन न यति
श्री मरु देव ले आज ग मा पछि पार्वती लेह वस भनि अश्वत्थामा क विलाइ डा क पठाइ न॥
अश्वत्थामा क वि आचार श्री मरु देव पार्वती लाइ प्रणाम गरि॥ हे भमानि से कर मलाइ

॥ स्वामी ॥

॥ ५८ ॥

का काम लेता शुभ भयो आजागर भव्या रणार्वती आजागर्हि न ॥ हे अश्वत्थामा क्रुषिति मि रसातल
पाताल मा जा उर उरु जो उरि दिखन जो पापि छन जस्का संतान केतन ज
स्का सिद्धे जन जस्का पुरुष केन नृति नला इय स्ता विधिले श्री स्वस्मानि परमेश्वरी को वल
गरा उर उरु दारु नन ॥ श्री विष्णु ले आऊ लाइ करु दारु विधि कहि नृयति पावती ले आ
जा गया को सुनि अश्वत्थामा क्रुषिति मि भैरव सभ नि श्री मरु देव पावती लाइ प्रणाम
रि रसातल पाताल मा गया ता रान ॥ एक दिन माहा देव ले ईशोर्वति कीर्ति के चतुर्दिशि
हेनु मरी भनि माफु फसे ले नद मन्दा हाउ मा नु नन गये ॥ माहा देव लाई मावर्ति ले नद धि यता ठता धो गिहि
इन हा गिन् ॥ कहिं भाई न सकि ननर अति भित्त भाकु न गरि बिला पगन ला गिन् ॥ फेरि फता जानु भो भनि
अनेक ठाई मा बाग दलु कि रतिका माहा देव लाई के ला वारि न रहे ईश्वर माई लोक न मलाई छलि

॥ ५८ ॥

लुक्कन जानु भयो ॥ भनि हार्ड भाई काटा छेने शुक्त भै स्त्रोत् मात कवन मा गई घर्ड ठा ठलो वृद्धे का छ
आमा आई वसिरहिन् ॥ श्रीमा हा देव पानि बन वनै फिर्दि ताहि आई पुगेः किराति निरुप दार वति लाई
देवि मोह भई सो धुन लागे ॥ हे सुन्दरिति मि को हो देव कन्या हो किः प्रदे कन्या हो कि नाग कन्या हो कि
अथवा भप्सरा हो कि मई लेहे रीता तिमि रासी शम्भुरियो वृत्तांड संसार मा हुन दुर्लभ द ॥ केरि कले धावन
को विच मा किन आई वसिरह्यो ॥ तिमि लाई इर पानि लागे देन कि प्रे भधार बन मा वन गन्तु बाध हाति को
भय पानि कति न मानि ॥ निध किक सग गत्यो प्री कुरा का वृत्तान्त मलाई कह्यो कि किराति निरुप दार वति सि त श्री
मा हा देव लो आग्या भया को सुनि ॥ किराति निरुप दार वति लो श्रीमा हा देव नै हुन भनि धिनि मन मने ते
इंद्रात् गरिन् ॥ श्रीमा हा देव कसा तरु सग भयो भनि बाजा हात मा धनु लिय का दाहिने हात मा विशुल
लिय का सर शषने ठोको का धमा बोक्छा का स र्प का गहना लाया का माहा भयंङ् कर मुर्ति भया को दूवि

॥ स्म. नो ॥

॥ ५७ ॥

शीघ्रवर्तिते भवत्तागिन् ॥ किरातस्य माहादेवसितपार्वतिविनर्तितगर्नलागिन् ॥ हे किरात मजाहा वसे कोठे वैवर्ध
भयो किरातिनि रुनाले बाधहति कोठुरपनि मलाई केह लागेन तपस्या गरि वसे कि दुभनिन् ॥ यस्ता तरु स
गदुर भस्वी पुरुष को भनिक कुरा काहानि हुने मासा गपरोर किराति हि श्री माहादेव आग्या गदने ॥ हे सुन्दरिति
मिपनि धकले हे मपनि धकले दुहा मि दुबै जाना भाहि वास वसे ॥ यति श्री माहादेव का वचन सुनि किरातिनि
रूप पार्वति विनर्ति गर्दिदन् ॥ हे किरात ति मी लो ग्या मानिस् धकले मजाहो मानिस् यस्ता वन का विचमा
कोहि न भया का हा ई मा कसो गरि धकै ठाई मा वास वसे ॥ लो ग्या मानिस् को मन धर्म रुने देन उमर का शम्
ए लो र्नि देव वीद्ध आमा वावु समेत विर्स द रुदन् ॥ ते स ई भ धले धकै ठाई मा वासन वसे यो कुरा नगर यति कि
राति निरूप पार्वति को वचन सुनि किरात रूप श्री माहादेव ले हे सुन्दरि ते स कुरा मा केहि सन्देह नगर भनि
दुबै भस्वी पुरुष ते सै वृद्धे का मुनि वास गरे ने स्ता तरु सग वस्ता २ धरे दिन् गित्यो किराति निरूप पार्वति का

॥ ५७ ॥

कोमल माया सैव सैर कर्तनिर्वाह गर्ने होई भोलानाथ सैव सैर दिन भुक्ता रगर्न यनि सक द्यन ॥ भग केहि गुती
गर्नु परे भनि मन मा विचारि श्रीमा हो देव लाई दली अकास वानि भया मे गरि भन्न लागिन ॥ होई चोर तया रीघा
दल राभरा हा मुहसु गृहमा बिसु इन्द्रा दिहसु सर्वे लो सारे द व मा भो होई चोर घसे गरि शत्रु गर्नु भो भने हा मरा उंचा
रको गरी ॥ होई न भो होई भ भन जन केना ससुने भया को धरे का ल भया के लास को चर्या गरि हा मरा उ
धार गरि दिशर भने मस्ता भका स वानि भया को सुन ॥ तब श्रीमा हो देव लो यो कस्सो भन्या म माहा आया
को कस्सो देव को देन भनि मला उता होई केहि पात ता पाई न सके नर ॥ देव ताले भने काहुन भनि थपला
जे किरातिनि पार बति लाई न दि विषे जन जागे ॥ तब पार्वति लो मनि केहि धाहुन याय मे फल फुल पिपि पान ला
गिन् ॥ किरात रूप श्रीमा हो देव ताहा पुगि हो सुदरि तिमि लाई घात दा कहि पाई न सकि न काहा गय कि धियो
भनदा ॥ किराति निरूप पार्वति भन दिन् हो किरात भो क ला गदा कंद मुल घात न गय रुम कहि गया कि देन भ

निजगणरिरहदा ॥ पुनर्नंदु भन्यानि भतिरमरि पारवति लाई देखि मनमा धित भति चंचल भै कामलो धिड़ा गरी कि
 रति निरुप पावति भनदछिन् ॥ हे किरातति मि कस्तारहे देखे ति मो धर्म दहि हो भैलो त अधाई भने को धिआंतर श्रीमहा
 देव बोहे क भरु स्यामि तु तपा ईने देन ॥ भनि प्रतिज्ञा गरि पाहि वनमा भाई ईने ईधोर श्रीमहादेव को तय स्या गरि वस्या
 कि दु ॥ तिमिले ते सो गरि तिमिले सराय गरि महत्या गरि मने दु धति विराति निरुप पावति का वचन सुनि ॥ किरातरुपमा
 होरे बले हे सुन दरि तिमिले सो भने ई भन्या ई भै माही देव मरुम बन विहार गर्न मन लाग्य बन विहार गर्न भाय को रुम ॥
 नयतपा महेर भनि जोति धोरु सधारि दरसन दिनु भयो तब किराति निरुप पावति मनमा भानंद गरि माई माहुं वत गरि
 विजिगर्न लागि नहे ईधोर ई सो भया कन्या दान गिन मेरा बाबा माहातारि देखे हिनु नुह न सु भन्य ॥ लो भनि किराति
 निरुप पावति को यदि लागि माही देव गमा गदा हिमालय परबत काधार मा पुगे तब माही देव ले धारा माई मो पावति धोर
 हिंदु मगई दूल गरि भन्या बाबा माहातारि देखे लाई न ॥ भव मई ले कसो गरु भनि लाडा मानि ताहा देखि भन्य ध्यान भै कि

शतेधोरशीवलिंगभैस्तेनमातककावनका उत्तरभागमागईवसे ॥ फेरिमाहोदेनलाईमोदेविषावतिलोभतिविमैगरिध्या
दूरेतेविचागारिन् ॥ फिरतिधोरसिनलिंगभैरहेकाधातमाईनरधारतिनोवाग्मतिमानित्याभस्मानगरिकिरिति
धोरकोसिनलिंगकोध्यानगरिवस्वमहिशईधुषदिमनैवेधभडाईमुजागरितयस्यागरिन् ॥ पारवतिनोभस्मान
गरेकोहुनालेतेसाईकोनठगोरिधारभयो ॥ गोमनुष्यागोरिधारमाभस्मानगलीकिरिसारसिवलिंगकोदरस्व
गलीतेस्कोसर्वदुषनासहलायसलोकमासुषस्वपतिमाईपरलोकमाकेवासयदुनिघाईगा ॥ हेभगत्तामुनि
भनिकुमाछोभाइगरेताहाउंजानतयासोतरहसितनित्याधारतिनोतयस्यागरेकोदेविषाहोदेवप्रस्नभैहस्याइतो
मुषगरिआफनासोरूपदरसनदिय ॥ तबजगतमाताधारवतिलेमन्याभतिहर्षभैघाईमाधरिदुवतगरिअनगो
लिवाधिवितीगर्नलागिन् ॥ हेईधोरहजुरलेकिनमलाईप्रस्तातरहसितदुषदियभोमहजुकोमनुषारिनकिभ
निभनेकतरहसगसारेदुषमानिभनेकविलोनागरिविध्यातगरैकोसुनिशीमाहादेवबहुतेसुसिभैधारति

॥ स्व. नी ॥

॥ ५५ ॥

कनअंकमालगारिआफजाकासमागिईताहोदेविभंतध्यानभैहिमात्तयपरवतकाधारगद्य॥ यस्तातरहसग
माहादेवपार्वतिआयकोदेविहिमालायवर्ततभत्मानमुसिभैपुष्याधृष्टीगारि॥ भासमागतालिधौरासिक्कवाजा
मारिगारिभोजनगरायाताहादुरंधारदिनवसिमाहादेवलोपार्वतिदेवभाजागरे॥ हपार्वतिधैरेकालधैर्मासवित्ति
रकैलाससुन्याभयाकोदभवभाहावसिक्कगनुदकैलासमागार्ड॥ तैरावाउभाभादेविदरुनुष
दभनिभीमाहादेवलोभाभागरेकोसुनिपार्वतिकामनमाभान्दमानिमुसिभैईहवसरभनि
॥ दुवैभस्विपुरुषमिनिगदरपतिश्रीमाहादेवभाभागारिहविताभनिधैरेदिनदेविसत्यादेवि
मनीलोकेलाससुन्या॥ भ

॥ ५५ ॥

या को छ अवति मिले आ जादि या के लास मा जांदां श्री मरुदे वले ॥ हे पिता भनिय सा वचन ग मा का सु
मिहि माल य पर्वत वरु ते संतोष भै श्री मरुदे व के उभया ॥ हे त्रै लो क ना थं सं पूर्ण दे व ता का पिता
मरु पनिति मि ति मिले अ ज्ञा निले भ न्दा के म हा र भो रु ले छो पि हे पिता भ न्दा मे रा सं पूर्ण अ ज्ञा
न को ना श ग रि ज्ञान दे उ स दा त मा भक्ति मा मे रो चित ला गो म ॥ हे श शि से र अव पे हे पू जा त ग
रु भ नि श्री मरुदे व र पा र्व ती ला इ ना न व रू अ लं का र पे हा इ सिं हा से न मा व सा लि षो उ शो प
चो र ले पू जा ग रि भो ज न ग रा या र स्तु ति ग रा ला ग्या ॥ हे भ मा नि सं क र ज सै ल क्ष्मी श्री ना रा य ण
ले स मु ड का घ र जा इ व स्या मा स मु ड ला इ आ न न्द भ या थो त स्त ति मि ड इ स्त्रि पुरु ष ले मे रा
घ र व स्या का दे वि म ला इ आ न न्द भ ड र हे क ॥ हे ज ग दी श्व र ति मि क स्ता भ न्दा आ क्रा मा या ले व
स्वा गर सं सा र मा था पि त भै र व्हा का य स्ता ति मि ला इ को टि श्च म स्का र फे रि स मु ड म थ न ग दी का

॥सु.नी॥
॥६०॥

लक्ष्मिनिस्कोरं ससारदग्धं नलागोत्योविषकशाठमाशयिरक्षागमौ नीलकशाठभनिनाउभयोय
स्तानिमिलाइकोटि२नमस्कार॥हेविश्वम्भरफेरिआफुलेभृष्टिगरिआफुलेसंसारगर्माय
स्तानिमिलाइकोटि२नमस्कार॥हेपरंब्रह्मफेरिउगमरदेसलाइमादीतमोसाजकस्तोभ
न्याएधिंकोरथचतुर्वेदकोपोडाचन्द्रसूर्यकोरथकायाग्रावस्यासारधिंसुमेरुपर्वतधनुशे
षनागधनुकोलादोविलुजस्तोवान्तस्तात्तुशा लाइनास नयत्रोसाजगर्मायस्तानिमिलाइको
टि२नमस्कार॥फेरिपर्वतीलेपनिजगत्ताताभैमैराउपरदयागरिमैरिउत्रिमैजन्मिन्तेस्तादयासाग
रलाइकोटि२नमस्कार॥हेगुगनायकब्रह्मापनितिमिस्फोरपनितिमिजंगमपनितिमिसप्तसागर
पनितिमिसत्वरजतमत्रिगुणापनितिमिमृत्युकामरूपनितिमिचमकायमपनितिमिकाल
काकालपनितिमिगुणाकागुणापनितिमिदेवताकादेवपनितिमिअनाथकानाथपनितिमिविश्व

॥६०॥

रूपमूर्तिपनितिमि आदि अं स पनितिमि अ ह व सु पनितिमि द्वा द द्वा दित्य पनितिमि द्वा दित्य पनितिमि
स पनितिमि ॥ ब्रह्मागदसं सारमा सं पूर्ण प्राणि का हृदयमावसि पा प उ राय का साक्षि भै रव्या का पनिति
मि ॥ हे स व व ध जति मा भि मा ग र्गा च त्त्तु र्मु र व ब्रह्मा को पनि ग म्प छै त रु ज्जार जि ह्मा भ या को शेष नाग
को पनि ग म्प छै न मे रो क सो ग रि ग म्प हो ला भ नि स्तु ति ग म्प ॥ य स्मा त र रु ले हि मा ल य प र्व त ले स्तु ति ग
मा को सु नि श्री म हा दे व सं तो ष भै हं स्मा इ लो नु र व ग रि ॥ हे प र्व त रा ज त म्प भक्ति दे वि म सं तो ष भ मा स
दा मे ग भक्ति मा चि त्ता या के ला स प द वि पा या अ व रु मि ज्ञा हो हे भ नि हि मा ल य प र्व त र मे ना छे उ
वि द भै व ष भ मा च वि पा र्व ती ला इ का ष मा लि के ला स प र्व त वि षे ग या र प्र म थ ग गाले सहि त भै व
वा आ न न्द ले र रु दा भ या ॥ इ ति श्री स्कं द उ रा गो मा प मा हा त्म के दार व र गो कु मार अ ग स्त सं वा दे पा र्क
ती कै ला श प्र वेश ना म श्री स्व स्था नि पर मे भव शा क था द श मो ध्या यः ॥ १० ॥ हे अ ग स्त मु नि ता रा जी

॥ स्व. ती ॥
॥ ६९ ॥

नरकदिनपार्वतीले उठवा घसा उड का काम चलले मूर्ति वना उधार मागवि छाडिन ते स्ता सम य मा श्री
महादेव बाहिर देखि आ पार भित्र जानला गदा ते समूर्तिले जान दि य न र श्री महादेव ले ते समूर्ति
सग पुत्र गरि को धले शिर क्ष द न गरि दि या र भित्र जा दा पार्वती ले दार मा को व सा को धि यो भ नि सो
धि न र श्री महादेव ले ते स्को त शिर छे द न गरि दि आ ज्ञा भ नि क त्या पार्वती ले सो तामे से पुत्र हो कि
न शिर छे द न गरि आ यो भ नि अ ति क रु गा गरि पुत्र भा व ले शो क ग रा ला गि न ॥ सो दे वि श्री म
हादेव ले ॥ ले पार्वती मै ले चाल पा य न र पो ते सो ग मा अ व जि या इ दि कु शो क न ग र भ नि तु ज्ञा रा
आ ज्ञा ग रा ला इ हा कि ॥ ले ग रा हो च तु दि ग मा जा इ जो फे ला पा छो ते स्को शिर छे द न ग रि त्या उ
भ नि आ रु उ च न्द्र वा रा सा पि प ठा या ग रा रु रु ले रु व स भ नि च तु दि ग मा ले दे ग या धे रे वे र प छि
म ता रु ति फे ला पा या र श्री महादेव का आ ज्ञा ले ग रा रु रु ले च न्द्र वा रा प्र हा र ग मा रु ति के धि

॥ ६९ ॥

प्री मा ला गि शि र छे द न भयो सो कान्ति क सो भ न्या शे तो पर्व त ज सो अ ति उ च्चा भ या को य सा हा
नि को शि र ल गि श्री म रु दे व का मु र्खा जि ग वि दि या हा मि ले ये हि पा भू भ नि वि ति ग मा र श्री
म रु दे व ले न्नि मा जो रि जि या इ दि या ते म न्नि ले ग रा श ना उ भै पा र्व ती का पु त्र भै र खा ॥ ता
हा यान्त श्री म रु दे व ले पा र्व ती सि त मा त्रै भु लि भि त्रै रु न ला गार इ न्दु ले अ ग्नि ला इ दु कि ॥ हे
अ ग्नि श्री म रु दे व भ न्या पा र्व ती सि त मा त्रै भु लि भि त्रै मा त्र रु न ला गार वि ना म रु दे व ले यो व
हा रा र स मा र क सो ग रि र हा हा ला य स र्ध ले ति मि जा इ श्री म रु दे व ला इ नि का सि ला उ मा का
म ग र य ति इ न्दु ले आ जा ग या प छि अ ग्नि ले रु व स भ नि के ला स प र्व त वि वे ग या ॥ भि त्र जान
ला ग्दु हार पा ल ले जा न दि य न न रु वा उ स्वरू प भै ता ल ला उ न्या उ ला दे धि भि त्र ग या फे रि भि त्र
के रु प भै श्री म रु दे व पा र्व ती रु कान्त ग रि र हा का ठा उ मा ग या र ते स्ना त रु सि त ग या का अ ग्नि ला

॥ स्व. नी. ॥

॥ ६२ ॥

इदेषि श्रीमहादेवको धर्मभस्मगर्णीलागारुपावतीले ॥ हेस्वामिभिक्षामाग्न आयाकाभिक्षुकला
इनास्त्रुहेनमजानिकनआपो. केहिदि नुरजावसभनिन. यतिपावतीलेभन्याकावचनमुनि
श्रीमहादेवलेलातमाआकुवीर्यलि. लाभनिदिपा. अग्निले. त्योवीर्य पाडमुखमाकालिनिर्लिवा
हिरआया. श्रीमहादेवकावीर्यनिलनालेअग्निलाइगर्भरस्योर. अग्निले. योअनार्थभयोभ
निवऊतेडगाइअवकसोगरुभनिगंगाकातीरमाजाइ. क्रमवनमाउकैलिआया ॥ त्योवीर्यआ
गोवल्हाऊवलिरहाकोथियोतेस्तासमयमासप्तकषिकात्तिरुरुगंगा. स्नानगर्गाजादादेव्या
रुकक्षेआगोवालिंगयछतापनजाउभन्यारु. रुकालेअकालेवाल्हाकोआगोतापनुहेनभनि
परकिंगइन्नुछवटिलेमात्रआगोतापिघरगइन्नु ॥ तिआगोतामालेछवटिक्रुषिपत्तिलाइग
र्भभयोक्रुषिरु. रुलेचालपायारु. तिमिरुहलाइ. कसोगरिगर्भभयोभनिमुध्यायाक्रुषिप

॥ ६३ ॥

त्रिरु रु ले के हि उ न ग ग री स के न न त व रु धि रु रु क्रो ध भै श्रा प दि पा रु धि प त्रि रु रु ले गं गा मा
जा रु त्पा वि र्य गं गा मा उ के लि आ पा र आ का श मा जा इ ष रु ता ग भै र खा ॥ ते सै वि र्य दे वि घ र व रु
कु मार उ त्प ति भै गं गा का उ त्र ॥ भै र खा रु क दि न श्री म हा दे व ले ग री श कु मार ला इ श कि ॥ हे ग री
श कु मार ति मि तु वै ले जा इ सु मे रु प रि क्र म ग रि आ उ जो अ पि हो ला ते श्रा इ व र प सा द दि
उ ला भ न्ना र य ति श्री म हा दे व का श जा सु नि कु मार ले रु व स भ नि त का ले उ ठि म प र मा स
वा र भै स मे रु प रि क्र म ग री भ नि ग या ॥ कु मार ग या को दे वि ग ने स अ व क सो ग रु भ नि चि त्त
आ क ल ग रि आ क रु रु न रु रु च्छा रु उ ग या चि त्त ले अ क ल भ या का ग री श ला रु रु च्छा ले द
यो र ॥ हे वि ना य क का न ले सा भ या का छे भ नि सो ध्या रु ग री श ले सु मे रु प रि क्र म ग रि आ उ भ नि श्री
म हा दे व ले आ श ग या को सु मे रु प रि क्र म ग रि आ उ भ नि कु मार ग या को ह त्त त क ह्या त्त ते सो

॥सू.ने॥

॥८३॥

मयसोपे दडु लोसु इभारि हिरुन सक्ति न क सो गुरु भन्यार यति ग गोश का वचन सु नि कुचु न्द्रो
भंछ ॥ हे ग गोश ति मि ला इ ज्ञान म दि कु सु न ॥ श्री म हा दे व पा र्व ती गं गा ती न ज ना व स्पा मा जा
उ र सु मे रु भ न्या का ति नै ऊ न ति मि ला इ व र प्र सा द लो ला भ नि कु चु न्द्रा ले सि का या य ति कु चु न्द्रा
ले भ न्या को सु नि ग गो श ले भ लो भ नि स भ नि श्री म हा दे व पा र्व ती गं गा ती न ज ना व स्पा का ठा
उ मा ग इ अं ज लि वा धि ॥ हे पि ता मा ता मे श सु मे रु प ति ति मि अ सु मे रु प ति ति मि भ नि ति न
फे रा प रि क्त म ग रि प्र णा म ग या त व श्री म हा दे व पु सि भै ॥ हे ग गो श तै ध न्य र हि छ स प र
प्र सा द ले स्व र्ग म सै पा ता ल ती नै ला क मा क सै ले के रि का म ग या प ति पे हे ते रो पू जा ग उं ॥
ते रो पू जा न ग रि ग या को स क ल का र्य स वै अ सि इ रु व स ते रो पू जा ग रि ग या को स क
ल का म का र्य सि इ रु व स भ नि व र दा न दि या ॥ सु मे रु प रि क्त म ग गो ग या का कु मा र आ

॥८३॥

॥ १ ॥ इति श्री गंगे नमः गंगालेश्वरी महादेव देव उभयनिर् ॥ हे इश्वर गंगो जाला इव वरदान भयो मेरा
पुत्र कुमार कान आयेन नयति गंगाले भन्याका वचन सु नि श्री महादेव आ जगद्वि न ॥ हे गंगेश्वरी
स्वस्थानि परमेश्वरी को व्रत गरत वतेरा पुत्र आ इति श्री महादेव ले आ जगत्पाप हर्त्रि
गाले हवस भनि पौष अक्षर पूर्णमासा कादि देवि हात गोडा कान इ कारि हान गरि भुदि भै एक भ
करहि एक चित्त गरि मेरा पुत्र कुमार चाहे आ इति श्री महादेव ले आ जगत्पाप हर्त्रि
पूजा गरी ला गि नमै हादी न भयोर मा घठक पूर्णमासा को दिन मा अष्टोत्तरसहस्र १०८ रीति अ
ष्टोत्तरसहस्र १०८ अक्षता अष्टोत्तरसहस्र वेलि पुष्प १०८ अष्टोत्तरसहस्र जगत्पाप हर्त्रि १०८ अष्टो
त्तरसहस्र पान् १०८ अष्टोत्तरसहस्र कुङ्कुमा स्पर्श १०८ अष्टोत्तरसहस्र जात २ का फूल १०८ धू
प दीप नैवेद्य संपूर्ण उपचार तयार गरि आ सिमी उँकार ले वि स्वस्थानि परमेश्वरी को क

॥ स्व. नी. ॥

॥ ८० ॥

जागर्गलागिन्. सं. पू. र्गा. र्जा. गरि. सकि. अ. र्घ. दि. स्त. ति. गरि. प्र. सा. द. रि. क. न. ला. ग. दा. स्व. स्या. नि. प. र. मे.
श्व. री. का. व. त. का. प्र. भा. व. ले. कु. म. र. आ. इ. उ. ग्गा. त. व. गंगा. ले. ध. मे. २. स्व. स्या. नि. प. र. मे. श्व. री. भ. नि. आ. म्मा.
उ. त्र. कु. म. र. ला. इ. प्र. सा. द. आ. ति. घ. दि. इ. न्. ॥ कु. म. र. ले. श्री. म. हा. दे. व. हे. उ. जा. इ. सा. र्ण. ग. प्र. शा. म. गरि. ॥
हे. पि. ता. म. ला. इ. प्र. नि. व. र. दा. न. दे. उ. भ. मा. य. ति. कु. म. र. का. व. च. न. सु. नि. श्री. म. हा. दे. व. के. ज्व. र्ग. म. र्त्त. पा.
ता. ला. ति. ने. लो. क. मा. क. मे. ले. के. हि. का. र्थ. का. म. ग. दा. ते. रा. प्र. जा. ग. मा. सि. धि. रु. व. स. ते. रा. प्र. जा. न. ग. मा. अ.
सि. धि. रु. व. स. भ. नि. व. र. दा. न. दि. या. ॥ ता. हा. प्रो. त. ता. र. का. सु. र. दे. त. ले. दु. र. व. दि. या. का. दे. व. ता. का. रा. जा. इ.
दु. ले. ति. ति. स्को. टि. दे. व. ता. ला. इ. डा. कि. ॥ हे. दे. व. ता. हो. पा. पि. रु. ता. र. का. सु. र. दे. त. ले. अ. म. रा. व. ति. लि. रु. मि.
ला. इ. दु. र. व. दि. या. को. धे. रै. का. ल. भ. यो. ते. स्को. सं. हा. र. गरि. अ. म. रा. व. ति. लि. भ्यु. श्री. म. हा. दे. व. ला. इ. ग. गो. श.
कु. म. र. उ. इ. उ. त्र. भ. या. ति. ने. ले. हा. म्मा. श. उ. भ. या. को. ता. र. का. सु. र. दे. त. को. ना. म. गरि. दि. न. न्. श्री. म. हा. दे.

॥ ८० ॥

वहे उजाड विंति गरुभ निति ति स्कोटि देवता समेत भै श्री महादेव वहे उ गया ॥ हे सा नि पा वि ह ता र
का मु र दै स ले अ म रा व ति लि हा मि ला इ दु ख दि या को धे रै का ल भ ये अ व ते स्को सं हा र ग रि दे व ता
को उ द्वा र ग रु रु व स भ नि विं ति ग या ॥ य ति इ न्द्रा दि दे व ता का व च न सु नि श्री महादेव आ ज्ञा ग छ
न ॥ हे दे वे न्द्र ता र का मु र दै स ला इ मै ले मा री ऊ दै न मे रा उ त्र कु मा र ले मा रि दे ला ॥ सै र गी दे व
ता य श ग न्ध र्वा कि प्र र ले कु मा र ला इ र धि तु ला इ उ कु ग रा जा उ य ति श्री महादेव का व च न सु
नि इ न्द्र ले रु व स भ नि व ला वि ह्य प्र न्द ति सै र गी दे व ता य श ग न्ध र्वा कि प्र र भू त प त पि शा च
प म ध ग रा स मे न भै कु मा र ला इ र धि तु ला इ ता र का मु र दै स सि त उ कु ग रा जा न पि ना क ध रु प्र
स्फा न ग या ग रा स ला इ भ वि स्मा त व ग रा श ले आ म्ब वा रु न कु उ न्द्रा छे उ भ न्या हे र २ म ला इ व र
दा न दि या को आ जै अ न्ये धा ग या य ति ग रा श ले आ ज्ञा ग या प छि कु उ न्द्रा ले ॥ हे ग रा श ना थ अ

॥ स्व. गी. ॥
॥ ८५ ॥

मथागमाको हो इ नतिमिला इ भन्त्र विस्म मजा इ ममजा इ आउ कु भनि प्रथान गमा का पि ना क धनु
को ता दो का दि आ पो तो दे प्या र इ न्दा दि दे व ता ले वि घ्न भयो यो प्र स्या न भ य न भ नि भ न्न ला ग्या त
व श्री म हा दे व आ जा ग र्छ न वि घ्न भ या को हो इ न ग गो श ला इ भ वि स्मै ग रो श ला इ प नि ले जा
उ प ति श्री म हा दे व ले आ जा ग मा प छि ग गो श स मे त भै यु इ ग रा भ म रा व ति वि षे ग या दे व ता
को र दे स को प र स्वर यु इ भ यो तार का सुर दे स ले कु मा र को र थ घ चे टि स क जो ज न प छि रु दा यो
सो दे षि कु मा र को ध भै तार का सुर दे स को र थ घ चे टि चार जो ज न रु दा यो प छि तार का सुर दे
स को ध भै र व ड्ढ प्र हा र ग मा कु मा र ले आ ऊ मा पि ख ड्ढ प्र हा र ग मा को दे षि च न्द्र वा रा का न स म्म र्ख
चि तार का सुर दे स को पि चो ता कि प्र हा र ग मा च न्द्र वा रा ग यो र दि न का सूर्य न अ स्ता इ रा त का
ता रा न उ दा इ तार का सुर दे स को शि र छे द न ग मा ॥ सो दे वि श्री म हा दे व ले चा डे जा इ तार का

॥ ८५ ॥

सुरदैत्यकोटि रभूमि मापराज पाइ विचै मासमातिलिया गेइ भूमि मापये न व सं प्रसी देवताय
गभ्वर्क किन्नर भूत प्रेत पिशाच प्रमथ गणा ले धन २ कुमार भानिको लोला शब्द गमा ॥ सो देखितार
का सुरदैत्य का सेना दशदिशा भाणा तारका सुरदैत्य मा पछि श्री मरु देव ले वध भ माथि सवार
भै इन्द्रादि देवता यश गभ्वर्क किन्नर भूत प्रेत पिशाच प्रमथ गणा समेत भै कुमार लाइ अघिलाइ के
लाश पर्वत मागया ॥ इन्द्र विंति गर्क ॥ रुजगदीश्वर तिमिले कृपा गणी ले शत्रु संहार गारि
अमरावति कृत लिप्ता अवति मिले आजादिया अमरावति जा दाऊ ॥ यति इन्द्र का वचन सुनि
श्री मरु देव ले तेरा राज अटल रको समानि विदादिया इन्द्र ले श्री मरु देव लाइ साहो गप्र गाम
गरि तेति स्कोटि देवता समेत भै अमरावति गै आनन्द ले राज गरि रत्या ॥ इति स्कंद पुराणो मा
पमा लासे कुमार अगस्त्य सभा दे तारका सुरदैत्य वध इन्द्रादि देवता अरावति प्रवेश नाम ॥

॥ स्वनी ॥
॥ ८६ ॥

श्री स्वानि परमेश्वरी कथा रुका दशो ध्याय ॥ ११ ॥ तारा प्रान्त के अगस्त्य मुनि अश्वत्थामा कृषि ले पा
र्वती का आज्ञा ले ससपाताल कान्दल रसातल पाताल माउगा कसो पाताल भन्या सूर्य का जसो
जाज्वल्य प्रान्त तेज भया को ना नारत्न ले जडा उग रि वना या का मु वर्णा का हरी मा अ संख्य संपति भ
या का शेष नाग अनन्त नाग वासुकि नाग तक्षक नाग कर्कट नाग पृश्न नाग कुलिक नाग व
रुणा नाग यस्ताना गरुड वस्त्रा का धिया ॥ नागिनी रु रूप निहिता मौ ति मा शि क इत्यादि ना नारत्न
वस्त्र अलंकार पै हि उच्चा हि उग म्रामै र ह्या का यस्ताना उ रि मा उ गि शेष नाग का घर जाइ ॥ हे शेष ना
ग पार्वती कि आज्ञा ले श्री स्वानि परमेश्वरी को व्रत गाग उन जो इखि छन जो दरिद्रि छन
जो पापि छन उनका उकार गरी आज्ञा उस्ता को हि छन कि भनि सु ध्याया ॥ यति अश्वत्थामा कृषि
का वचन सुनि शेष नाग ले ॥ हे अश्वत्थामा कृषि आरुता उस्ता को हि छे नन ते सवन कानजी

॥ ८६ ॥

सुरदेवको सिरभूमिमाघर्षनपाईबिचै मासमागिलियागेभने भूमिमापसोतवसम्पूर्णदेवताप्रथमधर्षकिन्नरभु
तप्रेतमिधासप्रथमगणले धन्य २ कुमारभनि कोहोला सबदगे ॥ मोदेवितारकासुरदेवकासेनइसदिसाभाग्याः
तारकासुरदेवाममाघर्षीमाहादेवले वृषभमाघिसन्नारभे इन्द्रदिदेवताप्रदेगधर्षकिन्नरभुतप्रेतप्रथमगण
समितभे कुमारलाई अघिलाईकोलास पर्वतमागया ॥ इन्द्रबिजिगदछन् ॥ हेजगदिभोरतिमिते कृपागर्भले
सनुसंहारगरिअमरवर्तिहृतलिज्जुः अथतिमिते आग्यादिआ अमरवर्तिगायुम् ॥ प्रतिइद्रकावचनसुनिनी
माहादेवलेतेरापाअटलरहोस्भनि बिदादिआ ॥ इद्रलेगीमाहादेवलाईसाद्यंगप्रणामगरितेतिस्कोटिदेवतासमे
तभेअमरवर्तिगीमाहाभानंदने एव्यगरिरह्या ॥ इतिस्कंदपुराणेमाघमाहात्म्येकुमारउगसासम्पादेतारकासुर
देवमाघइन्द्रदिदेवताअमरवर्तिइवेतनामभीसोस्थानिपरमेश्वरकाभाइकाद्वयोभाधन्यः ॥ १७ ॥ ताहांग्या
तहेअगस्त्यामुनिप्रकदिनफेरिसिबगिलाईवनविहागर्नाकोमनसुवाहुदभृगस्यभेकसेलेआहानपांन्यागरिहो

॥ ५८ ॥

वन्द्यो को गौमृगमृगिनि सगभुति परमभानंदने रहे ॥ माहादेव तारिने देवि पार्वती लोभने कहार्थ मागे धो जि
न कहि पाई न सकि न नर हार मानि इमा हो देव ले भुवि पानि मलाई यस्तै गरि दुख दिस ॥ भव का लफेरि जानु भो
भनि ध्यान दिखी ले विचार गरि हरि नर मृग रूप भै वन विहार गरि रहे को थाहा पाई नर पार्वति पनि बाग मति का कि
नारामा आई माहा क वले तमस्या गरि बसि रहि नर ॥ तब माहा देव पार्वति दुबै जाना आई ने देवि प्रमा विस्तु प्रभिति देव
ताहू ले जाहा ताहा बोधि हिजा ॥ काहि पाई न सके न नर हार मानि फकि आई द बाग मति का कि नाराम तय स्याग
रि बसि रहे कि पार्वति तारिने देवि देवता हू ले प्रनाम गरि वीति गर्न लागे ॥ हे जग माता श्री पार्वति श्री माहा देव नरु द ले सं
सार सुन्या भया प्रस्तौ भयो तस अर्थ हामि माधि करु नाराधि ॥ माहा देव क ता जानु भयो वलाई दिनु ह वसु फेरि तयानि
पनि कि न यस्ता ठाई माय कने बसि रहनु भयो सबै वृत्तात भाजा गर्नु ह वसु ॥ प्रति देवता हू ले भने को सुनि पार्वति
भाग्या गर्द दिस ॥ हे देवता हो माहा देव माहा आई नु भया को हुना ले ई नै को भार धना गरि तयस्या गरि बस्या कि हुं

॥ ५८ ॥

हलेषमातकवनकावैरित्यकोणामाठुलोतलाउदहाहिमाहोदेवमृगरूपभेवनकिडागरिवस्येकादरःकस्तोमृग
भनेहूनकोस्तोवर्नतिनभाषाप्रकसिहभयाकासृगकाकैगमासवेभन्दाठुलोमृगभेवस्याकादर॥ तिमि
लरुउहिगईहेरेतबगीमाहादेवकोदरनेपाईलाप्रतिपार्थतिकोआज्ञासुनिदेवताहस्तुताहागेहेईकाहिपाईन
सकेननर७आबिस्तुइन्दुतिनज्ञानालेभनेक२अस्तुतिगारिवेजनलागेप्रस्तेबेलाभातावैमृगकाकैगदेवलावै
कैगगारिवैरिगिः॥ विचमाभामनरासरे३भाषा५सिगसुवर्नस्तोवर्नभयाकोसवेभन्दाठुलोमृगदेवैरव
होसोभाप्रमानभयकोकस्तोभन्यासौगमातराजनकाविचमापुराचन्द्रवस्तागोसोभादेविन्दुस्तोमृगहस्तका
विचमा॥ हृदमृगवस्तासोभादेविमोप्रस्तोमृगटोहोपाईतिनज्ञानालेदेविआहागेकौगीरे॥ हेईसौरधरेदिन
भयोकेलाससुन्धादेकरुनामप्रहामि७आबिस्तुइन्दुप्रतितिनज्ञानायाविकरुनाशमिदरतनदिनरुवस्त
भानिभनेक२अस्तुतिगारिमृगरूपगीमाहादेवदेइगय॥ प्रस्तातरुसगभायाकादेवताहस्तगाईदेविहृदमृग

ॐ ह्रस्वः कतभागे को देवि विष्णु आग्या गर्ददन् हे देवता हे देव अस्तुति गरि माहा देव लाई चेतन्या हुने भयन भवहा
 मिले तिने गाना ले धेरै दि समो ५ भन्ने लो भनि तिने गाना तिने तिरे ० ति धेरै दि गी रूद्र मिर्ग का सिद्ध ० ना के द मा वि
 स्नु ले समाये फेरि चतुर्मुख भूला ले मा मा समाये फेरि देव का राजा इन्द्र ले द्रुमा मास माये समा ५ ने बिति के मृग
 भना ध्यान भयो सिद्ध प्राप्ति तिने गाना का हाते मा रूद्र तिने गाना का बल हो समा मा को हुना हो सिद्ध तिने द्रुमा भेति
 ने गाना का हात मा प्रकृ प्रकृ का पयो प्रसो भया को देवि हा मिह रू ले सारे भयरा ध गजौ भन ध भयो भव का सो गरु भ
 नि तिने गाना ताहा बलि हे देवो भयरा ध हा मि लाई देमा रावनु होला हे देव भन गन भनि भनै क भनै क अस्तुति गरि
 ह्रा विष्णु इन्द्र ले अस्तुति गरि माहा देव प्रसन्न भौ गीति सरु म दूर सन् दिमा तब देवता हरु धृति भै सा धु ग पुना म गै तब
 माहा देव आग्या गर्ददन् हे देवता हो ति मिह रू का अस्तुति देवि प्रसन्न भौ भजा वर दन माग मति माहा देव का आग्या
 सु नि भूला विष्णु इन्द्र ले हे देवो रा मा नि को ५ ध्यान हा मिह रू ले के हो न भुलाम सदा सदा हा म र हिर द मा र हो स
 दा

पतिदेवताहस्ते भनै को सुनि माहादेवते तथास्तु भनि वर्धन दिपा ॥ फेरि देवता हस्ते हेई सोर तपात्रिको सिद्ध
काहा राख्यो हो ॥ तिन दुका तुल्या पाको होमये अपराध क्षेमा गरि वक्सनु हनसु भनि बिंति गरे ॥ तब माहादे
व आग्या गर्दन् ॥ ये मैरे सिद्ध दुका भयाको तिमि हेरु लाई केहि अपराध लागे देन संदेह नगरि द्रुका हात को
ई लोक मा प्रह्ला का हात को मर्त्य मन्त्र इलने पाल मध्य गोकर्ण मा विस्तु का हात को पताल मा लागि स्थापना
गनु भनि आज्ञा हुय प्रह्ला विस्तु ईद्र विद्य भै महादेव कन पुनाम गरि सोहि मायिक तिनै लोक मा धपना
गरेर आयना १ लोक मा गय ॥ देवता गप्पा पछि माहादेवते पार्वति नेरै गै पार्वति लाई काष मा लिरि ताहा देवि
भना ध्यान भै केलास पर्वत मा गई नन्दि भुंशि चो सहि जोगिनि भूत प्रेत पिचास प्रथम गन समेत भै प
रम भानन्द ले रहे ॥ हे भगवत्या मुनि ताहा उपांत नेरि त्य कोना लंका देवि दस शिब रावन नित्य गोकर्ण माः
आई श्री माहादेव का चरन मा दुंदु ब्रत गरि नाचि गाई बजाई तपस्या गरि जान्छ्या मस्तौ गरि केहि काल बित्या

॥ स्वनि ॥

॥ ६८ ॥

परिप्रकाशिन माहोदेवते विषभाडु धतर धाई भचेष्टा हेकावेला माएवन भाई इंदु वर गरिनाचिम
दंगावजाई गाईन लागए श्री भोलानाथ प्रसन्न भैहे रावन के मागए सु माग अनि आज्ञा भयो
॥ रावन ले के मागों तपार्का कया ले सब थोक मसगद यति रावन का वचन सुनि प्रक थोक मा
गि सुष पाउ देन सु लो माग अनि आज्ञा भयो तब रावन का मन माइव मै ले के मागए दूति सक
ल देन ले मुकुत भया कि माहोदेव का कोष मावसे कि पारवति न मागु अनि श्री माहोदेव देई विनिगरे ॥ हे ईश्वर
अरु थोक केहि मलाई चाहिं देन पौरि पार्वति मलाई वक्सन हवस अनि विनति गुरी ली लो जा अनि ॥ पार्वति लाई दिसा
एवन ले जाग माता पार्वति लाई पिठिई माथे कि महा देव देई विद भई गयो ॥ पौरि सब वे कुंठ नाथ विस्तु ली चाल पा
पर अनर्थ हुन लाग्यो अनितकाल वायु भन्द चडिई भाई आपुना माया ले दोषि मोहनि सोरुप भै आग पा गरी भये हे मा
हा पुरषतिमि कोही कहा बाट भाप्रौ त्यो बोकेर तपाय कि ह्वास्ती को हुन किन बोकि तपायो अनि सो च्यार ॥ रावन ले

॥ ६८ ॥

भन्यो हे सुन्दर लंका के राजा रावन भने को महम मैले महादेव को तपस्मा गर्ह कुसि भेउ नकि अस्वी पार्वति मलाई दि
पठाये उनै पार्वति हुन नलाई वो कि लंका जान आपा को हुम भन्यो पति रावन का बचन सुनि ॥ मोहि निरुप भन दि
न हे रावन ति क्यो पार्वति हुन न तिमिले वो कि मासी के तिमि लाई लाज लागै न किन भने ॥ माहादेव का माया लोचना सा
कि स्वास्नी तिमि जस्ता महा विर राजा ले वो के रहि दे को अहल ले देवे भने के मन नन ॥ तिमि पार्वति होई नन तिमि लाई
माहादेव ले दूकाये छन ॥ पार्वति मागि ले जाना को तिमोई भये पार्वति पाईने ठाई समै तिमि लाई म भन्यो सुन
माहादेव ले आसन गरि राखे का वाघ का छला भिच सा च ये की पारवता लुकाई राखे का छन सोहि मागि ले जाउ
भनि भने क तरह सग मोहि निरुप ले कुरा गर्द रावन ले यत् पाई पार्वति लाई ताहि छे वि आफु फरि के लास पार्वति मग
प्रा ॥ तब विसर ले गी पार्वति लाई वई कुंठ मालगि भने क तरह सग पुजा गरि राखे ताहा ड परा न ॥ माहादेव कु चेष्टा भेरे
का धि पाते तने मारावन फेरि ताहा गे भिनुति गेरे हे और तिमिले मलाई छलि पार्वति भनि माया ले स्वास्नी यो दिवनाई

मलाई दिखे र मैले थाहान पाई आठमा कपलि भाषा दिव्या भषा तिमिले भासन गरि राष्ट्रा कि बाध का छला भिन
 कि पावति देउ घति रावन को वचन सुनि माहो देव ले ध्यान दूषि ले विचार गरि दुई पावति ॥ विस्त्रु ले लग्ये मन्ये
 थाहा पाई मायाले आर्कि पडि टि स्वास्नी सुष्टि गरि भासन गरि राष्ट्र का बाध का छला भिन बाट निकालि लोलेन भनिरा
 ननलाई दिपा रावन भति बुनि भै महो देव ले माया गरि बना पाकि स्वास्नी लार्कि घमा बोकि लंका गम तह पदि श्रीवी
 स्त्रु ले पावति लाई लिई माहो देव देउ पुराई विस्त्रु बेकुठ मागना ॥ हु अगस्त मुनि तह उमरा न पक्र दिन माहो देव ले पा
 वति सग सल ला गरि मान सरो वर तलाउ मा राज हुत भै जला श्री ॥ ५५ ॥ रा गरि बेला न लागे का थिप्पा ॥ तेसो मा अति पुरि ना
 मन गर मावसे का जाले धर थिप्पा तेसु कि भस्वी विंदा महा पति प्रता थिप्प दुई अस्वी पुरु वठहा गरि रह रा जाले ध
 र सारे बुनि भषा तव विंदा भन् दिन् हे स्वा मि किन हासन भसो भन्दा हे अस्वी अरु थोक ले हासे को होई न त जे साति राम
 स्वास्नी अरु कि सकि होलि भन्ने मन मा लाग्यु हासे को हुम भन्दा वृन्दा भन् दिन् हे स्वा मि भ के राम रि दु ॥ महो देव

किं जस्यै पार्वतिदेवे कसो गरीला भन्दा जालंधर भन्दा देह अस्वी ॥ यो कुरा सा चै हो कि ते सो भया पार्वति लाई छल गन जालंधर भनि
वृन्द देखे भनि मायाले माहो देव को हो रूप भई केला स पर्वत मा जालंधर भयो ॥ माहो देव स जालंधर आमा को देखि पार्वति लेह
र पताई माहो देव आमा भनि हात मा सन को कमन इले लि गोदा धुना कन ठो काम भाई न पार्वति ठो कामा आमा को देखे न
बिति के माहो देव को भेष गरि गदा को जालंधर मुद्द भै भूमि मा गिरो तब गगत माता पार्वता ले ध्यान देखि ले विचार गर्दा
जालंधर ले छल गन माहो देव रूप भै आकु देखे आमा को आहा पाई ॥ द्वार पाले देखे आमा गरि न हि नन्दे भृंगि नाहा के
हि आमा भन्या भिन्न मान पठाई न भनि कसै ले न देखे न्या ठाउँ मा गे लुकि ओध मै विस्तु को आराधना गरि रहि न पार्वति
ओध भै आरधना गरे को अंतर्यामि भगवान् ओ विस्तु ले आहा पाई संव चक्र गादा पद्म हात मा लिई गङ्गा मा धिसवार भै तत्का
लहावा भन्दा देखे चहो गरि पार्वति देखे दुगि आइया गर्दा भये हे पार्वति मलाई किन आरधना गरे पति विस्तु का वचन सुनि
पार्वति आमा गार्दिन हे वे कुन्ठ नाथ माहो देव भने अहा हुनु हुन् न जाल किर्तु गन मान हो रकार का तलाई मा गे राज हुन

भै आनंद मारहुनु भया कोहर ॥ सो भीतर माया पजालंधर ले मलाई छलन भनि महादेव को रूप धारि आपोर मैले चातन पार्ई
 श्री महादेव आईनु भो भनि हर्ष भै कमंडलु लिई गोड़ा धुवाँन भनि ठो कामा जाद मलाई देवने वितिकै ॥ मुर्छ भई भुमि
 मा गिरे को देख माहादेव भया मलाई देख मुर्छ हुनु पर्देन मो मलाई छल गर्न को पापिष्ठ आपा को होला भनि ध्यान दि
 छि ले विचार गरि हेर गालंधर हो भनि धिनि दुवार पाले लाई अहा कसै लाई भिन्न पठाईनु भनि अहा आईति मिलाई
 आराध्यान गरे कि हुम अब कसो गर्ने हो गर प्रतिगत माता पार्वति का वचन सुनि तेस गालंधर ले त पार्ई लाई दगा गर्न भनि
 माया रूप भै छल गर्न आपा पछि मगै तेस्की अस्वी गूँदा को निस्सं प्र सत्पा दुगाई आई छु सन्देह नग्न नुहाला ॥ अहिले मगई मा
 हादेव लाई धोजि आहा पठाई दिन च्यु भनि पार्वति देखे विदु भै गहुर मा सवार भै सारै बेग सग मान सरोवर तलाई मागई मा
 हादेव राज हस्त का राजा भै मान सरोवर पोषरि मा अनेक हस्त साथ मा ले जल किडा गरि वस्पा का धिये ॥ तेसै बेला मा विस्तु सारै
 बेग सग आपि को देखि हस्त रूप श्री महादेव आज्ञा गर्छन ॥ हे विस्तु प्रस्तो चाहो बेग लोक न भई आयेति मिलाई के दुख परे भ

निकरुनामूर्तिमाहादेवलोआशागरेकोसुनि॥बिस्तुगडुववाटभोर्तिसाखंगप्रनामगरिहेईखोरतपानिअहाआईनुभसा
पदिजालंधरलेतपाईकोभेषधरिपारवतिलाईदुल्लाकन॥कैलासमागसदूरपारवतिलाईदेवनेवितिभैमुर्धमप्र
दूरपारवतिलेमलाईदुलनभनिपापिष्टजालंधरलेमाहादेवकोभेषधरिआपाकोभनिआहापाईतहानवसिकसे
लेनेदेवनेठाईमानुकिमलाईशुक्नुहुदुमगैसबैबिस्तारुद्धिमाहातपानिभषकाठाईमाआपाकोहम॥अवेगैते
रजालंधरकिअस्वीधुंदुकोपतिव्रताधर्मनष्टगराईआईदुभनिबिस्तुलेभनेकोवचनसुनिमाहादेवलेराजहंसको
रुपछाडिआफुनुरुपभईकोधलेआषारतोगरिआज्ञागरेहेबिस्तुईसोभसाभकैलासमागानुदु॥तिमिबुन्याईईगाई
पतिव्रताधर्मगुआईमंदेईआईतेसपापिष्टजालंधरलाईनमारिजिउईदेवनेदेनभनिपापुनानिमोहिआधलेउकतभई
बिस्तुलाईबिदुदिएतहादेविअतर्ध्यानभैकैलासमापारवतिलुकिरहेकाठाईमागसे॥माहादेवआसेकापारवतिलेदे
विपाईधोईहुंडवतगरिहेस्वामिभनिजालंधरआपाकोव्रतान्नकहिनतबमाहादेवआज्ञागई॥हेपारवतितेसजालं

॥ २९ ॥

॥ २९ ॥

धरलाई नमो रिदोने देन ॥ बिसु बृद्ध को सत्माइ गाई नगई रहे छु ॥ ईसा ईने विमि कै सुद गरि मास मला भनि भवनि सँकर
दुबै लोकरा गरि रहे ॥ हे भगस्ता मुनि ॥ ताहा ई परान बिसु जालंधर को भेष गरि अन्न पुरमा जाइ भये ॥ जालंधर सविस्त्र
आमा को दोष धुनलो आमा स्वामि जालंधर आपे अनि ठो कामा आई वाई धुवाई भिच लागि कोहा मारा धिनर वृ
द्ध लो ॥ भन्न लागिन हे स्वामि ता पाई लो पावति लाई छल गर्न जानु भसा को कसो गरि आई न भो ॥ पार्वति म
भन्दा कति किरामूरि हिन्दु सावृ तान् कहु भन्दा ॥ श्री बिसु भाइ गरी दुन्दे बृद्ध पार्वति लाई छल गर्न सकि
ने रहेन चकिन भने पार्वति का घर भिच जान लाग्यो ठो कामा बसे का द्वार पालो लो मलाई देवो मा भुजि हेर कोठा मा
बस को भघोर मूर्ति द्वार पालो देवि इराई फकि आमा भनि धुनो दुई कुरा गरि रह्यो धुनो लो दो जालंधर हेरि ॥ बिसु
जालंधर भे मलाई छल न आमा को हो भनि धिनि भव मै लो के सु कति गनु परो भनि हाई आई कटाई गरि बिसु ला
ई हात मा लिई भन्न लागिन ॥ हे स्वामि म केहि भं दुत पानि मानु हो ला कि भन्दा भेष धारि बिसु लो डो भने पनि मानु लो भ

॥ २९ ॥

नरवाचा गरहितवृन्दले भरथोक होईन मन भाड्याल जाहिरात रुन्हेला भनि विस्तु लाई कोठामा धुनि आ
कुआर्के घर भिन्नो वेसिरहिन ॥ नईले भाईलि भन्दा २ मा ५॥ दिन बित्योर पनि भाईन तव विस्तु गोचिंतागर्न
लागे भव कसो गरुम प्रसे वसिरहम भने कति दिन वसिरहम ॥ ३१ मा हा देव लोके मनन के भनन जाई भने
वाचाले हारि कसरि जाई भनि चिंत नागरी रहे काथिसे ॥ तसो मा विस्तु गमावो सति का दिन भनोर पनि
कजे न भनि ध्यान वृषि ले ३१ मा हा देव लोके विचार गरि होरे पार्थति छेई आशा गरे हे पार्थति वृन्द लाई दलजग
माका विस्तु लाई वृन्दले दलि कोठामा धुनि राखा कोर हे भनि आपुना मायाली १६ वर्ष कोई मेर भपा
को ३॥ अत्यन्त रामरो भिदु क सुधि गरि आशा भयो ॥ हे भिदु कति मि अंत पुर जालंधर का धरमगे भिदु मागि
जालंधर कि नस्वी वृन्दले कोठामा धुनि राखे का विस्तु लाई मागि ल्याई सति मा हा देव को आशा सनि वसर भ
नि भिदु क को भेष धारि जालंधर का घर मा गेई भिदु मागि तव वृन्दले ज्ञा लवाट हरितर अत्यन्त रामो

॥ स्तुति ॥

॥ १२ ॥

जोगिलाईदेविमो जोगिअति समसुरहेदु मसोरामरै जोगिभाडा सम्म मै ले देवे को देन माहमिरा घरमा पनि केले भाये
को देन ॥ तस सार्थन जोगिलाई भिक्षा दिन उद भनि भिक्षा लिहे जोगि के मागना मन्सुवा गरि आये मन
भनि वृन्दा ले भन्दा केहि मागन आमा को दुदिने भमा माग्दु नरिन्दा भमा के माग्दु प्रति जोगिले भन्दा ॥ मै ले दि
नु हुने कुराम सग भमा को डोह के मागे पनि दिनु भनि बाचा गरि नर भिक्षा के अरु थोक होई न तिमिले थु
निराधा को लाई माग्दु सो मरि टाँदै भनि मागे वृन्दा ले मन्मा भन्न लागिनु अरु भोग गह पो जोगिले द
ल गरि बाचा बधाई माग्ने नदिई भनि बाचा ले होरे डोह के भये पनि बाचा लनु दिने भनि आफु ले को ठा नाथु
निराधे का भेष धारि बिस्नु लाई बाहिर त्पाई जोगिलाई दिई पठाई न प्रत्ता तरह सग बिरनु लाई सा धलि जोगि बाहि
र निस्की ताहा देवि भन्न ध्यान मे के लास माग्दु शीमा हो देव वृतांत कहै ताहाई परा वी बिस्नु बाहिर आई मन्मा
धिन्न नागर्न लागे ॥ अब न सो गरम वृन्दा को सत्य गाई न भनि आमा को ई से ले थुनिर बत्त परा मा हो देव ले

॥ १२ ॥

केभनेहनरभनिगहमासपारभेकेलासपर्वतमाशाहभनिबिस्तगहमाचठिजाद्यगहकासबलेपाव
तिदेवमर्धभेरेकाशातंधारमुदधार०पुमि॥केकेसबभनिहेरुबिस्तलेकेलासकोचयगिरिहिदरै
धनपानीतिलारिदलनसकीनेरुनचअभआलनसमधरगार्डभनिजालंधरभाकुनाधरगमिहिगस्ता
मुनिबिस्तु॥३॥भभानिसंवरैदुपुगिपुनामगरिपुकातिरअलगभेअसिहेबिस्तुलेमाहदेवलेदेविभा
शागरेहेबिस्तुधुनरलारिदलनगद्यभेपतिकदिनभसोकेगरिरह्योधुनरकोसतेगाईनसकोकिस
केनोप्रतिमाहदेवकोवचनमुनिबिस्तुवित्तगदन्॥हेसोरतपाजिकाभासालेधुनरलेमलारिदला॥मन
फकुम्भालपहिकोठभाभसिरहनुभनिमलारिवाचागराईधुनरनित्किन्धुनरआईलेभनिबस्ता४रदिनवित्तगमेवाचा
लेहारेकोहुनालेआईननसकितेसेभसेकोधिना॥पदिपठगजोगिकोसाथलगार्दद्विदित्तपारिकेदर्शनगर्नभा
माप्रतिबिस्तुकावचनमुनिमाहदेवलेब्रह्माविस्तुप्रभृतितीतिसकोटिदेवताप्रथेगन्धर्वमनरदिभनरदि

॥ स्तुति ॥

॥ २३ ॥

प्रथम गन भुत प्रेत समेत जन्मा गरी आशा भयो हे देवता हो पापि ब्रजालंधर लाई तिमि हरु ठो मारि आई भनि आशा भयो र
सकल देवता लो हवस्मनि जानत प्रारभ प्रारभ ॥ तब माहादेव लो नारद लाई डाकि हे नारद तिमि गरि जालंधर सग भन किति
मिस गइ द गन देवता हरु आई न लागे त प्रार हो भनि भनि प्रति माहादेव को आशा सुनि ॥ नारद रिषिले हवस्मनि जालंधर
को धर जाद भ प्रार ॥ हे भगवत्पा मनि जालंधर को लास बार कर्क भक्ता धा गयो वृन्द ले आपना स्वामि जालंधर आपा को
देखि गोडा धुना भिच लगि भन्न लागिन ॥ हे स्वामि पार्वी तिलाई छुलान जानु भया को कसो भयो भन जालंधर भन छन
हे प्रिय गो कुरा कहन दु सुन ॥ म माहा नारद को लास पर्वत माग भे माहादेव को भेष गरि जाद पार्वी तिले देखि नर सुन को
कमन बुलु लि मेरा गोडा धुन ठोका मा आई न मैले देख्याराम र माते त पार्वी तिले देखि भन मो पृथ्वी मा हुनु दुर्लभ दुर्लभ पार्वी त
को मुख देखि न विनिके मलाई होर भयन मुई भई भे मा गिरे को धिजा ॥ पछि ये घा भे ठि हि र पार्वी तिले कता गइ न के
हि थाहा पाई न र कर्क भक्ता भनि जालंधर को वचन सुनि वृन्द भन छन हे स्वामि तलाई जानु भया पछि विस्तृत लेत

॥ २३ ॥

पारिको भेषधारि महार्द्धल गर्न भनि आया का धिय मैले धिनि विस्तु लाई कोठामा धुनि धेरै दिन सम्परा घ्या कि धिजा
पदि अति राम्रो भयुर्वन भजोगि आई मागद विस्तु लाई दिपठामा प्रतिवन्द को वचन सुनि जालंधर भप्यन्त को
ध भैहै वन्द तेसो भये पार्वति लाई छल नगरि दूने देन फेरि जान्छु भनि जालंधर बाहिर निस्कदा ॥ श्रीमहादेव
लेपठामा नारद रिषि पनि लाहा पुगे जालंधर लग भेट भयो नारद लेहे जालंधर का हा जान लाग्यो भनि सोध्यार जा
लंधर ले भिक्षा माग्न जान्छु भनि भने तव नारद रिषि भन्दछु जालंधर ति मिले किन तेसो भमि ध्या कुरा गम्यो
तिमि जान लागे को मैले थाहा पाया पार्वति लाई छल गर्न भनि जान लागे को हो ॥ तिमि सग जुद गर्न बुझा विस्तु प्रभृति
तकल देवता आर्ति तयार भै मलाई धवर दुम्मा ईन पठाया को हो तिमि भक्त जान पदि न लागे आमुन जो चाहिने
सजामु तयार गर भन्द जालंधर तेसो भय कर्क न्छु भनि कर्क भयो ॥ आमुना धरमा भस्वी छई नारद आई भ
ने को सबै कुरा वृता त कहि अब मलाई गर्न जान्छु धरमा सम्भार गरेर भनि वन्द छई विदा भई हातमा वि

॥ स्त्रनि ॥

॥ ७४ ॥

सुललिई आफना सिना नममा गदि देवता सग उधगर्न भनि के लास परवत तर्फ गयो ॥ नारद ले जालंधर लाई ववर
दि फर्कि महो देव देई पुगि इ नवर गरि जालंधर सग भमा को कुरा बुतांत केहे ॥ नारद का वचन सु निब्रह्मा बिस्नु
प्रभृति सकल देवता उधगर्न जाई भनि बिरादि प्राप्ति श्री माहो देव का आज्ञा सुनि सकल देवता हर लोहवा
स भनि अनैक तरह का बाजा बजाई सिंह नाद ले गर्जि के लास देवि आपा बाठा मा दुबै तारफ का सेना भेदि भयो
रजर भयो ॥ देवता हिलो को हल सब गरि करारि अधिसरि अनैक ससर ॥ सर प्रहार गरे धुमा लेत मो गुन प्रहार
गरे ॥ देवता ले प्रहार गरे को ससु ले जालंधर कन केहि गर्न सकेन न प्रकातिर लाग न गयो ॥ सस्ती आफु आफु
ले प्रहार गरे को सहसु ले अस सुले केहि गर्न न सक्यो को देवि ब्रह्मादि देवता हर दिक् मे भुक् ना तत्तज भ
स्व भिक् भुप लागि रहे तबो कुन् नो धा बिस्नु माहा को ध भई पाच जन न्या है व ॥ जाई को मो दिक गद घुमा
ई प्रहार गरे तो गद ले पनि जालंधर लाई दुई दोसन ॥ किरि ईन्द्र को ध भई ॥ ग्रहात मालि प्रहार गरे वज्र ले पनि केहि

॥ ७४ ॥

गर्नसकेन जालंधरलेनेदरिद्रोठातूनजति को धनि नमानि थुपलागिरह्यो आपुना २ सत्त्वभस्वरावर देवता हस्त
देहदेधेना केहि सिप न चलद ॥ ये कुलना धनारासनले अब पस्तारितले भजन भनि माहादेव देउगई हेई स्वर
जालंधरलाई मानेहामिले सकेनो वेनातमा जिले ॥ दोभो आका को सामर धेनेन तपाईले जानु मयो प्रतिवि
रुका वचन सुनि माहादेव आशा गर्दन् ॥ हिविस्तु जालंधर कि अस्वी वृन्द प्रतिभुता को धर्म ले गरि जालंधरलाई
कतेले माने सकेन तत अर्थ तिमिले विस्तु का मायाले दोपि जालंधर को भेष भे भन पुरमा गर्दछन गरि
हिन्द को पतिभुता धर्म नष्ट गराई मर्गे जालंधरलाई माधु भनि आशा हस्त विस्तु ले वस्तु भनि माहादेव देउ
विद भई जालंधर को भेष लि ॥ आहातमा चीतु लसमाई दारिने हातले भूमसह वजाई विस्तु मायाले दोपि जालंधर को
भारमा पुगे भेष धारि जालंधर आपा को वृन्द ले देवि हस्त पतारि पाउ धुवाई को ठामा लागि आसनमा वसालि वृन्द
विस्तु ति गर्न लागिन् हेस्वामि माहादेव सगुद गर्न जानु भया कसो गरि आई नुभयो भनि सोधि नु जालंधर

॥ सति ॥

॥ २५ ॥

रूपविलस आशा गर्दन हे वृक्ष माहादेव सग उद गर्ध धर्माई माह भनि कर्क आसि कोटु ॥ भो कलागि रीदु धाने भुरे
ले भनि आशा गरे तन वृन्द ले भने कतरु सग भौरा सि व्याज नृत्यार गरि भोजन गरि रात पयो पदि वृन्द को प
ति प्रता धर्म नवु गरि दिसा ॥ राति भिते पदि जालंधर रूप दुरि आ फुलु सार स भार हात मा संव धन गद्य पदम लि द
स न दिसा वि वृन्द को ध भई हे पापि व विलस ति मि लो क मठ गरि मेरो पति प्रता धर्म नवु गरि दिसी भन्द ॥ विलस
आशा गर्दन हे वृन्द जालंधर लारि माहादेव ले हिजे भारि स के भव ते ले बो कुंठ का अधिपति भया को म नारा म न जस्ता
लाई स्वा मि धा मा पदि किन कि भि गि र्छि स हे वृन्द त प्रतित मान दि नर भन्मा भलि वे र मा स म धार पाई लि स
भनि नाना तरु सग विलस ले वृन्द कन वृन्द नि लागे को धि सा ॥ हे भगत्ता मुनि ति मि मुक चित्त भे ल न वा
हा ॥ माहादेव ले विलस लारि विद्य दिई जालंधर सग उद गर्नु भयो माहादेव के र जालंधर को भयोर संग म भयो
वृन्द को पति प्रता धर्म विलस ले हरि स के को हुना ले बल हिन भे माहादेव सित उद गर्नु न त कि जालंधर ॥

॥ २५ ॥

अकास मागै माजा रुधुध गर्न लाग्यो ॥ माहादेव पनि अक्कास मागै रुधुध गरे रुधुध गर्त जालंधर को बल हिन
हुन गयो को देखि माहादेवले अवता वृन्द को सत्ता बिलुले दुगार्ह सके दूर भन्यो धारा पाई आफना
हातमा रूपा को चीतुल तिति नै भावा पाट भागा को ज्वालानिकालि माहा ओध भै चीतुल ले जालंधर का द्य
तिमा भै दे ॥ माहादेव का चीतुल का नेदनाले जालंधर मरि अंतपुर का चौक का बिचमा हुलो अवत गगौ
त्यो जालंधर वसेका अवत वृन्द ले सुनी के को अवत भो भो भनि हेर्न जाय आकाशो मि जालं के देह ममा को
देखि अनेक तरह सग विलाप गर्न लागिन् हे स्वामि प्रता अवस्ता मामलाई प्रकले द्युति पाई काहा जानु भो
पापिष्ट बिलुले दल कपट गर्त पाई को दो अवस्ता भयो तपाई बिना सो प्रान क सगरिरा मुला तपाई जाहाग
प्रो डहि मपनि आई दु भनि के सफि जार्ह बिलु को मुखे हरि भन लागिन् हे पापिष्ट बिलु तिमिले दल गरि
देगु द्युति ता धर्म न वृ गार्ह द्युति मेरो स्वामि को सो अवस्ता भयो अवति मि लाई सराप दिन्दु तिमिले जर

॥ स्वनि ॥

॥ २६ ॥

हुनि परोत् १ धास हुन परोत् २ कल्प वृद्धे भेरुन परोत् ३ दुगा भेरुन परोत् ४ प्रति ५ धोक ति मि लाई स
राप दिजा भनि बिस्नु लाई सराप दिजा भनि जालंधर सग सति मे वृन्दा ले पनि प्रान द्वादि ॥ हे भगता भनि प
ति वृता ले सरापे को हुना ले त्यो सराप बिस्नु लाई लाग्यो ॥ अरु हुन परोत् भने को मा तुलति भेरुन परोत् धास
भेरुन परोत् भने को हुना ले कुस भेरुन परोत् कल्प वृद्धे भेरुन परोत् भने को हुना ले पिपल को रु
ष भेरुन परोत् दुगा भेरुन परोत् भने को हुना ले साति कराम भेरुन परोत् ॥ यत्ते मर्थ ले तुलति कुस
पिपल साति कराम ॥ प्रति नारायण हुन भनि स कल ले पुजा गरे को हो हे भगता भनि पति वृता धर्म भ
ने को वडो दुलो धर्म हो तहा उप्रात वे कुन ना थले आप पाई माहा देव देई जाई सब वृता न कहि अब वृता
को सराप मो क्षा गर्न जांछु भनि माहा देव देई गिरा भई तुलति कुस पिपल साति कराम भेरुन को बिस्नु
गयाप दि महा देव वृष भमा धि स बार भेरुन आदि देव तां हत साधि पदि लागाई नाना वाजा बजाई अब सरा

॥ २६ ॥

हस्तलेनाचिगन्धिलेगार्हपुष्पावृष्टिगर्देहुलोडसाहागरिकेलासमाप्रभेसगरेप्रथमगनसमेतभैसिबसक्त
तिस्वीरूपभैरहेसकलदेवतामाहादेवदेईविश्वभईआफना२भा३ममागईआफना२कामगारिपरम
आनंदनेरहेप्रतिसोर्गकाकुराकहे॥हेअगस्तामुनिअवपतालकोकुराकहंदुतिमिप्रकचिहता
गरिसुनताहाप्रातभस्वत्थामारिषिपार्वतिकाआग्यालेसप्तपतालकोमलरसातलपतालमापुग्या
कस्तोपतालभन्यासुर्ज्याकातेजस्तोताज्वलामानतेजभप्राकोनानारवलेडाडाईगरिवनाप्राकोसु
वर्नकापुरनअसंध्यासम्यतिभप्राकोसेवनागअनंतनागवास्तुकिनागतद्वकागककोटनाग
परमनागसेवपालनागकुलिनागवरुननागलेवसेका-नागिनिहहपनिहिरामेतिमानिकईवा
दिगहनानानावस्वअलंकारपहिराईउंचाईइरामरिभैरहेकासस्तापुरिमापुगिसेवनागकाधर
माडाईहेसेवनागपार्वतिकाआग्यालेअस्वभानिपरमसोरिकोअतगराईशोदुविदूनजो

॥ स्वानि ॥

॥ २७ ॥

दलिद्रि दून जोमाहा गरिप दून तेस का उधार गर्न भनि पार्वति का आशपाले म अहा
आप को हुम् ॥ तेस का कोहि दुषि दून कि भनि सति असोस थामा रिषिले भने को
वचन रुनि सेव नागले भने हे असोस थामा रिषि जाहात तेस का गरिप दुषि द
लिद्रि अंगा लिहू को हि पनि दे नन् ॥ तेस वन का नजि ॥ = = = =

॥ २७ ॥

कमाशेख चूडनाग कपा दत्त नाग धार्तराष्ट्र नागरु रुका घर छत्त उन्की स्त्रि रु रु उ वि छत्त उ रु
जा इ प्र ध्या उ भ न्या रु यति शेष नाग का वचन सु नि अश्वत्थामा कृषि नागि नि रु रु छे उ जा न भ नि
गया ॥ संख चूडनाग कि स्त्रि हि रा वति रत्न चूडनाग कि स्त्रि रत्ना वति कपा दत्त नाग कि स्त्रि पद्माव
नि धार्तराष्ट्र नाग कि स्त्रि म गा वति स्त्रि पुरुष अन्योन्य प्रिति ले रु दा दुख पाया रु घर मा वत्त न स
कि भ्रु भै शेख चूडनाग रत्न चूडनाग कपा दत्त नाग धार्तराष्ट्र नाग पर देश गया ॥ नागि नी रु रु
दुख पाया पनि म रु स स्य वा दि धि पा नागरु रु पर देश गया प छि नागि नी रु रु ले अ व क्ता गरु क ता
जा उ भ नि चो रे वटि ले सै तो ष गरि घर छा डि व न मा प सि दुख गरि रत्ना वा रु स न्वत्सर वि सो र प नि
नाग रु रु ले नागि नी को ष व र ग रा स के न न ॥ नागि नी रु रु ले नाग को ष व र ग रा स के न न अश्वत्थामा
कृषि ते स्ता दुख का स मु द्र मा परि रत्ना का नागि नी रु रु ला इ षो जि रु क पा र्दे गया नागि नी रु रु ले स न्यार

॥ स्व.नी ॥
॥ ७८ ॥

को लो क पा र्क भ नि गु फा दे वि नि सि हे मा र अश्व तथा मा क षि ला इ दे वि ॥ हे अश्व तथा मा क षि आज
ला म्ना घर का काम ले आ उ नु भ यो भ नि सु धा या र अश्व तथा मा क षि भं क न् ॥ हे ना गि नी हो पा र्व ती
का आ ज्ञा ले श्री स्व स्था नि प र मे श्व री को व्र त ग रा उ न ला इ र सा त ल पा ता ल मा ओ दुः खि क न् ओ द
रि डि क न् ॥ क से का सं तान के न न् क से का पु रु ष के न न् क से का शि के न न् ति न ला इ उ द्वा रा
गा आ म्ना य ति अश्व तथा मा क षि का व च न मु नि ना गि नी रु रु ले न न मा आ न न्द ग रि ॥ हे क षि श्व र
रु मि दुः खि य नि छौ द रि डि प नि छौ पा पि प नि छौ सं तान प नि छौ न न् पु रु ष प नि छौ न न् सो व्र त हा
मि रु रु ता इ ग रा उ भ नि ना ग रु रु भ्र ह भै प र दे स ग या का क र आ ऊ रु रु ले इ र व मा या का क र व
नो त क ह्या र आ द र ग रि आ स न मा व सा ह्या य ति ना गि नी रु रु ले ग या का क र मु नि अश्व तथा मा क
षि भं क न् ॥ हे ना गि नी हो ति मि रु रु क चि त्त भै सु न ॥ स स गु ग मा हि या त य प र्व त कि पु त्रि पा र्व

॥ ७८ ॥

तीले श्री महादेव स्वामि पाउना निमित्त गंगा को स्वस्थानि परमेश्वरी को व्रत विधिक हं हुं सु
न॥ यो वधुक्त पूरी मा कादिन देवि हात गोरा कान इ काटि स्नान गरि अचि भैरव कभक्त र
हि एक चित्त ग वि मेरा फलाना काम सिद्ध हव सुभ नि मै हा दिन सम्म नित्य मध्याह्न कार
माधी महादेव का पूजा गर्नु पूर्ण चन्द्रमा वनि चहाउनु माघ शुक्ल पूर्णिमा का दिन अष्टौ
तर समय रोदि १०८ अक्षता १०८ वेलि पुष्प १०८ जग्नि मुत्र १०८ पान १०८ कुंडू मण रि १०८
जात २ का हस्त १०८ सगुणाम मेत नाना उपचार गरि आदि मीं ऊँकार लेखि गंगा जल ले
स्नान गरउनु श्रीश्वर रत्न चन्दन सिद्धर फूल पै हाउनु धूप दीप नैवेद्य वस्त्र भेटि चहा
उनु॥ स्वस्थानि परमेश्वरी को पूजा गर्नु अर्घ्य दिनु ध्यान जप सोत्र गर्नु उहा पछि प्रसाद
जिक उरउने अष्टौ तर समय मा आठ ८ रोदि आठ वेलि पुष्प ८ आठ जग्नि मुत्र ८ आठ

॥ स्वनी ॥
॥ २६ ॥

पान्दुइसपरि सगुगाममेत आक्राप्ररु वलाइ सो पनु पुरुषन भया होरा लाइ सो पनु छोरा
नभयामित होरा लाइ सो पनु मिच्छोरा लाइ सो पनु मिच्छोरा पनि नभया जुन्कामना कोइ
छागरि वतगमा कोइ मेरा फलाना कामना सिद्ध रुवस्रभ निगंगा मालागि वलाउनु सयोग
टिआऊले फलालार गनुति मिहुरुका दुखना सहोला नागरु रूप निआइ पुगन नयस्मा
अन्यथा नमान्या ॥ यति अश्वत्थामा कृषिले भया पकि नागिनी रुववऊतै उमिभै ॥ हे अश्वत्थ
मा कृषि श्वरु रुमिस्त्रि जाति लाइ ते सो जान कारा होला तिमि वसि त्यो वतग राइ जाउ भ
निघर राकि ल गि श्रद्धा पूर्वक भोजन गराइ घर आव साति राखा ॥ ताहा प्रांत पोष अक्त
उरौ माको दिन आशोर विधि पूर्वक व्रत को आरंभ गरया मै रूदिन भयो र माघ अ
क्त पुरौ माका दिन संसरी सा मागुत तयार गराइ स्वस्था निपर मे स्वरी को पूजा गरिसका

॥ २६ ॥

पहिले अश्वत्थामा कृषिले ॥ हे नागिनी को अर्घदि ज प ध्या न सोत्र ग र भ न्या ना गिनी रु रु
ले स्व स्थानि पर मे श्वरी ला इ अ र्घदि अं जलि वाधि ॥ हे इ श्वरी हा मि रु रु पा पि नि का पू
जा ले सं तोष को य स डः ख का स मु द्र दे वि पा र ग र भ न्दे मा द्द र्घ दि द्वा दे वि रु ज्जा र स्त र्घ
का ज सा ते ज भै स्व स्थानि पर मे श्वरी य त्प क्ष भै ॥ हे भक्ति जन ति म्ना भक्ति ले सं तोष
भ न्ना व र दान ले उ भ नि नू य ति इ श्व रिले आ ज्ञा ग या को म्नि ना गिनी रु रु ले ॥ हे इ श्व
री इ रु को ना स रु व स्त रु म्ना स्वा मि ना ग रु रु चा हे आ इ उ क्त न भ नि व र दान मा ग्गार इ
श्वरी ले तथा स्र व नि व र दान दि इ न इ श्वरी अंत र्धा न भ इ न ॥ ता हा प्रो त प्र सा द जि
क न ला ग्दा स्व स्थानि पर मे श्वरी का व्र त का प्र भा व ले ता ग रु रु य नि आ इ उ ग्ग ना गि
नी रु रु ले म न मा आ न न्द ग रि ध न्ये २ स्व स्थानि पर मे श्वरी को व्र त का प्र भा व ले हा म्ना

॥ स्वामी ॥
॥ ८० ॥

स्वामि हस्त आ इ उ ग्ग भ नि उ नै अ ह्यो न र स य मा रो टि ट अ क्ष ता ऽ वे लि उ ष्य ऽ ज ग्नि स्रु त्र
ट पान् ट कु इ का स्रु प रि ट स उ रा स मे त प्र सा द कि कि आ क्रा २ उ रू ब ला इ सो पि द रा उ व त
ग मा ॥ अश्वत्था मा ऊ पि ला इ श्र डा म र्व क द क्षि गा दि भो ज न ग रा या र आ क्रा २ आ श्र म मा
ग या ॥ इ श्री श्री स्कं द उ रा रो मा घ म हा त्मा के दा र ख रो उ कु मा र अ ग स्त सं वा दे अश्वत्था मा
र सा त ल पा ताल प्र वे शो ना म श्री स्व स्था नि पर मे श्व र्णा क था वा द शो ध्या यः ॥ १२ ॥ कु मा र
आ सा ग री कृ न् ॥ हे अ ग स्त उ नि उ ति पा ताल का कु रा क ह्या अव मृ त्पु म रा उ ल का कु रा क रं
कु मृ त्पु म रा उ ल का द क्षि गा भा ग मा वृ त्त म र ना उ ग या को न ग र धि यो ता ला ब्रा ह्म रा रु रु अ
स रत्न सं प ति पा इ वै द उ रा रा दि ना ना शा स्त्र अ भ्या स ग रि आ क्रा २ क र्म मा र ह्या का धि या ते
सै न ग र मा शि व भ द ना उ ग या को ब्रा ह्म रा म हा ग रि प व स्मा का धि यो ग रि प भ या प नि शि भ द

॥ ८० ॥

ब्राह्मणाला इलोभमोरुचियन आक्राकर्म काहु देनथो अमिथा कृणग देनथो लेस्त्रिस
तिना उग माकि ब्राह्मणि छे उभन्या ॥ हेस्त्रि कृणग रमासं पति छे नरस धे दुख पाउ छे भन्यास्त्रि
पुरुष वरुनै भित्पाकाधिया परमासं पति नरु दाधे रै दुख पाया र एक दिन शिव भद ब्राह्मण
ले आक्रिसति ब्राह्मणि छे उभन्या ॥ हेस्त्रि अवसं पति नृत्पा उन श्री सिद्धि गणेश को सेवा ग
रुयति आक्रि ब्राह्मणिसित कृणगरि डवे जना आठ २ दिन मंगलवार का विरु उदा पय मास
लोक लुगरि श्रद्धा पूर्व कृणगरि सेवा गरी लाग्या यस्तो गदा दश आठ वर्ष विसोर श्री सिद्धि
विनायक ले तिस्त्रि पुरुष ले अतिकृणगरि सेवा ग्या को देवि गणेश प्रत्यक्ष भै आक्रास्वरूप
दर्शन दिया ॥ हे शिव भद ब्राह्मण ले सेवा ग्या को देवि मसे तोष भन्ना ले ग्या इक्षा वरदान
ले भन्ना रयति श्री गणेश का आज्ञा सुनि शिव भद ब्राह्मण ले गणेशला इ प्रणाम गरि ॥ हे परमेश्वर

॥ स्वामी ॥

॥ ८ ॥

अरु थोक वर का माग पूर्व जन्म मा कमा या को न ऊ नाले यस जन्म मा हा आ घर मा संपत्ति है न दरिद्रि
भै दुःख पाउ छौ संपत्ति नु त्याउ ना को इशाले न म्मा से वाग छौ संपत्ति दिहा मा दुःख कु दा उ भनि वि
ति गया ॥ यति शिव भट्ट ब्राह्मण गाले भन्या पछि सिद्धि गरी शाले भन्या ॥ हे शिव भट्ट ब्राह्मण आज का
आठ दिन मा मंगल वार का विहाउ दोष सदा का है मा हा आइ मेरी पूजा गया सुउ स बेला मा
मेरा मुख जिजा दे बला सु सो तेरा घर मा लगी को परा मा धि रा धि मा धि वाट को परै ले छौ पि दि
चार दिन भया पछि मा धि वाट छोप्पा को को परा जिकु सुन ली इर रु ला त व संपत्ति पाइ सु
खि हो ला सत ला इ संपत्ति रु व स मै ले वर दान दि मा त व तेरा घर जा भन्या यति सिद्धि गरी श
ले आ जा गया को सु नि शिव भट्ट ब्राह्मण शति ब्राह्मण गाले मन मा आनंद गरि सिद्धि गरी शलाश
पुणा मगरि घर फिया गरी श अंतर्धी न भया ॥ फेरि आठ दिन भयो र मंगल वार का विहाउ

॥ ८ ॥

पषष्टु जाकासामागृलि शिवभद्रवास्त्रगा इति वास्त्राणि तु वैस्त्रिपुरुषसिद्धि गरीशकाथानमाग
यारविनायकका अधिवाटककलहडु देष्वा शिवभद्रवास्त्रगासती वास्त्राणीले सदाकोजे पूजा
गरि सिद्धिविनायकका आजाले सोले डुल गिको परामाधि रावि माधिवाटको परेले कोपिदिया
चारदिन भयोरमाधिवाटको प्याको को पराजि किदि या सुनकोलडु भेरस्याको देष्वा र॥ ते स
दिन देषि शिवभद्रवास्त्रगा इति वास्त्राणीले असेख्य संपति पाइ सुखि भया ॥ दशघरठु डिभि
स्था मागिषान्या शिवभद्रवास्त्रगा ले संपति पाया पछि एक दिन आम्नि स्त्रि शति वास्त्राणि छेउ भा
न्या ॥ हे स्त्रि सर्व जन्म मादान गरे उनरय स जन्म माडु रा पा म्भू सिद्धिविनायकका कणले संपति पा
म्भू अवय स जन्म मादान नगमा अर्का जन्म मा पनि द रिद्रि कुला य स र्थ ले दान धर्म गरु भन्या
र डुवैस्त्रिपुरुष ले त्रिप गंगा स्नान गरि श्री हरि हर का ए जा गरि सुवर्णादिना नाड्य वढ देग

॥ स्वामी ॥
॥ ८१ ॥

ये. त्यो दे वि शिव भ द ब्राह्मण शति ब्राह्मण शिछे उभन्या ॥ हे शिव भ द ब्राह्मण स नान न के न न ह द भ व
स्वा भ भौ ये सं पति मात्रे भौ का गरु को रक्षा गर्नन सं तान न तु त्या उ नानि मि न फे रि सिद्धि वि
नाय क को से वा गरु यति शिव भ द ब्राह्मण शाले भन्या को वचन सुनि शति ब्राह्मण शाले रु व स
भनि फे रि आ ठ २ दिन मंगल वार का विरा उ दा प व ड वै श्वि प्र रुष ले सिद्धि ग रो श को शे
वा ग रा ला ग्या ॥ तिन रु रु ले हो वा ग या को दे वि ग रो श सं तो व भे ॥ हे शिव भ द ब्राह्मण रा
नै ले से वा ग या को दे वि म सं तो व भ भ ज न्का म ना ले गरि मे रो से वा ग ह स व र दान ले भन्या
यति ग रो श ले आ ज्ञा ग या प छि शिव भ द ब्राह्मण शाले अंज लि वा धि ॥ हे सिद्धि ग रो श शति
मिले कृ पा ग रा ले भ ला इ सं पति भये सं तान न के न न त्यो सं पति को रक्षा को ग ला सं तान
वर दान दे उ भ नि विं ति ग या ॥ यति शिव भ द ब्राह्मण शाले वचन सुनि सिद्धि ग रो श आ

॥ ८१ ॥

जागृर्द्धन॥ हे शिवभट्ट ब्राह्मण आज का आठ दिन मा मंगलवार विहाउ दा पषय
सै गरिमा ला आइ हू जागया सते सवेला मा एक गाइ आइ ते रा मुख हे रि र रु निन
ते ले पा निगाइ का मुख हे रि र जागया सउ हा पछि गाइ ले गो वयाउ निन हा त मा था पि
घर ले जा र को प रा मा रा वि मा थि वा ट को प रै ले को पि दि या स॥ चार दिन भया पछि हे
या स ते स गो व र द पि रु क के न्या उत्पति होइ रु रु लाउ त्र भ न्या त लाइ रु न्या छैन का भ
न्या पूर्व व ज न्म मा ते ले रा ब्या को छैन यति ग रा श ले आज जागया पछि शिवभट्ट ब्राह्मण
स्त्री पुरुष ले रु व स भ नि मन मा आ नन्द गरि सा हा ग प्र गा म गरि घर फि मा सि डि
ग रा श प नि अंत र्ध्यान भया॥ आठ दिन भयो र मंगलवार का विहाउ दो पषय जा
को सा मा गृ ति शिवभट्ट ब्राह्मण शति ब्राह्मणि उर्वे सि पुरुष सि डि ग रा श का थान मा

॥ स्व. नी. ॥
॥ ८३ ॥

गया. विनायक का पूजा गरी लागदा मा गा इ आ इ रे रि र कि न सो दे वि हि व भ द वा स गाले सि
द्धि विनायक को पूजा गरि सकि गा इ का सु ख रे रि पू जा गरि प्र गा म ग मा त व गा इ ले गा व
या इ न. शिव भ द वा स गाले सो गो व र. भै मा प री न पा इ वि चै मा हा त था पि लि यो. सिद्धि वि
नायक ला इ प्र द क्षि गा गरि दु वें सि पु रु ष घ र ग या र को प र मा रा धि मा धि वा ट को प र ले हो
पि दिय गा इ अंत र्ध्यान भ इ न. ॥ चार दिन भ यो र. आ धि वा ट हो पा को को प र कि दि दिय
तै स गो व र दे वि रु क कं न्या उ त्प ति भै र व्या कि दे ष्या. क स्ति कं न्या भ न्या म ध्या रु काल का श्री
सूर्य का ते ज ज सो ते ज भ या कि प प्र प त्र ज सो ते ज भ या कि ग रु उ का ज सो के श भ या कि
म ता हा ति का म रु ज सो हा त पा उ भ या कि. पू र्ण च न्द्र मा ज सो सु ख भ या कि. लक्ष्मी का
ज सो के म्बर भ या कि. सा वि त्रि का ज सो पै ता ला भ या कि. य स्ति पर म सु न्द री कं न्या ला इ

॥ ८३ ॥

देवि शिव भद्र बाल राशति बाल राशि सुसि भै को प रा देवि कि कि नि दा न ग रि पा ल्या ते स वा
ल रिव ला इ इ द भ य न र फे रि मंगल वार का दिन विला उ दा य ष सिद्धि वि ना य क का था न
मा जा इ म् जा ग ग्या र ग गो श प्र त्य क्ष भै ॥ हे शिव भद्र बाल राशति बाल राशि ज्या कु रो भ भ
इ क्षा गरि आ यो स्व भ न भ नि आ ज्ञा ग ग्या शिव भद्र बाल राशति भं छ न ॥ हे वि ना य क ति
मि ले क पा ग रा ले स प ति स ता न प नि भ यो अ व ते स वा ल रिव ला इ इ द भ य न भ नि य
हि विं ति ग रा आ नो य ति शिव भद्र बाल राशति भ न्या प छि ग रा श ले ने स वा ल षि ला इ इ द
दि ना जा भ न्या र शिव भद्र बाल राशति बाल राशि ले रु व स भ नि सिद्धि ग गो श ला इ प्र रा
म ग रि य र फि या श्री ग गो श अं त र्धा न भ या ॥ ता हा मं त श ती बाल राशि ले आ कू स न
मि जि हे रि न्द्र इ द आ यो र ते स वा ल रिव ला इ इ द वा न दि व ठा इ न ॥ ज से सि ता जि उ त्प ति

॥ स्वप्नी ॥
॥ ८४ ॥

ऊदा जनक गजाला इ आनन्द भय थोत सै सो वाल धिउ सति ऊ दा शिव भट्ट ब्राह्मण शास्त्री ब्रा
ह्मण गाला इ आनन्द भयो आक्राम ज्या दले ब्राह्मण शास्त्री विधि सित नाम कर्म गराया ब्राह्म
णाले ॥ हे शिव भट्ट ब्राह्मण गा इ का गो वर दे धिउ सति भया कि कनाले य सवाल शिव को ना
म गो मा भं नु भनि गो मा ना उरा व्या भाग्य वंति क सं ह री लो क ले मा न्या क न्य य ति ब्राह्म
णाले भयाप हि शिव भट्ट ब्राह्मणाले श्र द्वा पूर्व क द शि शा दि भोजन गराया ए ब्राह्मण ह
रु आक्राम २ घर गया ॥ ताल प्रान्त गो मा ब्राह्मण अक्त पक्ष का चन्द्र मा व द्या के दिन दिने
वैदि पा च व व कि भ इ न् एक दिन शिव भट्ट ब्राह्मण शास्त्री ब्राह्मणाले ॥ हे पुत्रि हा मि द्वा
न ग रि ओ हौ तं ह जाला इ अक्ष ता के ला इ रा व्या स भ नि आ हा इ ड वै स्त्रि पुरुष गंगा मा
ह्मण न ग रि श्री रु रि ह र को ह जा ग रि सु व री दि ना ना इ व्य दान ग री अ म रा व ति कं प भ यो

॥ ८४ ॥

इन्द्रादितितिस्कोटिदेवतासमेतभैकैलासपर्वतविषेजाइश्रीमहादेवछेउविंतिग
गया॥हेजगदिश्वरमर्त्यमगगुलकादसिगाभागमाब्रह्महरनाउगयाकोएकनगर
हूनाहाशिवभट्टनाउगयाकोब्राह्मणहूतैस्किस्त्रिशातीनाउगयाकिब्राह्मणहूतिउवे
स्त्रिउरुछलेतिम्राउत्रगणेशकोसेवागयारगणेशसंतोषभैअसंखसंपतिदिश
सोशिवभट्टवाहाराशतिब्राह्मणिलेसोसंपतिपायापहितिजगगामाजाइह्यानग
रिश्रीहरिहूकोहूजागरिसुवर्णादिनानाउवदानगरिघरआउछ॥तेश्वेतैसाग
दाअमगवतिकपभयो॥हेगुगान्तकअरुपनिविंतिगुरुशिवभट्टवाहाराशतिब्रा
ह्मणिलेसंपतिपायापहिसंतानभयेतरफेरिश्रीगणेशकोसेवागयारगणेशले
संभारालभणालेउक्तभयाकिमहातेजवन्तिपरमसुन्दरियतिउत्रिवरदानदि

॥ स्व. नी. ॥
॥ ८५ ॥

या ॥ हे करुणा मय मेरे रक्षा गर ति मिले रक्षा नग या अव अमरावति देषि पति तऊ कु ॥
पति इन्द्र का वचन सुनि श्री महा देव आजा गछ न ॥ हे इन्द्र न तु रा उ अमरावति मर शा
गरुला ति मि अमरावति जा उ यति श्री महा देव का वचन सु नि इन्द्र ले ह व स भ नि श्री हा
देव ला इ सा हा ग प्रणा म गरि अमरावति वि बे ग या ॥ इन्द्र गया पछि श्री महा देव ले इन्द्र को र
क्षा गरानि मि त ज रा म कु ट गरि भिक्षु करु प मै वा उ हा त मा वि भूल लि दा हि ना हा त ले
उ म्बरु व जा इ भस्म ले प न गरि शिव भट ब्राह्म रा को घर ग या र भिक्षा मा ग्ना गो मा ब्राह्म रा
आ फ्रा वा उ को नि स म जा ग रा ला इ अक्ष ता के ला उ धि न धे रै वे र पछि गो मा ब्राह्म रा भं
छि न ॥ हे भिक्षु क मे रा वा वा म ह ता रि गंगा मा स्नान ग रा ग या का छ न म अक्ष ता के ला उ
कु भिक्षा दि न्ना को हि छे न एक छि न प र्व भ नि प र्षा इ रा धि न ॥ अक्ष ता के ला इ स कि न र

॥ ८५ ॥

भिक्षालिभिक्षक रूप श्रीमहादेव का अग्रमा जाइ ॥ हे भिक्षक मेरा वावामरुतारि घरमा
हे ननम अक्षता के ला उथा विलम्ब भयो दुखन मान सिमाले उभ निज यति गोमा ब्राह्म
गाले भन्या पछि भिक्षक रूप श्रीमहादेव ले आजा गर्कन ॥ हे ब्राह्मणि यति वेर पछि ई अहे
भिक्षा दिन आइ सस्यो भिक्षालि न्न दिन्या भया तेरा वा ठको ह जाग रा के ला इराणा का अक्ष
ता दे यति भिक्षक रूप श्रीमहादेव ले आजा गया पछि गोमा ब्राह्म गाले लिन्या भया भिक्षा
ले उन लिन्या भया अक्षता तदि अन्न निज ॥ यति गोमा ब्राह्म गाले भन्या पछि भिक्षक रूप
श्रीमहादेव ले ॥ हे पापि ह ब्राह्मणि तैले अरु कार ले मला ई भिक्षा दिइन सत लाइ प्रापदि
कुंत सात वर्ष कि ऊदा सत रि वर्ष का ठा सग विभाहारु वस फेरिते रा वावामरुतारि
ले वडा कछु गरि सिद्धि ग गोश को शे वा गरि न्दुल्ला इराणा को से पति को ना सरु वस फेरित

॥ स्व. स्था ॥
॥ ८६ ॥

लाइ पनि नाना तरु को डुःख परो सुःखे रिते गवाठ मरु तारि पनि चौडे मरो सुयति चारथो
कतलाइ श्राप दिना भनि दुःख रुले भनाया भिक्षा नलि काहिर आचार उहि देवि अंतर्धा
न भै केला सपर्वत गया ॥ गोमा वास गिले भिक्षु क रूप श्री मरु देव का श्राप पाइ चित्त आ
कूल भै रोइ रहि न ॥ तारु मां न गंगा मा हान गंगा ग या का शिव भद्र वास गा इती वास
गिले गंगा हान गरि श्री रु रिरु का हान गरि सुवादिना नाद व दान गरि घर आउदा गा मा
वास गिले रोइ रह्यो कि देवि ॥ हे पुत्रि कान रोइ सुका डुःख भयो र भनि सुध्याया ॥ गोमा वा
स गिले ॥ हे पिता माता तिमि रुग गा हान गंगा भनि गयो म अक्षता केला उथं भिक्षु
क आइ भिक्षा मागे म अक्षता केला उकु भिक्षा दिन्या कोहि छैन नर सकक्ष गा पर्व भनि
पषाइ राखा अक्षता केला इसकि भिक्षा दिन जांदा भिक्षु कले ॥ हे वास गिले यति वर प

॥ ८६ ॥

षी इ औ हे भिक्षा दिन आइ सत्यो भिक्षालि च दि न्या भया ते रा वा ठ को पू जा गर तै ले के ला या को अप
ता दे भन्या प्रे ले लि न्या भ या भिक्षाले उन लि न्या भ या अक्षता त दि दे न भ न्या यति मै ले भ न्या
पछि भिक्षु क ले ॥ हे पा पि ए ब्राह्मणि तै ले अरुं कार सित मला इ भिक्षा दि इन स त ला इ
आ प दि हु सं सा न व र्ष कि रु या स न रि व र्ष का बु ठा स ग वि भा ला रु व स फेरि तै रा वा वा म रु
ता रि ले सि दि गु रो श को श वा गरि तु ल्या इ रा घ्या को सं प ति के ना म रु व स ॥ फेरि तै ले प
नि ना ना तर रु को दु र व पा या स फेरि तै रा वा वा म रु ता रि प नि चा डे म रा स भ नि रु म रु
ले भ ना यो र भिक्षा न लि आ प ग रि ग यो भ नि भिक्षु क रु प श्री म रु दे व ले आ प दि या का
क रा स र्व व र्णा त क हि न ॥ यति गो मा ब्राह्मणि ले भ न्या का व च न सु नि शि व भ द ब्राह्म रा श
ती ब्राह्मणि ले ॥ हे पु त्रि तो श्री म रु दे व हो र ते श्ने दि या को आ प ला ग रा भिक्षु क ले ते सो भ न्यो

॥ स्व. नी. ॥
॥ ८१ ॥

भनिरुनपर्वक्या नरो भनिरुज्ज इरा व्या ॥ ता हा प्रां त गो मा ब्राह्मणि क्व व र्ष किं उ गि सा तौ व र्ष
किं भ इ न र शि व भ इ ब्राह्मणा ले अ क्रि स्त्रि श ती ब्राह्मणि सि त म तौ ग रि गो मा ब्राह्मणि ला इ
कं स्या दान दि न भ नि ठा उ र मा ब्राह्मणा षो ज न प ठा या ज ग दी श्व र श्री म हा दे व का आ प ले गो
मा ब्राह्मणि कं स्या दान लि स्या ब्राह्मणा को हि ले स के न र शि व भ इ ब्राह्मणा आ फे जा हां ता हां
षो जि हि ङ्या आ यु ले भ न्या ज सा ब्राह्मणा पा य न न र फि रि आ या ॥ गं गा का ती र उ गि स्ना न ग
रा ला गा का ब्राह्मणा ला र हे या उ हा प नि को हि पा य न न र म न ले हा रि क न घ र आ उ भ न्दा
श्री म हा दे व ले कु प्रो का न न सं न्या डे रो कै लो आ षा भ या को आं वि भै जी रि या को दा हा नि
स्वा को क पाल का कै श पा का को का लो मुख दे वि रा ल उ ह्या को स न रि व र्ष का उ मे र भ या
को शि व स र्मा ना उ ग या को ब्राह्मणा भै शि रा श न ग रि सं ध्या ग रा ला गा ज सा भै र ह्या शि व

॥ ८१ ॥

भद्र ब्राह्मणाले त्यो हिव सर्मा ब्राह्मणाला इ देवि धे रै वे र संम आ वा ला इ हे रिर ह्या शिव सर्मा ब्रा
ह्मणाले संख्या गरि सकि भं कु न् तिमिले मला इ धे रै वे र संम हे रिर ह्यो क्या न हो ति मि को हो का
ला दे वि आ यो भनि सो भा ॥ शिव भद्र ब्राह्मण भं कु न् म शि भद्र ना उ ग या का ब्राह्मण ऊ मे रा घ र
मा एक के न्या कु न् के न्या दान दिन भनि ब्राह्मण घो जि हि उ कु के रि पा उन सकि न घर जो कु भ
नि आ न्ना तिमिले ला इ दे ध्या र हे रिर ह्या तिमि को हो यति शिव भद्र ब्राह्मण का वचन सुनि शि
व सर्मा ब्राह्मण भं कु न् ॥ हे शिव भद्र ब्राह्मण म प नि ब्राह्मण ऊ सो रु व र्ष का उ मे र दे वि क
से ले दिया के न्या दान लि उ ला भनि हि क्या को मला इ के न्या दान दि न्या को हि भ य न न् आज मे
रा भा ग्य ले ति मि ला इ भे टा जा ह्म र का कृ पा ले दु वै को का म पु ग्यो ॥ हे पिता म दे वि द या गरि
सन्नि पु त्रि म ला इ कृ पा गर सरु श्र वि ति छ ॥ ब्राह्मण भे यो उ मे र भ यो र प नि मे रो वि भा हा भ

॥ स्वनी ॥

॥ ८८ ॥

या को कैज अवति मिले रुपाग या के न्या दान पाउला यति हिं स मी ब्राह्मण को वचन म सुनि
शिभ द ब्राह्मण भं छन ॥ हे शिव स मी ब्राह्मण ते स उ मेर काति मिला इ बाल ध मे रि उ त्रिक सो
गरि दि उ विशेष ति मिले सा कुरु पिला इ काम देव कि स्त्रि रति ज स्त्रि मे रि उ त्रि अ जो ज भ
न्या र शिव स मी ब्राह्मण भं छन ॥ हे शिव भ द ब्राह्मण ते सो आ ज्ञाने गरु सो के न्या म ला इ
दे उ ति मिले य स्त्रा कुरु गग या म रु स्या गरि म रु ला शिव स मी ब्राह्मण ते य स्त्रा कुरु गग या को सु
नि शिव भ द ब्राह्मण ते अव व स रु स्या ति उ कि के न्या य श्या इ दि उ के न्या न दि या यो रु स्या गरि
म न्या छ ॥ ब्राह्मण भे व स रु स्या के सो गरि लि उ ले स्त्रा कर्म मा ते सौ ले ष्या को रहे छ म का ग
रु उ स दि न भ्रा प गरि जान्या भि कुरु क श्री म हा दे वे र स्या छन उ न्का भ्रा प ले घन ग र्गा इ न्दु ले
प नि स के न न्द रा व राले प नि ॥ ॥ ॥ स के न थो म ज स्त्राले क सो गरि स रु ला य स्त्रा वि चार

॥ ८८ ॥

गरिचिन्त आकुल भै शिवसर्मा ब्राह्मणाला इ सग मालि घर ग या ॥ इति ब्राह्मणाले शिवसर्मा ब्रा
ह्मणाला सप्रेत भै आक्रा पुरुष आया को देखि ॥ हे स्वामि त्यो कक्षा इत्यापौ भनि सो धिन् र शिव
भट्ट ब्राह्मणाला कहं छन् ॥ हे स्त्रियो शिवसर्माना उगमा को ब्राह्मणालो गोमा कंन्या दान लिन
भनि ब्राह्मणाला जो जिहि ज्ञा काहि पाउन सकि नर घर आउ भनि आउदा गंगा काती रमा सं
ध्या गमा को रहै छ मला इ देखो र सं ध्या गरि सकि मछे उ आइ को हो का हा देखि आयो
भनि सो ध्या भै ले ब्राह्मणाला ऊ मेरा घरमा एक कंन्या छ कंन्या दान दिन ब्राह्मणाला जो जिहि
छुकाहि पाउन सकि न घर जान आना तिमि को हो भन्या र ते श्रे म पनि ब्राह्मणाला ऊ
सो कहं वर्ष का उ मेर देखि कसै ले कंन्या दान दि पा लिउ ला भनि जिहि ज्ञा को मला इ कंन्या दा
न दि न्या को हि भयन न् आज मेरा भाग ले तिमिला इ भेटा ना त म्नी पत्रि मला इ कंन्या दा

॥ स्वनी ॥
॥ ८५ ॥

नदेउभयो मै ले ॥ हे शिवसमी वा लरा ते सउ मेर काति मिलाइ वा लषिउ त्रिक सो गरिदि उ वि
शेषति मि ते सा ऊरु पि लाइ काम देव कि स्त्रि रति ज स्ति मे रि उ वि अ जो ग ते सा कुरा न गर भ
न्या ॥ ते श्रे ते सो आ ज्ञान गर सो कं न्या दान न दि या रु त्या गरि मरु लाभ नि सग ला गि आ यो यो
अ न र्थ भ यो व्रत रु त्या लि उ कि गो मा कं न्या दान दि उ य ति शिव भ द वा ल रा ले भ न्या को सु नि
शति ब्रह्म शि भे दि न ॥ हे स्वा मि ते सा कुरा न गर क प्रो का न न सु न्या उ रो के ला आ षा भ या
को आ षि भे जो रि या को दा रु नि स्का को क पाल का केश पा का को य सा लाइ म ध्यान काल का
श्री सर्य का ज सो ते ज भ या कि द र्गा च न्द्र ज सा सु र भ या कि म तारु ति का सु रु ज सो हा त पा
उ भ या कि ल क्ष्मी का ज सो क म्बर भ या कि सा वि त्रि का ज सो पै ना लाभ या कि य स्ति मे रि उ त्रिक सो
गरि दि उ ज ति अ की कि कं न्या दि य न भ नि रु त्या गरि म र्ता सो रु त्या हा मि लाइ ला ग ला का र क

॥ ८६ ॥

आं प्रले अ प कीर्ति न गर्ज क दा चित्र ति मि ला इ ते सक्र रा मा सं दे ह भ या सो रु सा गरि म रो स
सो रु सा म क पा ल था पि दि उ ला ते स्का पु कि मा न ड रा उ ॥ ते स ला इ त रु जा र व रु स रु सा ला ग
न्या भ या प नि दि दै न पृ थि मा अ रु ब्रा ह्म रा को हि कै न कि ते श्वा इ जा भ नि दे उ अ रु ब्रा ह्म रा
षो जि ला उ भ नि श ति ब्रा ह्म रा ले आ फ्रा प रु ष सि त य स्ता क रा ग मा को सु नि शि व स मी ब्रा ह्म
रा भं ह न ॥ हे मा ता हे श ति ब्रा ह्म रा से सार मा उ ठा प नि ऊं ह न जु वा न प नि ऊं ह न वा ल ष प
नि ह न रा मा प नि ह न न रा मा प नि ह न क सै का छि रा को रि ध रै ह न को हि उ रु ष का आ फ्र वा
हि उ मे र का पा को रि ह न को रि सि का उ रु ष वा हि आ फ्र उ मे र का ह न ॥ क सै का सि ह न न क
सै का उ रु ष ह न न को हि ध नि ह न को हि गी प ह न कु ला ल का च क रै फि रि र ह्या का ह न य
सं सार मा उ ठा को ऊं दै न क स्ता इ म उ प दै न य स र्थ ले तो कं सा म ला इ रु पा गर न दि या ति

॥ स्वनी ॥
॥ ५० ॥

मि उइ स्त्रि पुरुष लाइ भ्रापदि प्रागा त्याग गरु लाभ नि प्रागा वा पुत्र स्त्रा गरु मा पुमा इ मर गा त या
र भयादिं कौ कि दि दौ न भन्यो त्यो दे षि द्वि व भ द ब्राह्मण गुरु इ कन ॥ हे शिव स मी ब्राह्मण ते सो
न गर मे रि उ त्रि ति मि ला इ कं न्या दान दिं कौ भनि उ जा इ गो डा धो इ दि मा धि रा कि ल ग्या इ ती ।
ब्राह्मण ले मा न्या भ य न न र शिव भ द ब्राह्मण ले उ जा उ न ला ग्या ॥ हे स्त्रि उ स दि न मा भ्रा प ग
रि जा न्या भि श्व क श्री म हा दे व र स्या कृ न् अव तिति स्का टि दे व ता ह म्ना प क्ष भै आ या प नि त्यो भ्रा
प लं च न ग री स कि न्या कृ न् दे व ले पा रि त्या यो त्या ग रु गो मा य स ला इ कं न्या दान दि उ हि पि न ग
र सा म्ना गृ त या र ग र भ न्या ॥ य ति शिव भ द ब्राह्मण ले भ न्या प छि इ ती ब्राह्मण ले ना ना वि र वा ।
त ग री ला गि न् म हा आ श्र यं उ हा का वा ल ष का वि भा हा भ या को दे ष नु ष यो नि वि वे कि वि धा ।
ता ले मे रि उ त्रि को ल ला ट मा क्यो लि र वा को र हे छ ॥ उ वा रा न र ग दी ब्राह्मण रु रु ले यो वा ल वि भा ग

॥ ५० ॥

मानिकु न्या कृ सं प्र गी लोक ले मा न्या कृ न भं ध्या यो पनि अ मि ध्यां र हे कृ कृ मिले न गर्नु कर्म त के
हि ग मा को थि य न का पा प ले य सो भ यो मे रि उ त्रि ला इ म्मा प दि न्या श्री म कृ दे व र ह्या कृ न य स
वा ल धि ले का जा न्द थि र श्रा प दि या कृ न भ त्रि सा रै रु न क रा उ न ला गि न र शि व भ द वा ल रा
ले ॥ हे स्त्रि न रे अ व दे व ले ज सो ग ली फि कि न ग र शि व स र्मी वा ल रा ला इ षा न पि न दि सु त
न ला इ ठा उ ष टा इ दे भ न्या र य ति आ कृ प रु ष का व च न सु नि श ति वा ल गि ले ना ना उ प
चा र त या र ग रि षा न पि न दि इ न् ॥ वा इ पि स कि सु त न ला इ ठा उ ष टा इ दि इ न् शि व स र्मी
वा ल रा सु त्त ग यै र श्वा ती वा ल गि ले आ फ्रि प त्रि गो मा ला इ हा कि भ न्न ला गि न् ॥ हे पु त्रि ते रा
वि भा ल कृ न ला गो ले स व इ वा ल रा ला इ क न्या दान दि कृ न् ॥ का ल भ न्या उ स दि न त ला इ श्री
प दि न्या मि श्र क श्री म कृ दे व र ह्या कृ न त ला इ त्यो श्रा प ला गो ला मि ला इ दो ष न दे तं पनि सु

॥ स्वनी ॥
॥ ११ ॥

तीन गर तेरा कर्म मायसै लेखा कोरहे छ कर्म लेग गया को नगर्जु कस्को मा मर्थ छ ॥ हे गोमा भनि
आषा देषि आसुष सालि वडा प्रितिले काषमालि इन्द्र यति आक्रिम रुतारिको वचन सुनि गो
मा ब्राह्मणि भेदिन ॥ हे माता तिमिरु रुलाइ का दोष छ मेरा कर्म मा ते सै लेखा कोरहे छ फेरि श्री
महा देवले दिया को आष अमेथा गरग को सकला मैले अरुं का रगरि भिक्षु करु पश्री महा दे
वलाइ आदर नग गया को तेहि फल पाजा जस्म नुषले भिक्षा माग्न आया का भिक्षु कलाइ भि
क्षादि संतोष गरि पठाउला सो इरु लोक परलोक मा सुख पाउला ॥ हे माता तिमि संदेह नग
र उदाभयापनिका नाम यापनि वीर श्रभयापनि दरिद्र भयापनि शै गिभयापनि दुष्टि भ
यापनि मलाइ देवले पारित्यायो का गरु हे रश्री रामचन्द्र जशालाइ देवला गोरवन वास
जान पमो वन वास गया पछि पनि राव गाले सिता हरिल गो फेरि श्री महा देवलाइ देव

॥ ११ ॥

लागो र काल कूट विष क राठ मा राषि नील क राठ भै र रुनु प मो. फेरि उधिर ज सा ध मी सा रा जा
को कु तिन ला इ दे व ला गो र रा ज्य दे वि भ्र रु भै पा चै भा इ ले व न वा स गु प्त वा स जान प मो. फे
रि डो प तिला इ दे व ला गो र दु र्ग ध न ज सा का स भा मा नि व स्तु ग रि निर् ल ज्य ग रि पा इ न र फेरि
व लि रा जा ज सा दा ता को कु तिन ला इ दे व ला गो र पा ता ल मा व स्तु प मो. ॥ फेरि रु स्त का ज सो
मा या क स्को कु तिन ला इ दे व ला गो र ओ म्भै मु र्खा जि आ फु ना ति अनि रु द्र ला इ वा ना
सु र ले ना ग पा सा ले वा ध्यो. छ प न्न को टि जे ड वं सि को ना स भ या को दे ष प मो. यो व स्त रा उ
सं सार मा सं स र्गा म नु षे की त प तं ग रा क्ष स इ सा दि ज ति जी वा त्मा छ न श्रु ति ग रि र ह
न्या व स्त ला इ दि न ला गो र आ फु शि र का ट नु प मो. फेरि ति ति स्को टि दे व ला का स जा भै
र ह्या का इ न्द्र ला इ दे व ला गो र अ म रा व ति छा दि भा गु नु प मो. ॥ हे मा ता दे व लं च न ग रा

॥ स्वनी ॥

॥ ५१ ॥

ऊँ देन पूर्व जन्म मागरि आया को कर्म को भोग गर्ने परु दृष्टांत हेर जसै घटालि कैसे धे
रे जल भया का स मुद्रमालिन गया पनि जल घटा भरि मात्र आउ कृत सौलला टमाले व्या
को मात्र ऊँ कुरु सं देह नगर ति मिले दिया कोठा उमा पुसि सग जाला ॥ यस्ता कुरु रागो मावा
सु गिले गया को सुनि सति ब्राह्मणि उमि भै ॥ हे प्रति तंधन्य रहि कुरु सय सावाल व भव
म्या माते सा कुरु राग न्या भनि रात भरि दुइ आमा करि यस्तै कुरु राग रि र ह्या ॥ भो लि वे र
शिव भद ब्राह्मणालेना उडा कन पठाया र शिव समी ब्राह्मण को कपाल घोरन हात गो
डा कानडु काटन लाया मन पया को घानला उन दिपालि रा व्या शिव समी ब्राह्मण पनि म
न पया को घानला उन पाउ दारुष्ट उ छुभै मो टा या ॥ ता हा प्रोत शिव भद ब्राह्मण शक्ति
ब्राह्मणिले लग्न ठरु राइ कन्या दान को सामा गृत या र गरि नाना मंगल जात्रा गरि आ

॥ ५२ ॥

क्रामर्जी दाले गो मा ब्राह्मणिला इ हिरा मोति मानिक इत्यादि नाना वस्त्र अलंकार पेश
इ शिव सर्मा ब्राह्मणाला इ कन्यादान दिया ॥ गो मा ब्राह्मणिले हात मा फूल को माला लिशि
वसर्मा ब्राह्मण का गला लौ इ दि प्रणाम गरिन् कन्यादान गरि सकि शिव भद्र ब्राह्मण ले
ब्राह्मणाला इ अक्षर वं क दक्षिणा दि भोजन गरग यार आक्रा २ घ र ग या गो मा ब्रा
ह्मणिले पनि शिव सर्मा ब्राह्मणाला इ वडा पीति ले से वा गरि स्व इच्छा सित रा बिन्द ॥ इति
श्री स्कंद पुराण के दारुव शो मा घ म हात्म्य कुमार अगस्त्य संवा दे गो मा कन्यादान नाम
श्री स्वस्थानि परमेश्वर्य कथा त्रयो दशो ध्या यः ॥ १३ ॥ ता हा या त ॥ हे अगस्त्य मुनि ते स्ना
नर रुले रुदा द हा १० आठ द वर्ष भयो रु एक दिन शिव सर्मा ब्राह्मणाले आफु रु रु
उष्ट्र भया को दे वि घर स म्मि अवत्रा हा मात्र व सि का गरु घर जा उभ नि य सो विचा

॥ सु. नी ॥
॥ ५२ ॥

रग रि शिव भद्र ब्राह्मण शती ब्राह्मण संग जाइ ॥ हे पिता माता तिमि रु रु ले कृपा ग गी ले कं न्या दा
न पाइ उच्चार भयो म भ्रातृ ब स्या को वे रै काल भ यो घर मा विचार ग र्ग्य को हि छैन न आ जा दिया
घर जा दा ऊ भन्या ॥ यति शिव सर्मा ब्राह्मण को वचन सु नि शि भद्र ब्राह्मण भं छन ॥ हे जु वा नि शो
पनि त मै घर लो ला मो पो को कृ ल मि प नि त मै को सं पति प नि ति मे को जां कु भ नि न भ न भ न्या
रु फे रि शिव सर्मा ब्राह्मण भं छन ॥ हे पिता ते सो आ जान गर रु क फे रा जान दे उ र घर को वि चा
र गरि व रु फे रि म चाइ आइ जा उ ला मे रा प नि को छ वा वा प नि ति मि म रु तारि प नि ति मि ग रु
प नि ति मि. दे व सा प नि ति मि म न प या को षा न ला उ न दि हि त भा व ले पाल न्या य सा ति मि ला इ
छा रि म क ता जा ला यति शिव भद्र ब्राह्मण शिव सर्मा ब्राह्मण ले कृ पा ग दी गो मा ब्राह्मण गी ले सु
नि. शिव सर्मा ब्राह्मण छे उ भ नि न ॥ हे स्वा मि जा न्या का म न ग र. ति मि जा न्या भ या म ला इ प नि ले

॥ ५२ ॥

जाउविचनमजानदिन्याकै नतिमिविनामकसोगरि रुकुलायतिगोमाकावचनसुनिशिवस।
मीवाहगामं कन॥ हेस्त्रितेरावाल अवस्थाहमेरासगमाजानसकै नन॥ क्यारुभन्यारुमाघ
रअतिगढाहपर्वतचढनुपछवनमावासवस्तुपछवनमानानाजंतुकोभयपनिऊं छतेआ
कैस्वइछामावसिरहाकिसुखिकैलेघरदेविननिस्काकिसिततापभोकदेविदुखपाउलिस
उहापछिमेराहउअवसाहकसैलेवाठामादगागरितलाइरुलैजाननयसथलेतंआ
लितसमपरजाइववरठुछिचाडैआउलाउइमैहामातमआइपुगला॥ उइमैहामा
कोउइदिनलो॥ यतिशिवसमावाहगालेभन्यापछिगोमावाहगामंछिन॥ हेस्त्रितमिष्टि
इमैहामंछेतिमिनभैइइघरिपनिवस्तुसक्तिन॥ फेरिसिततापभोकदेविदुखपाउ
लिसपर्वतचढनुपछवनमावासवस्तुपछनानातरुकाजंतुकोभयपनिऊं छभन्याति

॥ स्व. नी ॥

॥ ५४ ॥

६३

मिले दुःख पाया मपनि दुःख पाउला तिमिले सुख पाया मपनि सुख पाउला ज्या गतित मो स्व गति
मेरे कसै भया पनिति मिला इच्छाति मन्ना ला वस्ति न ले जाउ ले जा दे नौ भनि छाडि गया रुसा
गरि मरुला ॥ गोमा ब्राह्मणिले यस्ता कुरा गमा को सुनि शिव समी ब्राह्मणाले ॥ हे स्त्रि उ सो भन्या
ले रावा वा मरुता रि वि द भे आउ भन्या र गोमा ब्राह्मणिले लो भनि शिव भद्र ब्राह्मण का आश्रममा
आइ ॥ हे पिता माता मपनि मेरा स्वाभिका साथ माजो हो भनि वि द मा गन ला गि न्द्र शिव भद्र ब्राह्मण
गाइति ब्राह्मणिले ॥ हे पुत्रि गोमाजो कु भनि न भन. क्या न भन्या ला म्ना हउ अवस्ता भयो छो
सो भन्या पनि हो रि भन्या पनि तें सक छ स तै ले ते सो भन्या ला ग्ना ला म्ना सम्भार को गली पा
नि पनि को पि न दे ला तें न भया च न्द्र मान भया का रात्रि कै ओ ध्या रे भन्य ॥ ज सै श्री राम च
न्द्र सिता न ऊ दा द दार भ रा जा को प्रा रा ग ये थो त सै तें न भया ला मो प्रा रा र रु स्या छे न

॥ ५४ ॥

यसर्थलेहामिदुवैस्त्रिपुरुषकोसेवागरिसंप्रतिकोरक्षागरिवसतेरापुरुषलाइजान
देउउपगिदुइमैहामातआइजाननभन्यारयतिआक्रावावामरुतारिलेभन्या
पदिगोमाब्राह्मणिभंछिन॥हेपितामातास्त्रिजातिकोसंप्रसातिथवतधर्मआक्र
पुरुषकोसंप्रसास्मतिप्ररागतिमिलेहेयाकेछनस्त्रिजातिभेआक्रपुरुषला
इरिससितहेयाहेगेऊछपुरुषकोवचननमान्याछनिऊछपुरुषसितमुख
लागलाटिऊछपुरुषलाइगालिगमाभकभकाऊछपुरुषदेबिलकाइयाक
कनिऊछपुरुषकोदोहगमाउरिऊछयसर्थलेमलाइनछेकजानदेउ॥वि
शेषमेरास्वामिवदभयाकामनगयावाटाकोसंभारगला॥फेरिसंसारमावल्या
काछोरिलेमाइतपरवरुभन्नऊदेनजाइकनवरुचाइआउलायतिगोमाले

॥ स्व. नी. ॥
॥ ३५ ॥

भन्याषकि शिवभद्रब्राह्मणशुक्तीब्राह्मणो॥ हेपुत्रितेसोभन्याहमिकामनोजाभनिव
र्षाकालमायेघवस्वाजसाआवावाठआंमुषसालिनानावस्त्रआलेकारह्याइपैह
नानादेवसमेतगरिविद्यादियारडोलिमाहलिसहरुवाहिरसम्पुयाउनगया॥
वादेभारात्रोगरिलगाहेभनिहोल्याहरुलाइआह्राइफेरिशिवसमाब्राह्मणगोमा
ब्राह्मणोछेउ॥ हेपुत्रिहेउवाजिहामिलाइनविस्मायानमायाचाडोआयाहेभन्या
रुगोमाब्राह्मणोकासगिनिहरुलेपनिनेसैभन्याशिवभद्रब्राह्मणशुक्तीब्राह्मणोलेभ
न्याषकिगोमाब्राह्मणोलेडोलिदेविबहुआक्रावावामरुतारिलाइसाहंगप्रणाभग
आक्रासगिनीहरुलाइपनिवसहेभनिसर्वेछेउविद्याभेडोलिमाचढिताहुदेविग
या॥ इतिश्रीस्कंदपुराणशेकदारखण्डेष्टाद्यमाहात्म्येकमारभगस्यसंवादेगोमाब्रा

॥ ३५ ॥

ह्रीं शिवसर्मा ब्राह्मण गुरु प्रस्था नना म श्री स्वस्था निपर मे श्व र्थी कथा चतुर्दशो ध्याय
१५॥ ता हा देवि शिवसर्मा ब्राह्मण गोमा ब्राह्मणि गया को शिव भट्ट ब्राह्मण दाती ब्राह्मणि ले
आषा देवि आ सुषसा लि आ षाले देवि जाल रु रि र ह्या देवि न का ह्या प छि रुष मा च
हि हे मा देवि न का ह्यो र रुषे मा व सिना ना विला प ग र्ग ला ग्ना ते स ओ सरमा देव सं जो
ग ले रुष का हा गा भा चि पा रु उ वे सि पु रुष रुष देवि व सि म्भ त्पु भ या ॥ श्री महा दे
व का दुत आ इ विमान मा राषि कै लास पर्वत माले ग या ॥ ति शिव भट्ट ब्राह्मण दाती ब्राह्म
णि को दिव्य देह भै कै लास पर्वत मार ह्या ॥ ता हा प्रोक्त शिवसर्मा ब्राह्मण गोमा ब्राह्मणि
ता हा देवि जा इ हु ला वन मा उ ग्गार गोमा ब्राह्मणि ले हो ल्या रु रु सि त भ न्या य स व न
को ना उ का हो य स पर्वत को ना उ का हो तो हु ला पा त भ या को व क्ष को ना उ का हो ते स फ

॥ स्वती ॥
॥ उध ॥

ल को ना उ क्या हो ते सरु व मार रखा को पशि को ना उ क्या हो ते स जं तु को ना उ क्या हो भ नि ध्या उ दे
ग इ न ॥ हो त्या रु रु ले य स व न को ना उ यो हो य स प र्व त को ना उ यो हो ते स व श को ना उ फ ला नो
हो ते स फ ल को ना उ फ ला नो हो ते स प शि को ना उ फ ला नो हो ते स जं तु को ना उ फ ला नो हो ते
स व श को ना उ फ ला नो हो भ नि क रु दे ग या ॥ ते सै ग रि जा दा धै रै टा हा ग या प छि पो ष रि
भ या का ठु ला व न मा उ ग्दा सं ध्या का ल भ यो र ते सै व न मा वा स व र्णा ॥ स वै ले षा न पि न ग
रि सु त्या था क्या का ऊ ना ले सो ह नि द्रा भ यो ते स औ सर मा श्री म हा दे व का आ प ले चो र आ
इ गो मा ब्रा ह्म णि का वा वा म रु ता रि ले दि या का इ व्वा ओं ग माला या का ग रु ना स मे त चो रि ल
पो ॥ भो लि बे र नि द ले छा ड्या प छि उ ठे र हे दा सं पू र्ण इ व्वा आ पू ओं ग माला या का ग रु ना
चो रि ल ग्या के दे वि गो मा ब्रा ह्म णि ले म धि कार र खा कुं भ नि वि ष्या त ग रि सा डे रु न क रा

॥ उध ॥

उम लागिन् र हो ल्यारु रु भं कन् ॥ हे गामा ब्राह्मणि नरो उ वि व्या तन ग रु था कि कन आ पा का
ऊना ले हा मिला इ पनि सा के नि दाला गे छ यस्तो पर्श ग यो का ला ग्छ हा मि अ भा गिर हा कु अ
वति प्रा वा वा मरु ता रि छे उ क सो भ भ जौ ला अव क सो ग र्मा हो भ न भ न्या र गो मा ब्राह्मणि भं
छि न् ॥ हे भार वा रु क ति मि रु रु य तै वा ट फि रु प्र का षा न दि लै जा उ मे रा वा मरु ता रि छे उ
यो व व र उ मा इ दि या य ति गो मा ब्राह्मणि का व च न सु नि हो ल्यारु रु ले लौ भ नि ति मि पि नि सं
ता प न न रु भ नि दु जा इ शि व स र्मा ब्राह्मण गो मा ब्राह्मणि ला इ प्र णा म ग रि वि दा य भै आ फ्र
ए र फ र्का ॥ हो ल्यारु रु फ र्का प छि शि व स र्मा ब्राह्मण गो मा ब्राह्मणि प नि व न का फ ल रु
ल वा इ ता रु दे पि ग या ॥ दु ला प व त मा धि उ गि गो मा ब्राह्मणि ले शि व स र्मा ब्राह्मण छे उ भ
नि न् ॥ हे स्वा मि प्र ला इ अ ति भो क ला गो अ स म र्थ भै आ यो क सो ग रु भ नि वा टै मा अ

॥ स्व. श्री ॥
॥ ३१ ॥

ल पत्र परि न ॥ गो मा ब्राह्मणि गभि नि भ या कि थि इ न शिव स र्मा ब्राह्मण सा इ अ त्रि क रु
गा भ यो र अ त्रि स्त्रि गो मा ब्राह्मणि ला इ का व मा लि ॥ हे त्रि भा रा फल फूल के हि मि त्ते न
ज ला भ्र म प नि छे न य स्ता प र्व त मा व सि का घा न दि उ भा रा दे वि अ त्रि क प र जा इ फ
ल ॥ फूल प नि मि ल क ज ला भ्र म प नि छे जा उ भ नि रु रा इ रा त मा स मा ति स स २ हि रा इ ले
ग या गो मा ब्राह्मणि ले प नि सु स्के रा ला लि ओ र वा दे वि आ सु य सा लि न स का प नि सु स २
ग इ न ॥ प र्व त का फे दि मा उ ग्गा प छि शिव स र्मा ब्राह्मण ले फल फूल टि पि वा न दि या ॥ हे
स्त्रि ला भ्रा घ र आ इ उ ग्गा आ इ जा भ नि ठा उ २ मा व स न दि च न्द्र यो ति न ग र का स रु र वा हि
र उ मा या सा हा व र ले लु त्या या को रु क घ र उ त्प ति ग रि ॥ हे त्रि ला भ्रा घ र ते हि हो भ नि दे
खा या गो मा ब्राह्मणि ले प र भि व जा इ हे दा मा ऊ रा को जाल रु क सिं ग र मा त्रे दे वि न ॥ सो दे वि

॥ ३१ ॥

आफ़ावावाको घर सन्निव रुने अथे र्थे रुन लागिन ॥ फेरि मेरा कर्म लेय सैयारि ल्यायो अ
वरो इकागरु प्रनिधै र्थे रुचा लेमा रुगको जाल कसिं गरला इमिल का इनर घरमा आभ
याको घा इतिवसमा बालगा को सेवा गरिरुहिन ॥ ताला प्रोत्त रुक दिन शिवसमा बालगा ले
आफ़ि स्त्रि गोमा छेउ भन्दा ॥ हे स्त्रि तंग भिनिभइ सरला प्रापरमा संपति छैन आउन्दा प
निकले वाट छैन गभीधान कर्म काले गरिदिउला सुत्कारि भयामा काष चर्च गरुला ॥ यस
र्थले म परदेश जाइ कसै छेउ कैहि मागि ल्याउने ले आफ़ि जिय को परको समारग मास ॥
रोइ करगइ नरहास यति शिवसमा बालगा ले भन्दा पछि गोमा बालगा भिं छिन ॥ हे स्वा मिम
लाइ यस्ता ठाउमा यलै छारि कता जान मन गछै मस्ति जातिले कागरुला काषा इरुला म
लाइ को देला विशेषति मिहइ अवसा भया का कसो गरि पठाउ ॥ भाहि जजमान रुह छेउ

॥ स्वामी ॥
॥ ॐ ॥

आइ ज्यो दिया को प्राणि त्याह सेवय ग न्यागर यति गोमा ब्राह्मणि लेभ न्या पद्धि शिव समी ब्राह्मणाले
फेरि गोमा ब्राह्मणि छे उभ न्या ॥ हे प्रिय रुमि गरि पभ न्या ब्राह्मण को कर्मन गरि रुदेन एक मै ह
मातभा इ प्र कृता उ हस म्म तला इषानला इ डः स्वभया च नु ओतिन गरमा जजमान रुह
छन जजमान रुह का परजा इ भिक्षा प्राणि पाया स भ निवृत्ता या र यस्ता आ क्रा उरु व का व
चन सुनि गोमा ब्राह्मणि ले लोभ निन शिव समी ब्राह्मण भिक्षा मा गित्या उभ नि आ क्रि स्त्रि
गोमा छे उ वि द भै परवाट निस्वया ॥ एक दु इदि न को वाटे जाइ गंगा को तीर मा ऋषि आश्रम
मा प्रणा ता हा व द्वा वस्ता भया का ब्राह्मण स्त्रि प्र सु व स्या का धिया ॥ गंगा स्नान गरि ह इ ब्रा
ह्मण छे उ जाइ मै गानि स प्र जाग र्ग कृत दे उभ नि माग्ना यति शिव समी ब्राह्मण को वचन
सुनि ऋषि आश्रम माधे रै कृत कृत्या को धियो ह इ ब्राह्मणाले ओ फेरि वच ठि टि पिलै जाभ न्या

॥ ॐ ॥

तिमि को लो का हा दे छि आयौ भ नि सो चार शिव समी वा सग ले चन्द्र ज्योति नगर का शि सर्म
ना उ ग ग का वा सग रु भ नि क रु रु व मा च ठि फूल टि प ला ग पा ते स ओ सर मा दे व से जोग ले
रु व को लगे भा चि योर रु व बा ट व सि म्भ भ यो ॥ त्यो शिव समी वा सग रु व दे वि ष सि म्भ
भ या प कि श्री म हा दे व रूप भे के ला स प र्व त वि षे जा दा भ या श्री म हा दे व आ या का पार्वती
ले दे वि र ग मि स्ता स्त्रि पा पा प कि स वै क रे वि स्र दार हा क न् ति मि ले प नि म ला इ वि श्व रा व्या
थो अव स म्भार आयो ॥ हे र २ सु र व मा र हा कि ते स गो मा वा स गि ला इ क ल क ल व ल ले
त्या इ ग भि नि भ या कि ला इ दु र व दि ते स्ता ठा उ मा मि त्का इ आ यो अव त्यो व ठ रि गो मा का ग
रि षा लि य ति पार्वती ले भ न्या के सु नि श्री म हा दे व हा सि क न ॥ हे पार्वती से व क भं दा मा पा प
नि ग रा प छ ध र्म य नि ग रा प छ गो मा वा स गि प नि म्भु वि ऊं छे सं धे न ग र भ न्या ॥ ता हा मा

॥ स्व.नी ॥

॥ ३५ ॥

तमिश्वा माङ्गया का शिव सर्म ब्राह्मण धे रै दिन भये र प नि फिरे न न र गो मा ब्राह्मणिले ना
ना दुःख गरि च न्द्र ज्योति न गर मा जा इ भिश्वा मा गिला इ ग र्भा धान कर्म गरि न मा स छ री भये र
सं छ री रा ज ल क्षण ले उक्त भया का उत्र ज न्मो ॥ गो मा ब्राह्मणिले च न्द्र ज्योति न गर दे वि ब्रा
ह्मण इति क ल्या इ ब्राह्मण का म ज्यो दले ना म कर्म गर इ न्द्र ॥ ब्राह्मण रु रु ले जोति क शास्त्र
विचार गरि न व र्ग ज भ मि ना उ रा ब्या ॥ हे गो मा ब्राह्मणियो बाल व सं छ री रा ज ल क्षण
ले उक्त भया को छ रा जा प नि हो इ जाला ति मि ला इ सु ख सं तो व हो ला नि भ्य य मा न्या
भ न्या र यति ब्राह्मण रु रु का व च न सु नि गो मा ब्राह्मणिले म न मा आ न न्द्र गरि भ्र द्रा
ष्ट र्व क द क्षिणा दि भोज न गर इ न्द्र आ क्रा २ प र ग या ॥ ता रु प्रा त सो बाल व न व र्ग ज
ब्राह्मण ला इ गो मा ब्राह्मणिले अ कौ का धा गो का ति ति कि जा तो ग रि पालि न्द्र ॥ सो न व

॥ ३५ ॥

राज ब्राह्मण शुक्ल पक्ष काच नु मा जै दिन दिनै वटि दु ला भ या घे ल न जा दा स गिर रु ले के हि भ
आ प नि स हि र हं था क सै स ग रु ग रा ग र्दे न थो स गिर रु का सै स गि मा घे लि घ र आ उ था ॥ आ मा
ले आ वा न दि या को बा इ चु प ला गिर हं था ॥ गो मा ब्रा ह्म णि ले आ म्भु पु त्र न व रा ज को य सो स
भा व दे वि व ऊ त उ सि भै ज ज मा न रु रु सि त जा इ ॥ हे ज ज मा न को मे रा पु त्र न व रा ज स
गि छे उ घे लि घ र आ उ छ बा न दे उ प नि भ न्दे न का न दि दे न प नि भ न्दे न यो न मि ठे यो मि
ठे प नि भ न्दे न दि या रा वा न छ न दि या चु प ला गिर हं छ उ ला प छि मे रा पु रु ष प नि छे न न
घ र मा सै प ति प नि छे न ति मि ज ज मा न रु रु का कू पा ले जि न त्रि न एक छा कि षा इ जि
र ह्या छ अ व ले स्का उ रा क र्म व्र त व न्ध ना दि काले गरु भ नि न र प ति गो मा ब्रा ह्म णि
की व च न सु नि ज ज मा न रु रु ले आ म्भ २ अ द्य ले आ स का को दि या गो मा ब्रा ह्म णि ले

॥ स्व. नी. ॥

॥ १०० ॥

सं प्रसीसा मा गृ त या र गरि न व रा ज वा स्म रा को च रा क र्म व त व भ्वा दि गरि दि इ न् पु रा रा दि
सं प्र सी शा स्त्र वि चा सि का इ व ठा इ रा वि धि न् ॥ एक दि न सो रा क र्म न व रा ज वा स्म रा दे धि
ज ज मा न रु रु व ऊ त उ सि भ या र गो मा वा स्म रा छे उ जा इ ॥ हे गो मा वा स्म रा न व रा ज वा
स्म रा का वि भा रा ग र्मा भ या व रु रा द र का अ जि स्वा मि वा स्म रा कि पु त्रि च न्द्रा व ति ना उ ग मा
कि वा स्म रा वि भा रा ग रि दि उ सा मा गृ त या र ग र भ नि य ति ज ज मा न मा ग रु रु ले भ म्मा
को मु नि गो मा वा स्म रा भं छि न् ॥ हे ज ज मा न हो मे रा पु त्र को भा र्ज न के न य र मा से प ति प
नि छे न ते सा ला इ कं न्मा को दे ला क सो ग रि वि भा रा ग रि दि उ भं छि न् ज ज मा न रु रु
भं छि न् ॥ हे गो मा वा स्म रा ज्वा चा हि या को रा मि दि हौ का का चा हिं छ भ न य ति
ज ज मा न रु रु ले भ म्मा प छि गो मा वा स्म रा ले ॥ हे ज ज मा न हो रा मि ग रि प दे धि ति मि

॥ १०० ॥

रुसको ते सो दया धन्ये २ रखा हौ अनिविधा लाइ चारि पाको सामा गृ मागिन जजमान
रुसले संसरी सामा गृ तया रग रि सुदिन मा वासरा का मर्मा दाले न वरा ज वासरा लाइ
वरुणा मरका अग्नि स्वामि वासरा किउ विचंद्रा वति नाम गमा कि वासरा विधि मर्व
क विभास ग रि दि या गो मा वासरा न वरा ज वासरा चन्द्रा वति वासरा ती न जना
ज्याभया को वा इ मिलि जुलि रखा ॥ ता रु प्रांत एक दिन न वरा ज वासरा वा रि र खेल न जा
दा ते स्का सगिरु रुले ॥ हे वासरा त लाइ आज संमरामि ले न वरा ज भंघौ ते सो कोहन
न विना वाउ को छोरो को स भनि नाउ रा घा ते रा वाउ भयाना उ का रु क को पुत्र को स हा
मिलाइ करु भयार न वरा ज वासरा ले आ फ्रा सगिरु रुले ये सा रु रा ग या को सु नि के हि
उ न रा ग रा न सकि गो मा वासरा छे उ आइ ॥ हे माता भनि आ फ्रा सगिरु रुले भया का

॥ स्वनी ॥
॥ १०० ॥

ऊरा ह त्त त क ह्या म क स्को उ व ऊ मे ग पि ता को ना उ का हो को हो भ नि सु ध्या या य ति न व रा ज को
व च न सु मि गो मा ब्रा ह्म णि ले आ बा दे वि आ सु व सा लि ॥ हे पु त्र शि व स र्मा ब्रा ह्म णा भ नि ते
रा वा व को ना उ हो ॥ तं ग र्भ मा ह्म दे भि ध्या मा ग्न भ नि पर दे द ग या का आ ज स म्म प नि आ
इ पु गे न न् वा के रि का म ले व स्या का ह्म न् वा ह्म दे हे न भ नि क हि न् य ति गो मा ब्रा ह्म णि
ले भ न्या प छि न् व रा ज ब्रा ह्म णा भं ह न् ॥ हे मा ता उ सो भ या ति मि आ ता दे उ का हा व स्या
का ह्म न् क्वा का म ह्म म जा इ वि चार ग रि आ उ कु भ न्या र गो मा ब्रा ह्म णि भं हि न् ॥ हे पु त्र
ते गे मु ख हे रि ते रा वा वा ला इ वि श्व र ह्या ध्या भ व तं प नि छ णि ग या म क स्का उ धा र मा र
ऊ ला ॥ फे रि ते ग या प छि ते रि स्त्रि च न्द्रा व ति प नि व स्या हे न मा इ त जा न्या ह्म य स र्ध ले
जां कु भ नि न भ न् य ति गो मा ब्रा ह्म णि को व च न सु मि न व रा ज ब्रा ह्म णा फे रि भं ह न् ॥

॥ १०० ॥

श्लोक॥ उत्रस्य परमो धर्मः पित्रोऽङ्गारसमानः हि॥ पित्रोऽङ्गारः न कुर्वन्ति येन च स खमिच्छते॥ १॥
 स चाति नरके घोरे याचुन्मा कमेदिनि॥ २॥ हे माता छोरा को डलो धर्म का को भन्या पितृ उद्धार
 गनुं जो छोरा ले नगरि सुख भोग पछिला गोस त्यो जा हा सम चन्द सुख रह न न जा हा
 सम ए धिर रु ला ता हा सम अघोर न क मा प ला म गर्भ मा ह दे ग या का मे रा पि ता मे रा यो
 उ मे र भ यो रु प नि आ ज स म्म आ य न न म्म कि जि या के ह न वि चार ग नी प छ म्म ह न भ
 न्या प नि नि श्र य ग रि क्रि या क र्म ग रि आ उ ला वा च्या का भ या स ग डा कि ल्या उ ला ते ति प नि ग
 रि न भ न्या म ज स्ता ले अ रु थो क का ग रु ला लोक रु रु ले अ प वा द ग न्या ह न म्म ज नि क
 न का ग नुं अ प डु इ मे ह क सै डु र व भ या प नि जो कु ति मो से वा ग न्या त त्रि उ ला रि ह दे ह ॥
 हे माता मजा उ कि भन्या र पति आ फ्र उत्र गु ज को वचन सुनि गो मा ब्राह्मणि संतोष भे

॥ स्वामी ॥

॥ १०१ ॥

हे प्रवर्तन धर्म र हे कर्म तेरा ते सो वचन सुनिम संतोष भन्ना ॥ जातेरा कल्याण हव सर वाचा
काभ पाप निमया काभ पाप नि तेरा वावा का व व र चा वी पा या सुभ नि क पाल मा हा त रा धि
आसिष दि इ न न वरा ज ब्राह्मण लेप नि आ भि प्र रु ता रि को आसिष दि र च रु इ सा हा ग प्र
रा म गरि अ क्रि सि च न्द्रा व ति ला इ जो चारु या को अ रु इ वा रु को व व र ग रा भ नि प र दे श ग
या ॥ शि व स र्मा जा उ ग मा का व ड ब्राह्मण दे व्या थ्ये कि भ नि स वै छे उ सो धि २ सर्वत्र वा जि हि
इ दे ग या य सा त र रु सि त जा दा २ ग गा का ती र मा रु धि आ भ्र म मा उ ग्गा ता रु व ड अव स्ता
भे या का ब्राह्मण उ इ सि उ रु ष ला इ दे व्या र ति मि रु रु को हो भा रु का न व सि र ह्या हो भ नि सो
ध्या र व ड ब्राह्मण ले ॥ हे वाल व रु मि ब्राह्मण उ व ड अव स्ता भ यो रु र स ग गा मा प्र रा त्या ग ग
रा ला भ नि ला रु प र रु त्या इ व स्या का हो भ नि क ह्यार ॥ हे वाल व त को ला सर भा रु का का म ले ॥

॥ १०२ ॥

आइसभनि सो ध्या र. नवराज भं क न॥ हे व द्रवा ल गा म प नि न व रा ज ना उ ग मा को वा ल गा
ऊ म ग र्भ मा क दै ग र्भा धान क र्म ग र्गा भ नि भि श्वा मा ग्न पर देश ग या का मे रा पि ता शि व स र्मा ना
उ ग मा का व द्रवा ल गा आ ऊ प नि फि रे न न र. व व र ग र्गा आ ना ति मि रु रु ले दे षा थौ कि भ न्या
रु य ति न व रा ज वा ल गा ले भ न्या प कि व द्रवा ल गा भं क न. शि व २॥ हे वा ल घ ले न व रा ज वा
ल गा ग र्भा धान क र्म ग र्गा भ नि भि श्वा मा ग्न आ या का च न्द्र जा ति न ग र का शि व स र्मा ना उ ग
मा का व द्रवा ल गा ला इ हा मि ले दे षा थौ ना हा आ या का धि या ग गा लान ग रि आ कृ नि
स र्ज जा ला इ फु ल टि प्र ते स रु ष मा च ल्या का रु ष का ला गा भा चि यो रु रु ष दे षि ष सि म्भ स भ
यो हा दु त आ ऊ स म्भ र लो के ला ला ता हा जा इ हे रु य ति व द्रवा ल गा ले भ न्या को स्र नि न
व रा ज वा ल गा ले रु ष मु नि हे र्गा ग या ॥ आ फा वा ड को ला ड दे षि ॥ हे पि ता मे रे नि मि से भि श्वा

॥ स्व. नी ॥

॥ १०३ ॥

माग्न ग या काति मिले मेरो मुख न देखिय तावन मा आइ रुष देखिष सिम सुभ यौ ॥ हे पिता अवयो
कृग मरुतारि छे उ जाइ म क सो गरि क रु ला मे रि म रुतारि ले सो क ग दी म क सो गरि रु जा उ ला हा
वा वा २ भ नि ना ना न रु ले सो क ग मार फेरि धै र्य भै ला इ सब व डु ला गरि ग मा ला ग सं स्कार ग
रे रु ब्राह्मण म जी दा ले द श क्रिया दि गरि अव क ता जा उ घ र जा उ भ न्या स पति छे न वि शेष यो
ष व रु कहि म रुतारि ले सो क ग मा को दे डु क य स र्थ ले रु न्या भ या रा जा को सेवा गरि के हि दु म
लि जा उ ला भ नि सरु र मा य सि रा जा को सेवा ग गो ला ग ॥ इ ति स्कं द प रा ने के दा र ख गे र मा घ म ल स्य
कु मार अ ग स्य सं वा दे शि व स र्मा ब्राह्मण पर देश ग मन ना म श्री स्व स्या नि पर मे श्व र्णा क था पंच द
शो ध्या यः ॥ १५ ॥ हे अ ग स्य मु नि ता ल प्रो त न व रा ज ब्राह्मण आ फ्रा वा वा का ष व र ग या प छि न
व रा ज ब्राह्मण कि स्ति च न्दा व ति ब्राह्मणि ले आ फ्रि सा सु गो मा छे उ भ नि न ॥ हे मा ता मे रा मा

॥ १०३ ॥

इत न गया को धेरै दिन भयो तारा घा न लाइ अत्र छैन ला उन लाइ वस्तु छैन अर्की छेउ मा
वै मागि कति निर्वाला गरी ला यस अर्थ ले अलिक दिन मा इत वसि आउ ला त पाइ ले आऊ
जि या को घर को वरुनै संभार गऊ त मा छोरो आया पछि म लाइ डाकन पठाउऊ म गया प
छि एक पैट पालन ति मिलाइ पनि सजिलै लो ला म जो कु भनि आक्रि सा सु गो मा ब्राह्मण ला
इ प्रणाम गरि माइत गइ न॥ चन्द्रा वति ब्राह्मण ग या पछि गो मा ब्राह्मण ले आऊ लाइ दुःख
भया को देखि भिक्षु करूप श्री महा देव ले श्री पदिया को समि दुःखित भै भत्र ला गिन॥ सात वर्ष
कि ऊ दास जति वर्ष का उठा सित विभास भयो उपनि मि सा माग्न भनि गया का आरु फिरे न न छोरा
को सु ख ले रि दुःख विश्व र ह्या था छोरो पनि वाउ को व वर मा पर देश गयो उरु रिले पनि छाडि गे य
स्तो मा प मा मै ले जि या को धि कार हो॥ उस दिन मा म लाइ श्री पदि न्या भिक्षु करूप श्री महा देव र ह्या छ

अवस्ता

॥ स्व. श्री ॥
॥ १०४ ॥

न॥ हे जगदीश्वर मैले जानि नसो भगवत्समाग ~~रु~~ हे शशिसे वरतिमिला इकोटि २ नमस्कार कि
मला इ रक्षा गरु कि गोप्राण ले उभ नि यस्ता तरु ले गोमा वा हा गिले सधे आवा दे वि आ म् वसा
लिगे इ कर इ व ऊ लि ज ति भ इ हि न्न ला गि न् ॥ यो कृ रा कै ला स प र्व त मा पार्व ती ले चाल पा इ न् र
श्री म हा दे व का आ न न्द का स म य मा विं ति गर्ग ला गि न् ॥ हे स्वामि हे र २ गो मा वा हा गि को दुः ख
त्यो प नि त सि स्त्रि को ते सो गर्ग यो ग हे न म ला इ अ ति क रु गा भ यो ॥ हे द या सा गर ते स्को के हि उ
प का र ग रु कि ति मि ले आ ज्ञा दि या श्री स्व स्था नि पर मे श्व री को व्र त ग रा उ दुः ख का सा गर दे वि पा
र हो लि ॥ य ति पार्व ती की व च न मु नि श्री म हा दे व ले ते से गर भ नि आ ज्ञा ग या र पा र्व ती ले स ज क
षि ला इ रा कि ॥ हे कृ षि हो ति मि रु रु म र्त्त्य म रा उ ल मा जा उ र च न्द्र ज्यो ति न गर मा गो मा वा हा गि अ
ति दु खि छु ते श्वा इ श्री स्व स्था नि पर मे श्व री को व्र त ग रा इ आ उ स्व स्था नि पर मे श्व री का व्र त

॥ १०४ ॥

का प्रभाव ले गोमा ब्राह्मणों इ. ख का स उ इ दे वि पार हो लि भनि आह्वा इ संहरा व्रत विधि कहि
न॥ यति पार्वती आ ज्ञा ग मा को सु नि स प क ऋ षि रु रु ले रु व स भनि पार्वती का आ ज्ञा ले गोमा ब्रा
ह्मणों ला इ श्री स्व स्था नि पर मे श्वरी को व्रत गण उन भनि म म म ग ह ल मा ग या॥ चन्द्र ज्योति न ग
र मा उ गि स रु र वा हिर गो ठा ला के टा के टि रु रु ले उ चन्द्र ज्योति न ग र मा उ वि रु रु को रु भ
नि सो ध्या॥ यति स प क ऋ षि रु रु का व च न सु नि गो ठा ला के टा के टि रु रु ले॥ हे क षि हो चन्द्र ज्योति न
ग र मा त उ सा इ वि को लि छे न न स वै सु वि रु न॥ स रु र वा हिर गो मा ना उ ग मा कि ब्राह्मणों आ
ति इ वि रु न उ ला जा इ सु ध्या इ हे र भनि पर दे वा इ प ठा या स प क ऋ षि रु रु ले गोमा ब्राह्म
णों का घर गै ला क पा या गोमा ब्राह्मणों ले सु नि न र रु का क पा न्या को ले भनि वा हिर आ इ हे रि न
स प क ऋ षि रु रु ला इ दे वि प्र णा म ग रि भि त्र श किल गि पि रु का मा व स्र दि॥ हे क षि श्वर हो मे रा

॥ स्तनी ॥
॥ १०५ ॥

पर आ इ म य स्ति पा पि नि ला इ दर्शन दि यो ति सि रु रु मे रा पर आ उ दा म ला इ अ ति अ श्र य भ यो
का का म ले आ उ उ भ यो थो आ ना गर भ नि न य ति गो मा ब्रा ह्म गि ले भ न्या को ल नि स स कृ षि
रु रु भं छ न ॥ हे गो मा ब्रा ह्म गि ति मि अ ति इ र वि रु ना ले श्री लक्ष्म्या नि पर मे श्वरी को व्र त ग रा
उन आ मो ए क चि त्त भै स न स न्य यु ग मा हि मा ल य प र्व त की पु त्रि पार्व ती ले श्री म हा दे व स्वा
मि पा उ ना नि त्त ग या को व्र त सु न पा ष थ क्त र्गो मा को दि न दे वि व्र त आ रं भ गु र्ज र त गो डा
को न इ का टि ह्मा न ग रि ध चि भै ए क भ क्त र कि ए क चि त्त ग रि मै रू दि न स म्म नि त्त स म ध्या रु
का ल मो श्री म हा दे व का र जा ग र्ज मा घ थ क्त र्गो मा को दि न १०८ रो टि १०८ अ क्ष ता १०८ वे
लि उ ष १०८ ज ग्नि स त्र १०८ पा न् १०८ कु इ का स पा रि जा त २ का हू ल ना ना उ प चार त या
र ग रि अ सि मी उँ का र ले षि गंगा ज ल ले स्ना न ग रा उ उँ श्री ख रा उ च न्द न सि ह्म र पै ला उ उँ पू

॥ १०५ ॥

पदीप नैवेद्यमेवामिषाञ्च कस्तुरिवस्त्रभेदिचक्षुः उज्ज्वलस्य निपरमेश्वरी कोप्रजागर्भकथा
सुभ्रुअरुलाइ सुनाउज्ज्वलस्य चैकोहि नभया आफलैभंनु आफैलेसुभ्रुकदाचित्तचषीधनु
लाइ सुनाउज्ज्वलपकि उन्कामनाग रिआफलैवत्तगमाकोह मेरो फलानुकाम सिद्धव
सुभ्र निस्वस्थानि परमेश्वरी लाइ अर्घदिनु ध्यान जपस्तोत्रगर्भ श्रीस्वस्थानि परमेश्व
री कस्तुभम्भा ॥ हे गोमावास्त्राणि श्रुति ॥ श्लोक ॥ सुवर्णावर्णा दीप्तानां त्रिनेत्रां कमलाक्षना ॥
सिंहासनसमासीनां सर्वालंकारभूषिता ॥ १ ॥ नीलोत्पलभया वामे दक्षिणे वरदाभुजा ॥ ख
ड्गचर्मधरा चोर्ध्ववामे दक्षिणा शोकमात्र ॥ २ ॥ चतुर्भुजा तन्त्रप्रजयेष्वकीर्तना ॥ एवं
धात्वा मूलादेवीं स्वस्थानीं जगदीश्वरीम् ॥ ३ ॥ इति ध्यात्वा ॥ पीतवर्णा सुवर्णा चारुपानि दि
व्यभया किं त्रिनेत्रभया किं कमलकाकुलजे उज्जालो मुखभया किं नाजा अलंकारलिणा ॥

॥ स्वामी ॥
॥ १०६ ॥

किं स्वकुचमं वरनी लोस ललिया किं चारहा तभया किं ताहि मेरा पनि र जागर्नु भनि श्रीमहादे
वले आजाग्या कां छन ॥ यस्त जगदीश्वरी स्वस्थानि परे मे श्वरी को ध्यान गरि सोत्र पाठ गर्नु
श्लोक ॥ नमोस्तुते जन्माता स्वस्थानी सर्वमंगला ॥ तव प्रसाद देवे श्रीवृत्त मरी मम प्रभो ॥ १ ॥
हे जगन्माता हे स्वस्थानी परमेश्वरी हे संसार लोकलाइ मंगल गर्त आ प्रसाद ले मेरो व
त्त मरी भयो भनि प्रसाद ही कहु उनै भए नर सय मा रोटि अक्षता दवलि प्रष्ट जाति
सूत्र दान दहु इसु पारि दस गुण समेत आ फ्रास्वामिलाइ सो पनु पुरुष न भया छोरा
लाइ सो पनु छोरा न भया मिच्छो गलाइ स्वपनु मिच्छो रा पनि न भया मेरो फलानु काम सिद्ध
हु वस भनि गंगा माला गि वलाउनु सय रोटि आ फल फलाहार गर्नु गन्त मा जाय तर हुनु
तेति ग्या पछि स्वस्थानी परमेश्वरी का वत्त का प्रभाव लेत आ संसार दुख को ना स होला

॥ १०६ ॥

कामनासिद्धि होला प्रमाप कि कैलासवास होला यस्मा अन्येथान मान्या ॥ य सैव तकाप्र
भाव ले पार्वती ले श्री महादेव स्तामि पा इधि नः अवलामि जं ह्यो भनियति सप्त ऋषि रु रु ले
व्रत विधिक ह्या प कि गो मा वा स्त गि ले मन मा आनन्द ग रि ॥ हे ऋषि भव रु हा ति मि रु रु का रु पा
ले श्री स्वस्थानि परमेश्वरी को व्रत विधि सु तिस का म य स्ति पा पि नि मे रा पर मा के रु व रु रु के न
का ले आ दर ग रु दो का न दे वि पा न लि आ उ कु त व जा लु हो ला भ नि च र्वा मा र ह्या को धा गो को ल
रि या लि पर दे वि नि स्ति न ॥ ता हा प कि स प ऋषि रु रु ले गो मा वा स्त गि को दुःख दे वि व रो द
या भ यो र सा त उ रा रु न को को डि पि रु का मु नि हा डि स्त गि मा ग या ॥ इ ति श्री स्कंद पुराण के
दार रु व रो मा घ मा हा त्म्य रु मा र अ ग स्त स वा दे स न ऋषि रु त श्री स्वस्थानि व्रत उपदे
श नाम श्री स्वस्थानी परमेश्वरी कथा षोडशो ध्या यः ॥ १८ ॥ ता हा मा त गो मा वा स्त गि धा

॥ स्वप्नी ॥

॥ १०१ ॥

गा को ल रिया लि चन्द्र जोति नगर मा वरहिका घर गे हे वरहि मेरा घर मा सप्त कृषि रु स आ
या का छन तिन लाइ धान दिन यति धा गा को पान किन्ने दे भनि नर यति गो मा ब्राह्मणि
ले भन्या को वचन सुनि वरहि ले ॥ हे गो मा ब्राह्मणि पान न कनि छन जति भया को सेवे
हि जै वेचि सक्या न पस्या या हे र भनि छो पिरा व्या को पान को पिचा देषा या पिचा भरि पा
न भै र ह्या को देषो ॥ त्या देषि यो क्या आश्रय होय सु पिचा मा रा व्या को पान सेवे हि जै वेचि
सक्या था आज कता वाट आयो गो मा ब्राह्मणि ले मेरा घर मा सप्त कृषि आया का छन
तिन लाइ धान दिन भं पिन् कृषि रु रु लाइ धान दिन भन्ना का प्रभाव ले य शो भयो
कि भनि वरु तै सम मानि ॥ हे गो मा ब्राह्मणि सेवे पान हि जै वेचि सक्या था तिमिले स
प्त कृषि रु रु लाइ धान भन्ना का प्रभाव ले न भया का पान पनि भै गे या तिमि धन्य रहि ।

॥ १०१ ॥

हो अवस्यो धा गो मलि अ पान लगि कृषि रु रु ला इ पान दे उ भ नि पान त्वा ग सु पारि स
मे त दि यो र गो मा वा ह्मि ले मन मा आन न्द मे पान सु पारि त्वा ग लि प र आ उ दा स फ
कृषि रु रु ला इ इ षि न न्द मन मा वि ब्या त ग रि अ रु थो क न भ या प नि कृषि रु रु ला इ प
न दि उ ला भ न्या को गे ग या क न प्र धि का र र ह्या कृ भ नि सो क ग रा ला जि न् ॥ धे रे वे र प दि
रा त मा कृ चो लि पि रु का उ ठा इ व टा रु भ न्दा कृषि रु रु ले छा डि ग या का सा त उ डा सु न का को
ग दे षि न्द मन मा प नि उ प र कृषि रु रु ले रु पा ग मा कृ न्द भ नि त्यो डु व लि कृषि रु रु ले क ह्दा
रु पा ष ड क पू र्ण मा का दि न दे षि रा त गो रा का न रु का टि स्म न ग रि अ चि मे एक भ क्त र हि
ए क चि न ग रि नि त्प म ध्या रु का ल मा श्री म हा दे व का ह्म जा ग रि रा त प नि मा त्रे को हि न रु
ना ले आ कृ वि ष्या उ ना मा च र्वा वे टा ध उ मु र्वा जि रा षि श्री स्व स्या नि प र मे श्व री को क था

॥ स्व. श्री ॥
॥ १०८ ॥

कहि धि न ॥ ते सो ग र्द च न्द्र ज्योति न गर का गो ठ ला के ट के टिले स न्द्र म्पार घ र का भि न्ना चा ति चि
वन ला ग्ग व छ्या न मा च र्ण वै द ध न्द्र उ र्वां जि रा धि य जै क रा इ र ह्या की दे व्पार गो मा ब्रा ह्म रि
छ उ जा इ ॥ हे गो ब्रा ह्म रि ति मि ला इ क्वा भ यो र र ह्ये ते सो गरि क रा उ छे उ भ नि सो ध्या य ति
गो ठ ला के ट के टिले भ न्पा के स न्द्र गो मा ब्रा ह्म रि क हं छि न ॥ हे वाल ष्म ण्य दे वि द या ग रि स
म क्क षि रु रु आ इ श्री स्व म्पानि प र भे श्व री की व्र त ग र भ नि व्र त वि क था ला स न्द्र ना इ ग या
सो रि क था ला क ह्या को हो ॥ म ला इ रोग भ या को प नि छे न व ड ला या कि प नि छे न स न्द्र ना को
हि न ऊ ना ले व छ्या न च र्ण वै द ध न्द्र ला इ स न्द्र ना उ क्क य ति गो मा ब्रा ह्म रि ले भ न्पा का व च न स
नि गो ठ ला के ट के टिले आ ऊ र ले दि सो धान भ नि ल ग्ग का अ न्द्र छा डि ग या य सौ त र रु ले
स र्वे जा इ गो मा ब्रा ह्म रि ले क ह्या का क था स न्द्र ना ज्वा भ या को प नि ल ग्गि दि न्द्रा स्व म्पानि प र

॥ १०८ ॥

मेश्वरी का व्रत का प्रभाव ले जो ठाला के टा के टिरु रु का गा इला इ टा टा गै पां सषो जन परे न
न जी के पा उन ला गा मे मा वा स गि ला इ प नि अ न व स इ व्य ऊ दे ग यो ॥ ता हा यो त मे ला दि
न भ यो र मा घ भु ल द र्श मा का दिन सं द र्श सा मा ग ट त या र ग रि स क चित्त मे स्व स्थानी पर मे
श्वरी को दू जा ध्या न ग रि न् रु त मा अ र्घ पा त्र लि ॥ हे स्व स्थानि पर मे श्वरी मे रो प्र जा दे वि सं
लो ष भै म ला इ य स दु ख रु पि स मु द दे वि पा र ग र फे रि मे श पु त्र न व रा ज आ फ्रा वा वा का व
व र मा ग या को चा डे आ इ पु को स ॥ हे नि रं ज फे रि म ला इ ज ग दि श्व र श्री म हा दे व ले भि श्च क
रु प भै इ म्ब रु का श ब ले श्रा प दि या को ना स रु व स ॥ हे नि रा का रु फे रि मे रो पु त्र न व रा ज ला
इ रु म ला इ प नि हि त मा व ले य स लो क मा स रु व सं प ति दि पर लो क मा ति त्रा च र शा क म
ल मा वा स दे उ ॥ हे क रु गा म य ति त्रा ज प ध्या न स र्व भै रा ह द मा र हो स ॥ हे ज ग दी श्व र

॥ त्वनी ॥

॥ १५५ ॥

यो ब्रह्मा राउ संसार मा भृष्टि स्थिति संसार कर्ता ब्रह्मा विष्णु महादेव भन्ना का आदि अंत्य न
भया का य सा स्वस्थानि परमेश्वरी ति मिला इ कोटि २ न मस्कार ॥ के पि जा क धा रि ति म्ना महि
मा ग शा अ नंत मूर्ति विष्णु भया शेष नाग भया सरस्वती भद्र न इ न रु रु ले प नि न सका
को म ज सा ले का सकला भ निस्तुति ग रि अ र्घ दि इ न ॥ अ र्घ दि स कि कोटि २ न मस्कार
ग रि प्र सा द कि कि भि त्र गै अ हो ते र स य मा रो टि ८ अ क्ष ता ८ वेलि पु ष्य ८ ज गि सु त्र ८ पा
न ८ कु इ का सु पा रि ८ स गु रा स मे त यो मे शे पु त्र न व रा ज ला इ भ नि पर सारि स य रो टि
आ फ्र ले फ ला हा र ग रि न रा त भ या रु इ श्वरी म न ले स म्कि जा य त भै रहि म् ॥ ते सै दि
न मा धै रै रा त ग या प दि स्व स्थानि परमेश्वरी का प्र त का प्र भा व ले न व रा ज वा ला रा आ
इ उ ग्गा वा हि र व सि हा क पा या ॥ गा मा वा ला रा ले आ फ्र पु त्र न व रा ज को वा लि चि चि चि

॥ १५५ ॥

हे उठिवाहिर आइ गो डाधुन लाइ भिउडा किल गि नर वडा मी तिले काष मारा वि॥ हे उ
त्र कसल छ स ते रावा वा को घ वर का छ भनि स्व धि नर न वरा ज वा ल रा क ह ह न
॥ हे माता भिशा मान गया कामे रापिना गंगा का तीर माऊ वि आश्रम माउ गिनि स
जा गरी क वि आश्रम मा पसि सुव च टि हल टि प्रलादा रुष का लागा भा विव सिम मा
क न म लाइ ह व वा ल रा ले क ह्यार रुष भुनि हे न जादा हा रु र ह्यार के र हे ह र गंगा का
तिर माल गि संकार गया अ दार व क क्रिया कार्य प नि ग रि दि आ॥ च र जाउ भनि आउ
दा घर को दुख समि उ सै क सो रि जाउ भनि सह र मा व सि रा जा को से वा ग मां रा जा ले के
हि इव दियार अ हिले ति मा च र रा मा आ ला॥ हे माता भनि न वरा ज वा ल रा ले क ह्यार
गो मा वा ल रा व रु ते अ धै र्य भै नि वि वे कि वि धा ले स न रि व र्ष का उठा सिन सात व र्ष

॥स्वप्नी॥

॥११०॥

काउमेरमाविभा हा ग रा यो. यो अजो गग मा. य सा मे रा ज्यौ व न मा पु रु ष मारि दि या ॥ हे स्वा
मि भिक्षा माग्न भनि गया का ति मिले मला इ य सा अ व सा मा पा रि म ला इ स कै छा डि क ता
ग यौ ॥ हे ना थ ति मि वि ना मै मा रा क सो ग रि रु ला जा का ति मि ग जौ ता हा म ला इ य नि
ले जा उ भ ति रु ष इ ल द मै भु मि मा य रि ना ना ते रु ले सो क ग री ला गि न्. त व न व रा
ज वा ल रा भं छ न ॥ हे मा ता ते सो न ग र यो सं सार य सै छ ज भि क न को म र्दे न. एक फे रा
स व ले म र्ज प के य स र्थ ले सो क न ग र. छा डि दे उ मे रो मु ख हे रि रु ॥ त भि रु ला रि च चो व
ति का हा छे य ति दि न स म्प ति मि रु रु ले का षा इ र ह्यौ ति मि य नि य ति वे ला स म्प न सु
ति का ग थो. फ ल रु ल च च न धू प ना ना सु ग भ्वा को वा स आ उ छ का का म ग यो त्यो आ
जा ग रु य ति आ कु पु च न व रा ज को व च न सु नि गो मा वा ल गि ले धै र्य ग रि न व रा ज वा

॥११०॥

सगला इ॥ हे पुत्र था कि कन आइ सुभो क लागे को केहि घाभ निघान दिया साइ सका
र॥ हे पुत्र न वराज ते रिखि वन्दा वति तंग या का इइ दिन पछि तिमा को रो आउ न वि
निकै गु कन पछाया भनि माइ तंग रहि छ तें कै हे आइ उ कला सभ नि स भि इः खग रि र ह्य
कि थि आः सप्त क्र विरु रु आइ मे रा इः ख दे वि व डि द या गरि श्री स्व स्थानी पर मे श्वरी
को वत गर ते रा इख को ना स को ला इछा मि डि को ला भनि उप देश गया उन्का उप द
स ले मे रो पुत्र न वराज चोडा आइ उ को सः इः ख को ना स रु व सभ नि स्व स्थानी पर मे श्वरी
रि को वत गया को मे ला दिन भयो आज वत स री भ यो रा जा प्र तर ह्य कि थि आ अवत
ला इ प्र नि उन्का म हि मा कहि सु ना उ छ रु क चित्त मे सु न॥ य शो क मा सु ख संपति ण
इ पर लोक मा मा भ हो ला भ नि स री क था कहि सु ना इ नः उ ज्जा लो प नि भ यो र न

॥ स्व. नी ॥

॥ १११ ॥

वराज ब्राह्मण ले भन्या ॥ हे माता तिमि धन्य रहि छौ यस्त श्री स्वस्थानिको व्रत गर्त भय छौ म सं
तोष भन्ना अ व म गंगा मा स्नान गरि आउ भनि आक्रि मरुतारि गो मा का पाउ मा शिर रा
धि स्नान गरि भनि गंगा मा गया ॥ गंगा मा पुनि स्नान गरि से ध्या न प र ग गरि सकि श्री हरि ह
र का पूजा गमा गो मा ब्राह्मण ले गमा का स्वस्थानि पर मे भुरिका व्रत का प्रभा व ले गंगा दे वि
हरि हर प्रत्यक्ष भै ॥ हे नवराज ब्राह्मण ते रि मरुतारि गो मा ब्राह्मण ले गमा को स्वस्थानि प
र मे भुरी को व्रत को प्रभाव ले लुमि से तोष भन्नु वर दान ले ॥ ए स गंगा दे वि द क्षि रा दिसा
मा रा व रा प दे द्रु द ता को राजा छै न न ॥ लज्जिला इ सु व रा क ल स फूल का माला दि रा जा
षो ज न ला ग्य को छ तं उ ला जा र लामि ले लज्जि छे उ प्र वे स भै रा जे वि वि शेष दि उ ला रा ज
को ला स भन्या ॥ यति श्री हरि हर ले आ ज्ञा गमा को सु नि न वराज ब्राह्मण ले मन मा आ न

॥ १११ ॥

नृपैस्तुतिगर्शलागा ॥ श्लोक ॥ यो सौ शंख कपाल भूषित करो मालास्थि मालाधरो देवो द्यौ
रवतिश्मशाननिलयो नागारिगो वारुनो ॥ दिव्यशौ वलिदक्षयज्ञमथनो मेघादिशज
प्रभो पापं नो हरतां प्रदा हरि हरौ श्रीशैलजा वल्लभौ ॥ १ ॥ हे श्रीरुशीरु रत्ना तमा शंख कपा
ललियाका वनमाला अस्थिमाला याका दिव्यस्वरूप भयाका दारिका दमशान मावस्था का
लक्ष्मी पार्वती किं स्वाभिभयाका यस्तातिमिले मेरा पाप हर शा गरि देउ प्रदेष्टि दया गरि
तिमिले अथाथ नैरद्या का मला इदं न दियौ मधन्य रद्या कुं प्रेरि मरुतारि को गर्भ मा
वासलिया को साफल्य भयो ॥ हे भक्तत्सल तिमिकस्ता भन्या दुष्ट को ना सगरि साधु जन
को रक्षा गरि रक्ष्या यस्तातिमिला इकोटि २ न मस्का रत्न प्रा मदि मागर्श रुज्जार जिभ्रा
भयाका शेष नाग को पनि गम्य के न मेरो कसो गरि गम्य को ला सधै तिच्चा भक्ति मा मेरो ॥

॥ स्वामी ॥
॥ १११ ॥

चित्तला गोमभनिना नास्तुतिगम्यारुहिरुहरेतर्धनभयां ॥ सोनवरजब्राह्मणालेश्री
रुहिरुहरेदर्शनपायापछिसूर्यकाजसोतेजभैपरगयातेस्तातेजभयाकानवरजब्राह्म
णालाइगोमाब्राह्मणीलेदेधिआश्चर्यमानि ॥ हेप्रचआजतंतअतितेजवनकसतेसैहो
किमेराचित्तभ्रांतिभयोकिमेलेदेघदातदेवताकाराजाइन्दुचाहिपनिमुन्दरछसूर्य
तिआक्रिमहत्तारिकोवचनसुनिनवरजब्राह्मणाले ॥ हेमाताभनिह्यानगराजादागे
गादेधिश्चिरुहिरुहरेप्रत्यक्षभयाकाकुरारावरादेशराजाहोलासभनिवरदानदियाका
कुरावनीतकल्या ॥ तस्मात्तपस्याकाप्रभावलेमयसोभनाभनिकल्यायतिनवरजब्रा
ह्मणालेकल्याकाकुरासुनिगोमाब्राह्मणिउसिभै ॥ हेप्रचतंचाडोआवसभनिसव्यानिप
रमेश्वरीकोवतगम्याथात्रिमातंआइप्रगिसरतलाइप्रसादराचिदियाकोहलायसा

॥ १११ ॥

स्वस्थानी परमेश्वरी लेक त्या गागरु तें पत्रि सधै उक्ता भक्ति माचित लाया सभ निस्वस्थानी
नी परमेश्वरी को प्रसाद रोटि प अक्षता प वेलि पुष्प पत्रि सुत्र पान प ड्ड का सु पारि प
सुगु गा समेत सो पित॥ हे पुत्र अवतें श्री हरि हर का आजाले रा वराप देश जा रा वराप देश
को रा जा भया सैनिक पाल माहा तरा वि आसि प दि इन्द्र न वरा ज वास रा ले प निरु व सभ
निगो मा वास शिला इ सा कंग प्र गा मग रिरा वराप देश जान भ निगया ॥ हे अगस्त्य मुनि
भ नि कुमार लेक त्या भ नि वास रा ले आजगं या ॥ इति श्री स्कंद पुराण के दार ख रोड माघ
महात्म्य कुमार अगस्त्य संवा दे गो मा वास शि श्री स्वस्थानि वत कृत स्वस्थानि परमेश्वरी
कथा सप्त दशो ध्याय ॥ १७ ॥ ता हा प्रो तरा वराप देश मा मंत्रि रु रु ले कानि ला इ सुवरी कल
स फल को माला दि रा जा पो जन लागिर ह्या थालो क रु रु ले नाना वस्त्र अलंकार प हरि रा जा प

॥ सत्री ॥
॥ ११३ ॥

निहोइ जाला कि भनि कान्तिकान गीच भै अघि पछि हि चला गा न वराज बाल गा पनि पुणार
पाटि माव सि है थ्या ते सा सम य मा रु रिर रले कान्ति के उप वे स भै न वराज बाल गा को न गीच मा
जा इ फल का मा ला गला मा ला इ दि सु वरा कल सले अभिशेष गमा लो दे वि लो क ला क रु रु
ले ॥ हे लोक लो यो कान्ति व ऊ ला य के य स दे हा मा भ त्रि य को हि के न नर य सा बाल गा ला इ अ
भि शेष गमा भ न्या क सै ले यो कान्ति व ऊ ला या को लो इ न ति मि रु रु व ऊ ला यो उ ख ले न तो
त्या प नि कान्ति दे व ते लो इ न क्वा बाल गा भ या प नि स त्रि य भ या प नि वै श भ या प नि इ द्र
भ या ॥ ॥ प नि उ क्त प स्या ले भ यो वि ना श्री ना रा य गा का अं स ले रा जा ऊ न पा इ न रु क्वा ॥
हे सर्व लो च प ला गि व स भ न्या ॥ ता रा यो ल रु रिर रु र प्र वे श भै र द्या का कान्ति ले न वराज बाल
गा ला इ सु इ ले आ कृ ण्म स्य ल मा रा वि दे वार मा ले ग यो ॥ मंत्रि रु रु ले यो हि त ले ना ना व

॥ ११३ ॥

स्व अलंकार रत्ना इषे शा इ सं प्र सा मा गृ त या र ग रि पू र्ण घ ट अ ह मे ग ल ना ना मं ग ल जा
त्रा ग रि म्बु दि न ठ रु रा इ तै से स रु र का रा जा की उ त्ति रा व रा व ति ना उ ग या कि वि धि पू र्व
क मि त न व रा ज वा स रा ला इ कं न्या दा न दि या के न्या दा न ग रि स कि ॥ हे म हा रा ज अ व अ भि
हो क दि न प र्ण कृ सा म गृ प नि त या र रु सु दि न ठ रु रा इ अ भि हो ष लि उ रु व स भ न्या य ति
मं त्रि रु रु प्रो हि त ले भ न्या का व च न सु नि रा जा भ क्त ॥ हे मं त्रि रु रु प्रो हि त वि ना मे रि
म रु ता रि ले अ भि हो ष न दि क शो ग लि लि उ च न्द्र ज्यो ति न ग र मा स रु र वा हि रु ए क घ र
तु ल्या या को कृ ता रा गो सा ना उ ग या कि वा स रा ला इ न ति मे रि म रु ता रि उ न्द्र चा है लि न प ठा
इ दे उ य ति रा जा ले भ न्या य कि मं त्रि ले म जां कृ भ नि पा त्कि ना ना व स्तु अ लं का र फौ ज स मे
त लि च न्द्र ज्यो ति न ग र मा ग या ॥ गो मा वा स रा ला इ भे टि य रा म ग रि ॥ हे म हा रा नि ति म्ना

॥स्वः॥
॥११४॥

उचनवराजवास्तारावरादेशकाराजाभयाप्रउत्कामेविहंतिमिलाइलिनपठायारआ
भायोवस्तुअलंकारपात्कि लायाकोहलेउचाहोआउभयारयतिमंत्रिकावचनसुनिगो
मावास्तारिलेमनमाआनन्दगरिमंत्रिले लग्नाकावस्तुअलंकारपैकिपात्किमावसिराव
शेषदेशजानभनिगइन्॥चन्द्रजातिनगरकास्त्रिरुलेचालपायारहेर्गभनिकसे
काकपालकाकेडाफुकाकाकेसेकापकाकेछेउफुकाकायस्तानरहलेरुत्पताइकननि
स्व॥पात्किमावसिफोदसनेतगयाकिगोमावास्तारिलाइदेविहेरस्त्रिजातिभयापनि
ऊदेनकस्तोभागपगोमावास्तारिलेसधैधागोकातिअकीकोठिकिजातोगरिजिविकाग
रिरहंथिन्आजराजिभइन्रपात्किमावहिंगइन्धन्यविधाताकोलेषनुभनिआफुस्मा
वोलनलागा॥गोमावास्तारिताकादेविजाइरावरादेशकानगीचमाप्रगिनरनवराजराजा

॥११४॥

लेचाल पाया ररुतिपोडा रथ लगी जी दवा घगरिसि इरजात्राग रिदवी रमा प्रवेशग राइ सांछंग
परा मग ॥ हे मा ताति आत पस्मा ले श्री हरि रु रका कपाले मरा व राप दे हाकाग जा भन्ना धन्यस्त
आत पस्मा मे रोभाप. अ व अभि शेष पति दे उ भन्या र पति न वरा ज रा जा का व च न सु नि
गि मा गति ले लो भ नि सु दि न ट रु रा इ सु न का सिं रु सान मा व सग लि न वरा ज रा जा रा ग व
राप वति रा नि ला इ वि धि पूर्व क सि त रा ज्या वि शेष दि इ न ॥ रा ज्या वि शेष गरि स व्या प छि १
रु प्रो हित वा स्म रा रु रु ला इ भौ जन ग रा इ द क्षि रा दि वि दा गरि प ठा या रु हा ति पो डा र थ त
या र गरि जी द वा घ की र्त न अ ने क च म त्का र रा रि फौ द स मे त जा त्रा ग रि द वी र ग या आ
म्रा सु र व पूर्व क अ ने क तर रु का भौ ग गरि रा ज्य ग दी भ या ॥ इ ति स्कंद उ रा ग के दा र व रा
मा घ मा हा त्म कु मा र अ ग स्त सं वा दे न व रा ज रा ज्या भि शेष ना म श्री स्व स्या नि प मे श्व र्या

॥ स्व. श्री ॥
॥ ११५ ॥

कथा अष्टादशो ध्यायः ॥ ११ ॥ तारुप्रोत हे अगस्त्य मुनि एक दिन नवराजराजाले आश्रित रहतारि
गोमा मरुगानि केउ ॥ हे माता इश्वरी का रूप लेख मित्राणा आइराजा भूभू भव आश्रित जेमा जति
भयाका ब्राह्मणाला इडा कि ब्रह्म भोजन गराउ आश्रित पूर्व क दक्षिणा पतिदिउ य स जन्म मादान धर्मग
या अर्क जन्म मापा उला यति नवराजराजाले भन्या पछि गोमा मरुगानि भंछिन ॥ हे पुत्र तेले
भलो भनि सधर्म माचित लाइस ॥ मंत्रि छे उभनि साम्राज्य तयार गणालाया ब्राह्मणाला इ
निमंत्रण गरी पठाया चन्द्र ज्योति नगर का तेरा सगिरु रूप निडा कउ पठा फेरिते रिस्त्रि
चन्द्रा वतिला इ पतिग कन पठा मा इत गया कि छ यति गोमा मरुगानि ले भन्या का वचन
सुनि नवराजराजाले रुव स भनि मंत्रि रुला इडा कि ॥ हे मंत्रि लोहा मारा जेमा जति भया
का ब्राह्मणाला इ भोजन दि कु सागृत तयार गर ब्राह्मणाला इ पति निमंत्रण गरी पठाउ

॥ ११५ ॥

चन्द्र ज्योतिनगर कामेश सगिरु रूप निराकन पठ फेरि वरुणा प्ररका अग्निस्वामिना उगा
या का वास्वरा कुम्भ त्रिनि पत्रि चन्द्रावतिना उगमाकि ब्राह्मणि मेरि स्थि को लिन पठा इ दे उ मेरा
सासु ससरा दु वे स्थि पुरुष ला इ पति तन्ना जुवा निन वरा ज ब्राह्मरा वराप देश कोरा जा भया आ
जका चार दिन मा भ्राता आइ उ कुम्भ नि आ हा इ पठाया यतिन वरा जरा जा का वचन सु
त्रि मे विरु रु ले रु व सुभ निरा वराप देश का समिप मा जति भया का ब्राह्मरा स वै ला इ नि
मंत्रणा पठाया साभा गृत या रग रि चन्द्र ज्योतिनगर मान वरा जरा जा का सगिरु रु ला इ प
नि रा कन पठाया ॥ चन्द्रावति ब्राह्मणि ला इ लिन डोल्या रु रु व दया न वरा जरा जा ले आ
जाग या को कुरा अहा इ वरुणा पूर पठाया ॥ डोल्या रु रूप नि वरुणा पूर मा पु गि कन अ
ग्निस्वामि ब्राह्मरा को घर कुम्भ हो भनि सुधा उन लाणा क सै ले ते हि हो भनि चिह्ना इदि

॥ स्वप्नी ॥

॥ ११६ ॥

यार घर भित्रि गै हा कपाया चन्द्रावति बालाणि ज्या लमानि स्त्रिको हो का हा देखि आयो भनि
सुधा इन्द्रो त्या रुक रुक छन ॥ नवराज राजाले पठाया हा राव राप देश देखि आम्हू भन्यो
हरिचन्द्रावति बालाणि भंछिन ॥ हे भारवाह कति मिरु रुले नवराज राजा भनि आश्चर्य
गगनै कसो गरिजा भया स्या मला इक क भनि नरु हो त्या रुक रुक भंछन ॥ राव राप देश मारा
जान कदा हा निले इ सुवर्ण कल स फूल को माला दिरा जा वो जनला इ राष्या ध्यान नवराज
सरा चन्द्र ज्योतिनगर देखि आ इ हा निले रा जा वो ज्या को हे रा जा दा आ फुले पूर्व जन्म
मा गरि आया का तपस्या का प्रभावले हा निले फुले को माला गला माला इदि सुवर्ण कल
हाले अभि शेष गयो लोक रुक रुले द वार माला गिरा जा रु त्या या चन्द्रावति रा नि का रु
न व व र गरि दे उ चोडे ने गयो राजा हा मि देखि रिसा निऊ न्या कन यति हो त्या रुक रुको व

॥ ११६ ॥

चन सुनिचन्द्रा वति ब्राह्मणिले मन मा आनन्द ग रि चन्द्रा वति ना उग मा कि उन्कि सिमु मै ऊ
भनि न् ॥ तव हो ल्या रु रु ले चन्द्रा वति ब्राह्मणिले ला इ प्रणा म ग मा ॥ हे मरु ता रि उ सो भन्या चा हो
जा उ त मा वा वा मरु ता रि ला इ प नि आ ज का चार दि न मा आ इ उ क नु भ नि य ठा या को क रु मि ले
चि ह्या को छै न ति मि ले भ नि दे उ भ न्यो ॥ य ति हो ल्या रु रु को व च न सु नि चन्द्रा वति ब्राह्मणिले लो भ नि
चा हो मा धि जा इ आ फ्रा वा वा मरु ता रि छै उ जा इ ॥ हे मा ता पि ता भ नि न व रा ज वा ल रा रा जा भ या
का क रा आ फ्रा ला इ लि न प ठा या का क रा स व व न्तो त क ह्या ति मि रु रु ला इ प नि आ ज का चार दि न
मा आ इ उ क नु भ नि य ठा या को र हे छ आ ज्ञा दि या म जा दा ऊ भ नि न् ॥ य ति चन्द्रा वति का व च
न सु नि अ ग्नि स्वा मि ब्राह्मण रा उ सि भै ध न्ये मे रा उ वा नि न य रा ज मे रि उ त्रि चन्द्रा वति ध न्ये न व
रा ज रा जा भ या प छि मे रि उ त्रि प नि रा नि ऊं छै भ नि ना ना व स्र अ लं का र ल्या इ ॥ हे उ त्रि तै ले ज

॥ स्वामी ॥
॥ १११ ॥

अलि या को सा फ सभ भो विलं व न ग र चा हो जा भ नि वि द दि या च न्द्रा व ति ब्रा ह्म गि ले प नि रु व स भ नि
हो त्या रु रु ला इ षा न ल पि न दि वा वा म रु ता रि ला इ प्र गा म ग रि हो लि मा व सि आ क्रा हि म्पा कि स जी
सा ध सि त वि द भै रा व रा प दे श जा न भ नि ग इ न्द्र ॥ चं द्रा व ति ब्रा ह्म गि का स गि ती रु रु ले हे र २ ते स
च न्द्रा व ति ब्रा ह्म गि ले आ कृ प्र रु ष पर दे श प ठा इ दुःख प मा मा सा सु ला इ र कै छा दि मा इ त व सि र
हि धि ते सि अ प रा धि नि रा नि भै सु ख पा इ भ नि आ फ स्मा कृ रा ग र्ग ला ग्ना ॥ च न्द्रा व ति ब्रा ह्म गि
ता रु दे षि जा इ हु ला व न मा उ गि न्द्र ॥ क सो व न भ न्पा का हि म्पा ग इ त्या दि व न च रु स्त्रि प्र रु ष ले स
हि त भै सि त ल ठा उ मा व सि र ह्या का का हि रा न रुं स भा दि पं थि रु रु ले पो ष रि मा रे लि र ह्या का ना ना व क्ष
फल रु त ले स्व भा श मा न भै र ह्या का य स्मा व न मा उ ग्दा टा हे वा ट ता रु अ श रा रु रु ले श्री स्व स्या नि पर
मे श्व री को व्र त ग र्ग ला ग्ना को दे व्वा ॥ सो दे षि हो त्या रु रु ले ॥ हे म हा रा नि हा मि ला इ भो क ला ग्ना पर के

॥ ११२ ॥

हि पाया पाइ आउ कुतिमि एक भगनाहि वस भनि प्रधानिले डोलि थामि चन्द्रावति ब्राह्मणिलाइ ए
कै छाडि ताका कारहे कुभनि हे गी गरा ॥ असगले व्रत गरी लाग्नाको ठाउ रमा पुगिति का देव ताऊ र
यो व्रतको नाउ का हो तिमि रु रुको हो भनि सुधायार असगरु रुले ॥ हे मनुष्ये इ स्वस्थानि देव ताऊ
नर इ नै इश्वरी का व्रत गर्छौ हा मि स्वर्ग का अशराऊ भमि क ह्या यति असगरु रुका वचन सुनि डोल्या
रु रुले यो व्रत हा मिले पनि गर्छौ ऊँ छ कि भन्यारु असगरु रुले ऊँ छ भन्या त व डोल्या रु रुले मन माह
र्व भौ हा मि सग सामा गृ के हि छै नतिमि रु रुका संसर्ग मा व्रत गराउ भनि असगरु रुका संस
र्ग मा गरा ॥ अर्का का भार वो कि ज्या लालि रा व्या का दुव्य भेटि च रुया व्रत गरिस का पछि प्रसाद जि
कार असगरु रुले डोल्या रु रुलाइ ॥ हे मनुष्य हो जो मनुष्य ले स्वस्थानि परमेश्वरि को व्रत गरी
स्वस्थानि परमेश्वरी को कथा का कह ला सुन ला अथ वा उस्त कले पाइ घर मा राख ला ते स्का सं

॥ स्वप्नी ॥

॥ ११८ ॥

रा पाप दुःख दरिद्र शोक संताप नास ऊँ दे जाला अंसे काल मादि व दे रु भै कै ला समावसन पाउ ला ॥ हे म
नुष्ये वाट लागण का तिरु रु ले अतिश्रद्धा गरि व्रत गयो धन्य रह्यो श्री स्वस्थानि परमेश्वरी सदा तिमि
रु रु का हृदय माव सुन अव जाहं जान आया का को जाउ भ निप्रसाद दिया ॥ दो ल्या रु रु ले रु मि
जां को भ मि अक्षरा रु रु ला इ प्रणाम गरि चन्द्रावति ब्राह्मणि के उ आया अक्षरा रु रु प नि स्वर्ग
माग या भ नि दो ल्या रु रु ले भ न्या ॥ हे प्रकाश नि स्वर्ग का अक्षरा रु रु ले स्वस्थानि परमेश्वरी का व्र
त ग रा लागण का देखे रु रु का से सर्ग मा रु मि ले प नि व्रत गरि रह्यो रु विलम्ब ऊ न ग यो क्ष मा ग
रु ति मि ला इ प नि स्वस्थानि परमेश्वरी का प्रसाद ल्या इ दिया को रु ले उ भ न्या रु यति दो ल्या रु रु
का वचन सुनि चन्द्रावति ब्राह्मणि अति क्रोध भै लात २ आवाहे रि दा त कि टि ना ग ले नि स्वा स
ग हाँ रु रु के रा रु लि म ना रु नि रि सि दा रु रु ला स्वर रा ले गर्ज मान गरि ॥ हे पापि रु रु

॥ ११८ ॥

त्याहो मला इय सावन मास कै कारि व्रत गार्ग पछिला गि सः सेवक को धर्म सो होइन ॥ से
स व्रत लेति मिह रुला इषान दिव्या कृति राउ न दिव्या कृति सा स्वस्थानी परमेश्वरी भैया
को पनिका हा को देवता हो कागर्ग सकला ति मिह रुले मला इय गन्या को हो वन मा भ
यो इयो कागर्ग नत्र ति मिह रुला इमारि ह्या त्याधि मा ॥ कैले पुगला भनि रुत पता इक
न आया कि मला इ विलम्ब गरि दियो ॥ हे अराधि हो भनि ति मिह रुज सा ला इका भनु वी
दर कुइ दाऊ गरि कुटि गै डो त्या रुत का हा त देवि श्री स्वस्थानि परमेश्वरी को प्रसाद वो
सि ॥ थुग रिधु कि गो डाले कुल चि मि ल्ला इन् अव प्रनिय सै गरौ ला किचा डोले जा भ
निन् ॥ तव डो त्या रुत इरा इ आषा दे वि आसुष सालि कै हि पनि भन्नन सकि मन ले स्व
स्थानि परमेश्वरी सन्निच पला गि डो लि वी कि गया ॥ राव शपे देश कान गी च मा सालि

॥ स्वनी ॥

॥ १५३ ॥

ना उगया कि नदि मा आ धान नदि तरि सक दा श्री स्वस्थानि परमेश्वरी ला इति न्यागया कोऊ
ना ले अकस्मात् चोंदनी दा गण का जस्ता मे च भै असल प्रमान धारा पानि वस्यो हुलो वला स
आ योर चन्द्रावति ब्राह्मणि सालि नदिका मा ऊ मा डो लि दे धि व सि. डो ल्या हरु मा त्रे स्वस्था
नि परमेश्वरी का व्रत का प्रभाव ले पक्षि रूप भै कैला स पर्वत मा जाइ आनन्द ले शिव प्र
रि मार ह्या ॥ जो मनुष्य ले स्वस्थानी परमेश्वरी को व्रत गुलां त्या पद वि पा उ ला ॥ ना हा प्रान
चन्द्रावति ब्राह्मणि महा पात कि भै जलै त्रि परिरहि न ॥ जु न्दि न दे धि चन्द्रावति ब्रा
ह्मणि सालि नदि मा व सि धि न ले सै दिन दे धि सालि नदि व हि न न स्थिर भै रहि न मा
फिरु रु ले दे धार यो का आश्रय हो. यस दिन मा ग्रा हा आ इ व स्यो कि ग रा आ इ व स्यो. अ
थ वा देश मा के हि उ त्र पात ऊ न ला गा र य स्यो भ यो कि यो कुरो रा जा छे उ जा इ कह न्या

॥ १५३ ॥

लोभनिमतोगरि नवराजराजाके उजाइ ॥ हेमलाराजसालिनदिवरुदिनन स्थिरभैरव्या
कि कन तेसोभयाकाहामिलेसु न्याकोपनिधियन आज आषाले देखुं आश्रयभयो विचार
गउरुवस्रभनिविंतिगपारयतिमाजि हरकावचनसुनि नवराजराजाले लोभनिमंत्रि
लाइराकिमाजिहरुलेभन्याकाकराखनानकरिलोकसमेत भैसालिनदिमागया ॥ माजि
हरुलाइजलभिन्नकेहिजनवारककिजालहालिहेरभनिअहाया माजिहरुलेहवस्र
भनिजालहालिहेमारचन्द्रावतिबासगिजालमावलिआइन् ॥ चन्द्रावतिबासगिक
सिभयाकिथिइनभन्यादारीरमाकुहउपजिहातपाउवस्याकिअदिकेहिनभयाकिहि
लोलेछोपियाकिमूढापदजैपयाकियसिचन्द्रावतिबासगिलाइदधियोवस्तुकाहेभ
निठरुशउननसकिनदिकाकिनारापाषामालगिमित्काइदिया ॥ फेरिजलभिन्नपसिरा

॥ स्वः ॥
॥ १२० ॥

तलालिषो ज नला गण केहिया पन नर ॥ हे मलारा जलालि ले केहि पाठ न सके न भनि विंति ग्या
पतिमालि रु रु ले भन्या पछि न वरा जरा जाले ॥ हे गंगा तिमिक्या न स्पीर भै र ह्या को मै ले जा न
सके न भ देषिय स भ लौ भ नि कृत मा अर्घ पात्र लि पा रो न वर न स हित ग रि गा इ का इ
द ले अर्घ ग या ग जाले अर्घ ग नि मात्रे सालि न दि वहि ग इ न ॥ तौ देषि न वरा जरा जाले
आश्वर्य मा नि लोक स मै त भै द वार ग या ॥ च न्द्रा वति वा क्ष रा क्ष रा मा चे हा ऊ न्या क्ष रा
मा उर्ध्व ऊ न्या क्ष रा मा त वा ऊ न्या क्ष रा मा धु धा ऊ न्या य सा त र रु ले मल क कृ ग रि सालि
न दि का ति र मा परि र हि न ॥ एक दिन सा है भो क ला गि र वा न्या क्रो के हि न पा उ दा तै प नि
षा उ भ नि मा टो का त मा लि इ न स्पो मा टो प त्थ र भै ग यो प त्थ र प नि षा उ भ नि षा न ला ग दा
रा इ भै ग यो स्व स्था नी पर मे श्व री ला इ निं दा ग या को पा प ले शित ता प भो क दे षि भ

॥ १२० ॥

या काना ना दुःख सहि रहि न॥ ता हा प्रान्त न वरा ज रा जा आ फ्रा रा ज्य मा जति भ या का सं
मरा ब्राह्मण ला इहा कि पू जा गरि अ द्वा पू र्व क दक्षिणा दि भोजन ग रा या॥ न व पू र
का ब्राह्मण इहा इय नि रा जा का ब्रह्म भोज वा न भ नि ते ते वा ट आ उ था चन्द्रा व ति वा
स रा दे वि न र ति मि रु रु को लो का हा जा न आ यो भ नि सु धा इ न ब्राह्मण रु रु ले हा मि
ब्राह्मण रु रा जा ले ब्रह्म भोज ग या नि मंत्र रा ग या का क रु भोज मा जा न आ भू भ न्या च
न्द्रा व ति ब्राह्मण भं छि न॥ हे ब्राह्मण हो पा च दिन दे वि मै ले के हि घा न पा या कि छे न ति
मि रु रु भोज मा जा न्या भ या म ला इ य नि के हि मा गि ल्या इ दि या पु रा ण हो ला म अ ना ध द
दि द या ग रा॥ य ति चन्द्रा व ति वा वा त ब्राह्मण ले भ न्या का क रु सु नि ब्राह्मण रु रु भं छ
न॥ हे पा पि नि अ हि ले य सै हो भ न्न स कि दैन का भ न्या रा जा ज सा का द वी र मा का

॥ स्वः ॥

॥ १२१ ॥

जानिक सोऊं क विरोध रुमि ब्राह्मण जानि लो न रु न्या क्र रो दिय त ल्या इ दि उ ला ल्या उ न न रु न्या क्र रो दिय
क सो ग रु ला य स र्थ ले तं आश्र ग रि न रु ह्य स र्थ ति च न्द्रा व ति ब्राह्मणि सि त क र ग रि ब्राह्मण रु रु रा
व ए प दे श ग या ॥ न व रा ज रा जाले सं प्र रा ब्राह्मण रु रु ला इ भो ज न ग रा इ द क्षि गा दि या भो ज
न ग रि स क्ता प कि न व रा ज रा जाला इ आ सि की द ग रि आ न न्द ले ब्राह्मण रु रु आ क्ता २ घ र ग या
ति न व ए र का क पि ल ना उ ग या का ब्राह्मण रु इ भो इ ले पा पि नि ले अ रु इ प ठा या को क र स म्पि य
से जा उ भ न्या सो पा पि नि ले आ सा ग रि रु ह्या कि हो लि के हि ले जा इ दि उ भ न्या क सो ग रि मा ग रु मि
ला इ लो भि रु ह्या रु भ न्न रु भ नि भु ख ले के हि भ न्न न स कि भो ज न ग या का ठा उ मा के ले जा न्या के ह
आ उ न्या ग र ला ग या ॥ ते सो ग या के गो मा म रु रा नि ले दे पि न रु भं डारि ला इ रा कि ॥ हे भं डारि हो ति ब्रा
ह्मण रु रु ले घा न पा य न कि सं तो व भ य न न सो ध भ नि रु रु भं डारि रु रु ले रु व स रु भ नि ब्राह्मण रु

॥ १२१ ॥

उजाइ॥ हे ब्राह्मण राहोति मिरुले वाजपायनो कि संतोष भयेन भनि सुधा या इक्षामया फेरि भो
जन गर भन्या ब्राह्मण राह रु भं रु ॥ हे भंडारि महराज का कपाले इक्षु पर्वक भोजन गयौ संतोष भ
न्यु रू मि भाला आउदा सा लिन दी का ती र मा शरी र मा ऊरु भया कि हा त पाउ व स्या कि य सति स्त्रि जाति
ले देखि रू का हा जो छौ भनि सो धि हा मि ले रा जा का व स भोज मा जा छौ भनि कह्यो ते भले ति मिरु रु भो
ज मा जा न्या भया मला इ प नि के हि मा गिला इ दि या पा च दिन देखि के हि घान पा या कि के न भनि भ
न्या अवय सै जा उ भन्या सो आ आ ग रि र ह्या कि हो लि के हि लै जा इ दि उ भन्या क सो ग रि मा गो भनि व सि
र ह्या ॥ यति ब्राह्मण राह रु ले भन्या को सु नि भंडारि गो मा म हारा नि छे उजाइ॥ हे महराज नि भनि ब्राह्म
ण राह रु ले भन्या का ऊरा ह नंत क ह्यो ॥ त व गो मा म हारा नि ले ति इ इ ब्राह्मण राह जति वो क न सका को अ
त्र दि हा र भनि आ हा इ न र भंडारि ले रु व स भनि भंडार मा जां दा रा ब्या का ठा उ मा के हि पा य न न

॥ स्वः श्री ॥
॥ १२२ ॥

वराजराजाको संहरा भयाको भंडार सुकिगयो सो देवि भंडारिले आश्चर्य मानि गोमा महरा निहे उजा
इति गिया ॥ हे महरा नि आश्चर्य भयो तेसा इ दिन भनि भंडार माहे री जा दा रा व्याकाठा उमा के हि के
न संहरा भंडार सुकिगयो अवकादि उभन्यार गोमा महरा नि लेय सा भंडा माको वचन सुनि भंडार
मा जा इहे रि न्दि न्याव सु के हि देवि ननर आऊ ला इ भनिय का इ रा व्याको भा तलि वा स रा के
उजा इ ॥ हे वा स रा को आश्चर्य भयो ते सा ना उ निर्मा ने राजा को संहरा भंडार सुकिगयो रा व्याको
ठा उमा के हि के न ये मा हरा नि ला इ प का इ रा व्याको भा त हल गि दे उ अरु थो क त के हि के न भनि
सा पि दि यार वा स रा रु रु व ऊ ते स र्म मानि त्यो भा त लि द वी र दे वि नि स्मृता ॥ वा स रा रु रु जानि मा
ने न वराजराजाको भंडार संहरा भयो जा हा २ ज्या ज्या २ रा व्याको थियो ता हा २ स वै ऊ रो दे वि यो भ
नि कुमार ले अगस्त्य मुनि ला इ क ह्या ॥ इति श्री स्कंद उरा गो के दार खराते माघ महात्म्य कुमार अग

॥ १२२ ॥

स्वसेवादेन वराजराजा ब्राह्मणभोजननाम श्री स्वस्वानी परमेश्वर्या कथा एकोनविंशोऽध्यायः
१५॥ तासां प्रोक्तं त्रिब्राह्मणारुरुतेति भातलिचन्द्रावति ब्राह्मणिके उगया चन्द्रावति ब्राह्मणिले
ब्राह्मणारुरुआयाका देवि मल्लोके हित्या इदिये किमनि सुधा इन्द्र ब्राह्मणारुरुते ॥ रूपा
पिनितं अत्रिपापिनिरहितं ॥ तैरेनिमित्तैरुमिला इअतिरम्य पयोः कसो भव्या तला इदि
नभनिरे दीराजाका संहरा भंडार सुकिगयो यति भातशानिला इराष्वाको रुरु कल्या इदि
याको कला भनि सोयिदिया चन्द्रावति ब्राह्मणिले त्यो भात पाउनि मात्रै भो कला गपाका ऊ
नाले चंडै बानत गार भ इन्द्र सो देवि ब्राह्मणारुरुते ॥ रूपापिनितैसा अवस्तामापरि
कनपनितला इधर्मकोचे गारुरुते नरु सुखधौ इषा तैरा अवस्ता देवि रुमिला इअ
तिकरुणा भयो तला इउपदेशादि कौ सुन ॥ निरजन निराकार श्री स्वस्वानी परमेश्वर

॥ स्व. नी ॥

॥ ११३ ॥

श्री को वल गमा सतंतु द्वार हो लि म्र वल रु त्या दि पा प ग मा को भ या प नि ना स हो ला भ नि उ प
देश ग रि आ का घ र ग या ॥ च न्द्रा व ति वा ल गि ले वा ल गारु रु ले उ ति भ नि ग या प कि व डा
क ह ले चा र पा उ हा त टै कि उ र व ध न भ नि सा लि न दि मा ग इ न्द्र च न्द्रा व ति वा ल गि ना नि मा त्र
सा लि न दि को ज ल सु कि ग यो सो दे वि च न्द्रा व ति वा ल गि ले ना ना त र रु ग रि रो इ क रा इ
मा धि आ इ उ धै न धो इ षा उ भ नि भा त हा त मा लि षा न भ नि ला ग द ष ग नि भ यो ष रा नि प
नि षा उ भं दा हु लो व ता स आ यो र उ डा इ दि यो ॥ सो दे वि रु व द ल्या जै ग रि उ मि मा प रि नू र्छा
भ इ न्द्र ॥ फे रि चे षा भ यो र मै ले का क र्म ग मा कु भ नि ना ना वि षा त ग रि दुःख का स उ ड मा इ वि
र हि न्द्र ॥ ता हा या त पौ ष अ रु र्मा को दि न भ यो र श्री स्व स्था नि प र मे श्व री को व त आ रं भ
ग रा भ नि स्व ग को अ स रा रु रु सा लि न दि मा आ इ ह्मा त ग रि व त आ रं भ ग रा ला ग्ना श्री सूर्य ला इ

॥ ११३ ॥

अर्घदिवालुवाकाशिवलिंगवनाइष्टजागशीलाग्याचन्द्रावतिलेदेविनरअशरु रुकान
गीचमागइस्वधिन॥ त्रिमिरु रुकोही देवताही किमनुष्यकोमपापिनिकाहिचल्लसक्तिन
कसेलेकेहिदिदेनषानपाउदिनअन्नदानदेउमकापापलेयसिभजाकसोगमाउझरु
लाभनिनरअशरु रुभेछन॥ हेपापिनीरामिस्वर्गकाअशरुअजपौवञ्जकसुशीमा
होश्रीस्वस्थानिपरमेस्वरीकोवृत्तआरंभगशीलाइहाननगशीआन॥ तेशअवसादेविहा
मिलाइअतिकरुणाभयोतपनियहिव्रतगरुसेष्टशीपापकोनासभैदुःखकासमुददेविपा
रुकोलिमपतिअशरु रुकावचनसुनिचन्द्रावतिमनमाभेछिनमैलेअरुषापतकेहिग
याकोपियनडोलाकरुलेलायाकोश्रीस्वस्थानिपरमेस्वरीकोप्रसादभेच्छामैलेअरुकारलेथ
थुगरिगोडालेऊलचिभित्काभाय्यातेहिपापलागोकोभाकाआइनदितदीडोलेदेविषसिपडिरहा

॥ स्वः श्री ॥
॥ ११५ ॥

हुं कपिल ब्राह्मणारुहलेपनि स्वस्थानि परमेश्वरी को व्रत गमा सभ निउ पदेश गरि गथाया इनेता
कहो आज अस गारुहलेपनि उ सै भन्या स्वस्थानि परमेश्वरी भन्या का देवता दुलार ह्य छन मनुष्य
ह अहंकार लेना सिद्ध र ह्य छन मैले पनि अहंकार गरी लेयो अवसा मापया अवम प नि स्वस्थानी प
रमेश्वरी को व्रत गर्नु भनि अस गारुहलेपनि उ विंति गरि न ॥ हे अस गारुहलेपनि रुहको रुपा भ
या म प नि स्वस्थानि परमेश्वरी को व्रत गर्नु भनि विधि क सो हो का गरी पछ आ जागर भनि चर
अस गारुहलेपनि ॥ हे पापिनि आज यो व्रत ले री मा हो आज देखि कान्त गोश कान्त काटि कान्त
न गरि उचि भै एक भक्त रहि मैला दिन सम्म नितै मध्याह्न काल मा श्री माहा देव का प्रजागर्भ स
का स्वस्थानि परमेश्वरी को कथा सुनुन सका म जले सम ऊठ मा पछ अहंकार री मा का दिन शे टि १०८
अक्षता १०८ वेलि उष्य १०८ जग्नि सुत्र १०८ पान १०८ ऊद सुषारि १०८ जात २ का हल त या र गरि

॥ ११५ ॥

आसिमीउँ कारलेघिगेगा जललेखानगण उनु श्रीखण्डरक्तचन्दनसिद्धरफलधूपदीपनै
वेद्यमेवाप्रिष्टावस्वभैटिकस्तुरिअचिरलावाचरुउनु एकचित्तगारिइजागर्त. सोत्रज
पध्यानगारिअर्घदिनु॥ हेइश्वरीभजिगामिवरदाममागभुरपसादहिकनुउनैअद्योत्तरस
यमारोटिअक्षता^{देहिउष}जितिसुत्रपावदुहुइकासुपारिदसगुगासमेतआफाप्ररुबलाइसो
पनुपुरुषनभयाहोरालाइसोपनुछोनभयामित्छोरालाइसोपनुमित्छोरपनिनभयाउ
कामनालेआफलेवसगमाकोछसोकामनापूर्णवसभनिगेगामालगिवहाउनुसयरीदिआ
फलेफलाहोरगर्तगविमाजाग्रतगर्तयतिगयापछितेरोसंप्रणीपापकोनासभैदुःखदेघिपार
होलिसुयस्याअन्यथानमान्यास॥ हेपापिनिअवहामिजाहोभजिवतउपदेशगारिअसराह
रुस्वर्गगया॥ तारुप्रोत्तचन्द्रावतिब्राह्मणिलेअसराहरुकोउपदेशपाइसालिनदिमागेस्मा

॥स्वनी॥

॥११५॥

नगरि एक भक्त रहि सक चित्त गरि नित्य मध्याह्न काल मा श्रीमहादेव का पूजा गरी लागि नमन ले
स्वस्थानी परमेश्वरी समि न ॥ ते स्वर्ग दी चन्द्रावति ब्राह्मणिको पापना स भै ऊरु रोग नि को भये
अधिक भन्दा पनि सुन्दर देह भयो ताहा पछि भै दिन भये रमाय अक्षुणी माका दिन संस्र
रासा मागु नया र गरी स्वस्थानि परमेश्वरी को व्रत गरी स्वर्ग का असरा रु रु फेरि सालि नदि मा
आयार चन्द्रावति ब्राह्मणिको असरा छे उगे विंति गरि न ॥ हे असरा हो तू पात्रि रु रु का कृपाले
पोष अक्षुणी माका दिन देहि हा तगो जाको न डकाटि ह्या नगरि अचि भै एक भक्त रहि नित्य
मध्याह्न काल मा श्रीमहादेव का पूजा गरी व्रत गरि र ह्या किछु आज का स जाला इ सा मागु के हि छे
नेक सो गरु भनि नर असरा रु रु भै छु न ॥ हे पापिनि केहि न भया नदि देषि वालुवा त्याइ हा
मा संसर्ग मा व्रत गर भन्ना र चन्द्रावति ले रु व स भनि सालि नदि देषि वालुवा त्याइ सा मागु रु

॥११५॥

साइन्.सुस्थानीपरमेश्वरी का वृत्त का प्रभाव लेवाल्वा को सामागुस वै सद्यभैत गारभ यो सो दे
विचन्द्रावतिका मनमा आनन्द भै सुस्थानीपरमेश्वरी का कृपाले म पापिनि माधि दयाग माको
धन्यभनि अ सरा रु रु छे उगे वाल्वा को सामागु सिद्ध भया को कृपा ज्ञानोत्तर कहि न॥ पतिचन्द्रा
वतिकी वचन सुनि असेन सुन्दरी दिवशरी र भया को देषि अ सरा रु रु भं छन॥ हेचन्द्रावति
आज सम्म का मि रु रु तला इ पापिनि भैथो आज देषि तमो नाउ उरा वति भयो भनि नाउ रा
धार आ ऊ रु रु का मसरी मार विविधि पूर्व क वृत्त गरा या चन्द्रावति बाला शिले पू जागरि
सकि रुत मा अर्घ पात्र लि स्तुति गरी ला गि न॥ हे इश्वरी अधि मै ले न जानि अरु को र ले न
पान्ति ला इ निन्दा ग मा सो अपराध क्षेमा गुर्तु व स॥ हे लोक नाथ तया त्रिक साभया सर्वपा
शिका रु द य मा व सि पा प उ रा के सा हि भै र ह्या का य सात पा न्ति ला इ को टि श न म स्कार॥ हे पर

॥ स्व. श्री ॥
॥ ११६ ॥

मेश्वरी श्वरि कर्त्तव्यता स्थितिकर्त्तव्य विष्णु संसार कर्त्तव्य इत्येव तत्रात्रि नैको यस्तान् त्रिपात्रिक न
कोटि २ नमस्कार ॥ हे भगवति पृथ्वि आप ते ज रा उ आ काश यति पंच तत्त्व पनित पात्रि गुणा
नित पनीत पात्रि योगेश्वर का योग पनित पात्रि निरंजन निराकार पनित पात्रि स्थूल सूक्ष्म
पनित पात्रि देवता का देव पनित पात्रि यस्तात्रै लोका नाथ त पात्रि लाइ कोटि २ नमस्कार ॥ हे
हे नाथ अनाथ का नाथ पनित पात्रि मृत्यु का मृत्यु पनित पात्रि काल का काल पनित पात्रि श
क्ति पुरुष तेज का तेज पनित पात्रि ज्ञान का ज्ञान पनित पात्रि यस्ता विश्व रूप त पात्रि ला
इ कोटि २ नमस्कार ॥ यो ब्रह्मा राउ संसार का भा र वो किंच तु देश भूवन पेट भिन्न गुणि योग
निद्रा सित सयन गरिर रुमा पनित पात्रि दुष्ट को संहार गरि साधु को रक्षा यस्तान् त्रि
त्रि लाइ कोटि २ नमस्कार ॥ हे स्वस्थानी परमेश्वरी त पात्रि का स्तुति गर्गा शेष नाग भया

॥ ११६ ॥

ब्रह्माभयासरस्वतीभइन्नइन्नरुहलेपनिनसकाकोमजसिद्धठस्त्रिलेकासकलाभपिनी
काप्रजालेसंतोषभैरवकासमुद्रदोषपारगरभनिअर्घदिइन्॥संस्त्रीप्रागगरिसकिप्रसा
दकिकिअप्रराहुरुभैरुन्॥हेप्रणवतिअवहामिजांछोभनिस्वर्गभागयाचन्द्रावतिवाह
गोपनिसालिनदिकातीरमातृशालेएकछपरवनाइस्वस्थानिपरमेश्वरीमनलेसकि
रातृमाजाप्रतभैरहिन्॥भोलिवैरउज्यालोभयोरसालिनदिमाह्यानगरिअष्टोत्तरस
यमाशेटिअक्षताएवेलिउषटजगिसुत्रपान्दकुइकासुपरिउसग्रासमेतहात
मालि॥हेइश्वरीमेराभाहाप्ररुषछैनन्कक्षाइसोप्रमेरास्वामिनवराजसगचाइभैर
हवसभैरव॥भनिसालिनदिमावहाइदिइन्सयरोटिआप्रलेफलाहारगरिन्श्री
स्वस्थानिपरमेश्वरीकाव्रतकाप्रभावलेचन्द्रावतिवाहगिकोसंस्त्रीपापनासभैअधिका

॥ स्वामी ॥

॥ १११ ॥

भंदापनिपरमसुन्दरीभइन्त्योदेविमनमाआनन्दभैधन्यस्वस्थानिपरमेश्वरीभनिवारंवा
रप्रणामजरिरहित॥ इतिश्रीस्कंदपुराणीकेदारखण्डमाघमहास्यकुमारभगसप्तसम्बादे
चन्द्रावलिब्रतकृतनामश्रीस्वस्थानिपरमेश्वरीकथाविंशोऽध्यायः॥ २० ॥ तारुप्रोतचन्द्रावलि
वाहशिखिलेशालिनदिमावहाइवठायाकाआठरोटिमाचाररोटिएकनागिनीलेपाइन्त्य
हालेमालियसोअपूर्वरोटिकहेवहाइवठायेमेरास्वामिघरमोहेननरुवाहुवर्षभयो
रपनिःकाजानिकतागयोकाछेनउन्लाइन्त्युवाइमकसरिएकैषाउकाहावस्थाकाछे
नरुषवरगरोडुइन्त्योरोटिवाडिषाउलाभनिगंडकिनदिनालासर्वत्रषवरगर्देगइन्त्य॥ फे
रितेहिचाररोटितिनैकास्वामिनागलेपायाएकसोअपूर्वरोटिपानायेरोटिमेरित्ति
लाइन्त्युवाइएकैकसोगरिषाउमपरदेशआयाकोपनिवाहुवर्षभयोअवधरजाउ

॥ १११ ॥

रउइ २रोटि वाडिषाउलाभनि घरआउदासउद्रकारुंगगाका संगममाश्रीस्वस्थानिपरमेश्वरी
कावतकाप्रभावलेनागनागिनीकाभेटभयोरनागिनीवक्रतरुवभै॥हेस्वामितेस्तानिंडु
रभैमलाइएकैकोटिपतिवर्षसम्पत्कतागयेथोमेशभागलेआजदर्शनपात्राकस्तैवदाइ
पठायाकोअपूर्वरोटिपानारुतिमिलाइनपुवाइमएकैकसगरिषाउदुइ२रोटिवाडिषा
उलाभनिगंडुकिनादिनालासर्वत्रमाघोजदाआजदर्शनपात्रालेउषाउभनिआफलेपा
याकाचाररोटिमाउइरोटिदिइन्॥सादेविनागभैछन्॥हेस्वितेस्तैचाररोटिभैलेपनिपा
याकोछत्तलाइनपुवाइएकैकसोरिषाउभनिघरआउदातलाइभैत्यांसेतोषभनाला
षाभनिआफलेपात्राकाचाररोटिमाउइरोटिदियारुवैस्त्रिपुरुषलेचार२रोटिषायारना
गलेनागिनीकाकाषमापाउदिआनन्दलेरह्यनागभैछन्॥हेस्वितेस्तैभयकावाइ

॥ स्वामी ॥

॥ ११८ ॥

वर्षभयो आजयसैरोटिकाप्रभावले भेटभयो अवयोरोटिजश्लेवकाइपठायो तेस्काभोलिकादि
नमाइछामिद्विरुवसहाउकोनासरुवसभनिआसिषदियार नागिनी भंडिन ले श्लाइत
मपनि आशिषदिं कुजश्लेयोरोटिवकाइपठायो ते श्लाइनवग्रुले पिडा नगरुन सवैप
सञ्जभै रक्षागरुन ॥ भूलप्रेतपिशाच राक्षसादिले पिडा गरान सकुन राजलक्ष्मी ते
स्कावसपरुन रुमिरु रुका रै स्त्रिपुरुष विजोगभयापनिचाडोभेट रुवसभनि नाना आ
सिर्वादि नाग नागिनी नाग लोक मागया ॥ ताकाप्रोत्तरावरपे देशकालोकरु सशालि
नदीमाहात्म्य गरानिआयार चन्द्रावतिवासरालाइयकै वस्याकिदेवि के हने देखा
किसुन्दरी स्त्रिदेविलोकरु रुले सोधनलाग्ना तिमिदेवकंन्या होकि गभर्वकंन्या होकि ॥
किन्नरकंन्या होकि विद्याधरकंन्या होकि स्वर्गकाउरव अक्षरा रु रु मारं भा होकि तिलोत्त

॥ ११८ ॥

मा उर्वशी लोकी मेन का लोकी मेन का लोकि घ ता चि लोकि छर्व चिनि लोकि सुके सि लोकि स
लै आका का काम लेव स्या कि लो गंगा का ली र मा व सि अ मिथ्या क रान ग र प तिलो क ह रु
का वचन सुनि चन्द्रावति वा सगि भं कि न् ॥ हे लोक लो म देव कं त्या पनि हो इन ग भव वं क
न्या पनि हो इन कि न् र कं त्या पनि हो इन वि धा व र कं त्या पनि हो इन अ स ग ॥ ह रु मा
पनि हो इन ॥ म के ऊं भ न्या व रु गा पुर का अ गि स्वा मि वा स ग कि उ त्रि च न्द्रा व ति ना उ ग
मा कि गो मा वा स गि का उ त्र न व रा ज वा स ग कि सि उं स्व र्ग का अ स रा ह रु हि जो य स न
दि का ली र मा आ इ श्री स्व स्या नि प र मे श्व री को व न ग मा र मे ले पनि उ नै का सं स र्ग मा व
त ग मा र रा त्रि मा जा गृ स भै औ हे ह्या न ग रि इ श्व री स्म र गा ग रि के दि षा इ मा इ न आ
उ कि भ नि व स्या कि कु भ नि न् र ग मा वा स गि का उ त्र न व रा ज भ न्या का ल हा मा देश

॥ स्वः श्री ॥

॥ ११३ ॥

काराजी भयाका छन्दः यो कुरा हो हो इ न रा जा कारु जु र मा विंति गरि हे रु भ निलो क रु ले आ
श्रय मा नि द की र ग यार रा जा कारु जु र मा विंति ग मा ॥ हे म हा ग ज व रु रु शा पू र का अग्नि
स्वामि ब्राह्मण कि उत्रि गो मा ब्राह्मण का उत्र न व रा ज कि स्त्रि च न्दा व ती ना उ ग मा कि उ भं छि
न अ सं त स न्द री स्त्रि शा लि न दिका ती र मा व सा कि छ न्द हो हो इ न वि चार ग न्द व स ॥ य
ति लो क रु रु का विंति सु नि न व रा ज रा जाले च न्दा व ति ला इ स म्भ्या ॥ हे लो क हो ति मि रु
रु ले करे स म्भ जा ये ॥ व रु शा पू र का अग्नि स्वामि ब्राह्मण कि उत्रि च न्दा व ति मे रि स्त्रि हो
ग जे का भो ग ले वि लि रा ध्या था अव ति मि रु रु ले गै रा कि त्या उ म प नि पर स म्भ लि न आ
उ ला भ नि पाल कि ना ना व स्र आ लं का र प ठा इ दि या फेरि मं त्रि ला इ रा कि भं छ न्द ॥ हे
मं त्रि हो मे रि स्त्रि च न्दा व ति शा लि न दिका ती र मा आ या कि छ रे रा व रा पे दे हा का प्र जा स द

॥ ११३ ॥

शी लो क ह रु ले ना ना व स्तु आ लं का र पै क्रि ना ना जी द वा घ ग रि लि न जा उ न् ज्वा लि पि टा इ
दे उ म प नि प र स म्म लि न आ उ ला ॥ हा ति घो डा र थ छ त्र चा म र व्ध ज न इ त्या दि त या र ग
र भ नि आ हा या र मं त्रि ले रु व स भ नि स रु र मा ज्वा लि पि टा इ सें स र्शी लो क ला इ लि न प ठा
या ॥ हा ति घो डा र थ छ त्र चा म र व्ध ज न स या र ग रि मं त्रि ले फौ ज स मे त लि ग या अधि जा
न्या लो क ह रु ले च न्द्रा व ती छे उ प्र मि सा लं ग प्र गा म ग रि ॥ हे म हा रा नि न व रा ज रा जा
का रु कु म ले त पा नि ला इ लि न आ नू यो पा त्कि व स्तु अ लं का र त्या या को छ लि न रु व स चो
हो जा उ भ न्या र च न्द्रा व ति म न २ भं छि न्ध न्य २ श्री स्त स्या नि प र मे श्व रि मे रा स्वा मि न
व रा ज स ग चा हो भे ट रु व स भ नि हि जो व त ग या था भा जै प्र त्ये क्ष पा त्रा ॥ हे भ क्त व त्स ल क
रु गा नि धि न या इ ला इ को टि २ न म स्का र ॥ हे भ ग व ति त पा इ का कृ पा ले म प नि रा व रा प देश

॥ स्वः ॥

॥ १३५ ॥

कारानि कुनला गण पापि निना उपाइ इरव कासमुद्रमाडुवा किला इपारगर्भये ॥ रे इश्वरी
तपानिले सुदृष्टि गर्ना लेवृत्ताले चतुर्दश भवन शृष्टि गमाया यस्त तपानिला इकोटि
२ नमस्कार भेदे वरुत रु वमान ले अनेक वस्त्र अलंकार पै क्रिया त्कि मा वसि रा वराप दे
श जान भनि गइ नर ॥ सरु रवाहिर उग्या पछि रा वरापे देश का स्त्रि रुरु ले चाल पाया र
रु शा भ निरु त पता इक न क से ले प स्त्र्या का भात छाडि नि स्त्र्या क से ले बा दा बा दे हा ले
न चु ठि नि स्त्र्या क से ले छोरा छो रि को कि नि स्त्र्या क से ले छोरा छो रि रु वा ड दे छाडि नि
स्त्र्या ॥ द ग द मा क से का हात जो हा मा चो टला गे क से का क पाल मा ठ कर ला गो क से का हा
त भा चो क से का उ दा भा चो नू वरा जरा जाले चन्द्रा वति ब्राह्मणि ला इना ना मे ग ल जात्रा
गरि रा वरापे देश गुमा इद वार मा प्रवेश गराया ॥ इति श्री स्कंद पुराणे केदारखण्ड मा

॥ १३५ ॥

पमा हात्स्य कुमार अगस्त्य संवादे चन्द्रावतिराजगृहे प्रवेशनाम श्रीस्वस्थानि परमेश्वर
श्रीकथासक विंशोऽध्यायः ॥२१॥ ताहा प्रान्त ॥ हे अस्म्य मुनि चन्द्रावति ले गो मारा निका पा
उमा परि प्रणा मगरि नर आ म्हा स्वामि न वरा जमहा रा जका पा उमा परि सा खे ग वणा न
गरि नः सो दे धिरा व रो वति रा नि ले य नि चन्द्रावति रा नि ला इ पा उमा परि दरा व त गरि
नः य स्ते अ न्यो न्य प्रणा मगरि स कि न वरा ज रा जा ले व रो आ दर गरि व स भ नि वि ध्या उ
ना मा व सा लि भे छ न ॥ हे स्त्रि ति म्हा उ र व न दे ध्या को पा च व र्ष भ यो लि न भ नि हो सा रु रु
प ठा म्हा उ नि प नि फि रे न ति ति ले प नि कि न विल म्भ ग म्हा म रा जा भ या को चाल पा यो
न कि म्हे ले त रा ज्य को भो ग ले ति मि ला इ वि र्म्य को धि म्हा फे रि सा लि न दि का ती र मा आ इ क
ति न इ रा इ स स्ते क्वा काम ले व सि थो रा व रा प दे श का लो क रु रु ले प नि क हे न न कि ति मि

॥ स्वामी ॥

॥ १३९ ॥

पनि अचिकि जसि दे नौ यो ह तं त करु अचिकि मिरु रु नाना दुःख पा ना थुं अव श्री स्व स्याम
नी पर मे श्वरी का कृ पा ले रा व रा प दे हा का रा जा भ न्द्र म नु ष ज न्द्र लि या को सा फ ल्य भ यो
भ नि न व रा ज रा जा ले भ न्द्रा र च न्द्रा व ति भं छि न्द्र ॥ हे स्वा मि म मा इ त गे व स्या कि पि त्रा
त पा नि त्रा रा रा जा भ या प छि म ला इ लि न भ नि हो ला ह रु ग या थ्या रा जा भ या को व व
र ति नि रु रु का उ र व दे वि सु न्द्रा थ्या नो रु रा सु नि व डो ह र ले मे रा वा वा म रु तारि छे उ
गै क त्वा र वा वा म रु तारि ले प नि चा डो जा भ नि वि दा दि या हो लि मा च हि कै हू मे रा स्वा
मि का दर्शन पा उ ला भ नि रु रु प ता इ वा रा मा आ उ दा हु ला व न मा आ इ उ ग्गौ ते सै दि
न मा मा घ अ क ह रा मा प मा को र हे छ ॥ स्वर्ग का अ म रा रु रु आ इ स्व स्या नि पर मे श्वरी
का व्र त ग दी र स्या छ न्द्र डो ला रु रु ले दे व्या छ न्द्र रु रु मि रु रु ला इ भो क ला गो ता रु के हि

॥ १३९ ॥

पाया आइ आउ भनि प्रधानिले डोलि था मि मला इताहि को डि अ स गरु रु ले स्वस्थानि
पर मे श्वरी को व्रत ग या का ठा उ मा ग या क न र अ स गरु रु का संसर्ग मा व्रत ग रि प्र मा
दलि फेरि म के उ आ इ ॥ हे मला गानि अ स गरु रु ले स्वस्थानी पर मे श्वरी का व्रत ग रि ला
गा का र ह्या क न र का मिले य नि उ न्का संसर्ग मा व्रत ग र्द विलम्ब क न ग यो क्ष मा ग र त पा
त्रि ला ह प नि स्वस्थानी पर मे श्वरी का प्र सा द ल्या इ दिया को क ले उ भ न्या ॥ ते स वे ला मा मे
रो ज्ञान ला इ अ भ्व का र ले को प्यो र डोलि दे छि व र्ति अ रुं का र ले डोल्या रु रु का रान दे छि
प्र सा द वो सि थु थु ग रि कु ल चि दि त्रा श्री स्वस्थानी पर मे श्वरी ला ह प नि ना नात रु ले नि
न्दा ग रि डोल्या रु रु ला इ वै ग या ॥ म रि सा या कि दे छि उ र ले के लि भ न्न म स कि आ वा दे छि आ
सु व सा लि उ प ला गि डोलि वा कि दि ड्या सा लि न दि त री ला ग्दा अ क स्मा त्त्वा द नि टा गा ज जो

॥ स्वः ॥

॥ १२१ ॥

मेघ भै सुसल प्रमान धारा गरि पानि वस्योः तुलो वता स आ योरः डोलि देषि वसि सालि
नदिका माऊ मा पया डोलि र डोल्यारु रुक सो भयो मजां दिन मला इन दिवा टजि कि पाषाण
कक्षेमिलका मथो त्यो पनि थाहा पाउ दिन ॥ घरी र माऊ वुड पजि हा लपाउ वसि क्षरो
मा मुर्का ऊन्या क्षरो मा चे हा ऊन्या मय सिऊ भन्या ज्ञान पमिर हेनः सालि नदिका तीर
मा पडि र हा एक दिन घात लपा पाकि पाच दिन भया कि थिना कपिल नाउ गुमा कान
वहर का ब्राह्मण राडु इभा इते ते वाट आया रः मै ले को हो कता वाट आये भनि सोधा
र ब्राह्मण राहु ले हा मि ब्राह्मण राऊ रा व रापे दे हा मा रा जाले वस भोज को निमंत्रण गमार
भोज घात जाँ हो भन्या ॥ मै ले उ सो भया मला इ पनिके हि मा गिल्या इ दिया भन्यारः ब्राह्मण
रु रुता हा आ इ भोजन गरि म छे उ आया मै ले के हिल्या इ दि यो कि भनि सोधा ब्राह्मण राहु

॥ १२२ ॥

रुले॥ दे पापिनी तेरा निमित्त कामिला इवरो समिपये तेरो ना उगर्दे मारा जा का संहरा भइर सु
किगयो रात्रिलाह पकाया को भातर रहे छ त्या इदिया को कला भनि पातमा भात दिशा भो कले ते से
खनलाग्दा बालरा रुले भन्ना॥ दे पापिनी तेरा अवसा मापरि कन पनितला इ धर्म को चेहर
हे न छ तेरा तेरा अवसा देषि कामिला इ अति करुणा भयो मुख धोइ खा श्री स्वस्थानी परमेश्व
री को वतगमा सरुपा य को ना सहोला भनि बालरा रुगया॥ मुख उभ निशालिन दिमाग
या र म जानि मात्र शाली नदि को जल सु किगयो त्यो देषि माधि आइ मुख धोइ खा उभ
न्दा त्यो भात घरानि भयो घरानि पनि घा उभन्दा हु लो वता स आयो रु उडाइ ल गयो त वना
ना शोक दुःख ले रोइ शीत ता प भो क ले पिया स सहि म हा क छ ले शाली नदि का तीर मा प
डि र ह्या॥ ता हा प छि पौ घ भक्त पूर्ण मा आयो र स्वस्थानी परमेश्वरी को वत आरंभ गरि भ

॥ स्वामी ॥

॥ १३३ ॥

निस्वर्ग का असर हरु शाली नदि मास्मानगरी लाग्ना को मैले दे ब्यां र हात पाउटे कि बडा कहिन
ले गे भन्ना तिमिरु को रौ मैले बान्ना कुरो के रि पाय न के हि भया दे उ का पा प ले म यत्ति भ
भा क सो ग पा उ डार रु ला भन्ना र असर हरु ले म दे बि द या गरि ॥ हे पापि निरु मिस्वर्ग का अ
सरा ऊ आज पौष शुक्ल दशमी मासे स्वस्थानि परमेश्वरी को व्रत आरंभ गरी ह्य नगरी आभू
त लाइ दे बि रु मि लाइ अति दया भये तं पनि इ मै स्वस्थानि परमेश्वरी को व्रत गरु उ डार
रु रि स भन्ना ॥ मैले य स्ता अवस्ता मा पमा कि म पापि निले क सो गरि व्रत गरु सामा गृ का
हा पाउ ला को दे ला का का चाहि छ भन्ना र असर हरु ले ॥ हे पापि नि आज दे बि ह्य नग
रि शुचि भै एक चित्त गरि एक भक्त रहि मै र दिन सम नि स म ध्या रु काल मा श्री महा देव
का रू जा गर्नु स्वस्थानि परमेश्वरी को कथा रु सुत्र मा प शुक्ल दशमी मा का दिन रो टि १०८ अक्ष

॥ १३३ ॥

ना १०८ वे लि पुष्प १०८ जग्नि सुत्र १०८ पान १०८ ऊह का सुपारि १०८ जात २ का सुलत पारग रि अ
सिर्मा जै कार ले विगंगा जल ले लान गरा उ नु स्व स्थानी पर मे श्वरी को ह जा ग नु ज प न प ध्यान ग
नु र मे रा फ ला ना काम सिद्ध रु व स भ नि अ र्घ दि प्र सा द जि क नु उ नै हो त र स य मा रो टि ८ अ
क्ष सा ८ वे लि पुष्प ८ जग्नि सुत्र ८ पान ८ ऊह का सुपारि ८ स ग न स मे न आ का उ रु व ला इ दि
नु उ रु व स भ य को रा ला इ दि नु हो रा न भ य मि त्छो रा ला इ दि नु मि त्छो रा प नि न भ य नु न
काम ना ले आ फ ले व न ग मा को हो स्व काम ना पू रा रु व स भ नि गंगा मा ल गि व ला उ नु स य
रो टि आ फ ले फ ला हा र ग नु रा त्रि मा जा त्र तर रु नु य ति ग मा प छि ते रा सं ह र्ण पा प को ना
स हो ला भ नि अ क्ष रा रु रु स्व र्ग ग या ॥ मै ले प नि उ नै का उ प दे श ले पौ ष श क्त पू र्ण मा दे वि
हा त गो डा का न डू का टि स्ना न ग रि छ वि भै एक भ क्त र हि एक चि त्त ग रि नि त्त म ध्यान काल मा

॥ स्तुती ॥
॥ १३४ ॥

श्री महादेव का पूजा गमा मा पशु कर्तरी मा आये र फेरि अस राह रु स्वस्थानि पर मे श्वरी को
वृत्त गरी भनि ताहि आया ॥ हे स्वामि स्वस्थानी पर मे श्वरी का वृत्त काय भाव ले मे रो कृष्णि
को रु दे गये ला तपा उ अघि का ज सौ भये रा अस राह रु छे जा इ विंति गमा ॥ हे अस राह
मे ले प नि ह रि मा को दिन देखि रु क भक्त रहि स्नान गरि नि स म ध्या रु का ल मा श्री महादे
व का पूजा ग रु आ ज स्वस्थानी पर मे श्वरी को पूजा गरी ता इ सामा गृ छे न क सो ग रु भ न्या रा
अस राह रु ले भ न्या ॥ हे पा पि नि तें छे उ सामा गृ के दिन भ या न दि देखि वालु वाला इ सामा गृ
व नार रु हा मि रु रु का स सर्ग मा वृत्त गर भ न्या ॥ मे ले लौ भ नि न दि देखि वालु वाला इ से पूरा
सामा गृ व ना आ श्री स्वस्थानी पर मे श्वरी का वृत्त काय भाव ले वालु वा को सामा गृ स व भै त
या र भ ये वालु वा को सामा गृ त या र भ या को रु मे रो कृष्णि को भ या को देखि अस राह रु रु

॥ १३४ ॥

सिधै भन्मा ॥ हे पापिनि तला इहामिह रु यति सम्प्रपापिनि भंथौ आ जदे धिते रो ना उ उ गपे
वति भये भमिना उ ग घा र उ ने सामा गले अ सग रु रु का सं सर्ग मा स्व स्या नी पर मे श्वरी को व्रत
ए जा ग मा सं सर्ग पू जा ग रि स कि अ सग रु रु स्वर्ग ग या मैले पनि स्व स्या नि पर मे श्वरी को प्रसा
द उ ने अ छे तर स य मा रो टि ट अ भ ता र वे लि उ ष ण ज ग रि सु त्र ट पान ट ड ड का म्प रि ट स ग
गा म मे न हि कि सो प तु ला इ उ स वे ला मा मे रो को हि न ऊ ना ले मे रा स्वा मि सि त चा डो भै ट रु
व स्र भ नि मा लि न दि मा व का म्प स य रो टि आ फु ले फु ला हा र ग मा रा त मा जा गृ त भै र ह्या ॥ उ
आ लो भ यो र सा लि न दि स्ना न ग रि के हि षा इ मा इ त जा न त या र ऊ दा लो क रु रु लि न उ ग्गा ॥ हे
स्व मि स्व स्या नी पर मे श्वरी ला इ नि न्दा ग मा को पा प ले ते स्ता अव स्ता मा प मा कि म ला इ फे रि
उ ने इ श्वरी का रु पा ले र क पि ल वा स्त रा अ सग रु रु का उ प दे श ले म य सि भ भ्रा त पा इ का द

॥ स्तुती ॥

॥ १३५ ॥

ई नमो नमो श्री स्वस्मिनि परमेश्वरी देवि तुला देवता अर्को रहे न छन संसारी व्रतका व्रतपनिति
नै धर्मका धर्मपनिति नै कालको कालपनिति नै ॥ देवताका देवपनिति नै ॥ देवि स्थिति संसार
कर्त्तापनिति नै आत्मा परात्मापनिति नै पापपुण्यका साक्षिपनिति नै ॥ यस्ता इश्वरी लाइ कोटि
२ नमस्कार ॥ यति चन्द्रावति कि वचन सुनि गोमागानि वरुत पुमि भे अंजलि वाधि ॥ हे स्वस्मि
नि परमेश्वरी भजित मस्कार गरि भंडि न ॥ हे चन्द्रावति ते सा अवसा मापरिक न पनित
श्वरी को भक्ति गरी सक्ता नै धर्मरुद्ध सत्तेहि ऊराम पनिक रुकु सन ॥ ते रास्वामिन वरा
ज आक्रावा वाका वरग याप हिते लेपनि छोडि माइत गइ सर घर मा को हिन कुना लेधा
गो काति अर्को कोटि कि जां तो गरि निर्वाह गया वरुत दुख पाया एक दिन सप्तक विरुत आ
या छन र मे ले दुख पाया को देवि वही दया गरि श्री स्वस्मिनी परमेश्वरी को व्रत गर दुख का

॥ १३५ ॥

समुद्र देवि पार होलि सभनि उपदेश गमा नैले करुदा रै से पूरा व्रत का विधि क ह्यार क विरु रु
ला इ भोजन गरा उ न्या घ र मा के हि न ऊ दा च र्वा मारा घा को धा गो को ल लियालि व रहिका घ
र ग न्या पा नलि आ उ दा क विरु रु गै ग या छन ॥ उ नै रु रु व स्या का पि रु का उ ठा इ हे दा सा त उ
ठा सु न का को डा का ही ग या को दे वार ते हि उ बले सं पूरा सामा गृ त या र ग रि यो व थ रु पू री
मा दे वि व्र त भारे भ ग मा मा घ अ रु पू री मा का दिन व्र त पू री ग रि प्र सा द हि कि स्व स्या नी पर
मेश्वरी मन ले स म्मि र त मा जा गृ त भै र व्या कि थि मा धे रै रा त ग या र छि ते रा स्वा मि न व रा
ज आ इ उ गि पा हि र व सि हा क पा यो मै ले स्व र चि द्वि चं डे उ ठि वा हि र गै गा डा थु वा इ भि ज
डा किल शि यान पि न दि यार ते रा वा वा का व व र का छ भ न्या ते रा स्वा मि ले आ मा वा वा मि सा
मा ग्न ग या का रै गा का ती र उ गि ह्या न ग रि आ मु नि त पू जा रा री ला इ रु धि जा अ म मा गै रु

॥ स्वः श्री ॥
॥ १३६ ॥

वचहि ह्रलटि प्रलाग्दा रुष देषि षसि म सुभ या को वृत्तांत क ह्यो द द्रा क्रियादि ग रि आना भ मे ले ति
म नि मे ले ना ना सो क ग दी ते रा स्वा मि ले ॥ हे मा ता सो क न गर भ नि ना ना तर रु ले तु जा यो र हे मा
ता आ ज य स वे ला स म न सु ता को के न हो ना ना फ ल ह्र ल सु ग भ व को वा स आ उ छ का का म ग
श्री भ यो र मे ले ॥ हे उ त्र स्व स्थानी पर मे श्वरी को वृ त्त ग या त व इ श्वरी म न ले स कि जा य त ग
रि र ह्या कि छु भ नि क ह्या र स्व स्थानी पर मे श्वरी को प्र सा द उ नै अ शो न र स य मा गे टि र अ क्ष
ता र वेलि उ ष ट अ जि न सु त्र ण न र कृ दू का मु ण रि ष म गु रा स मे त मे रा उ त्र न व रा ज ला
इ भ नि य र सा मा को धि यो उ ज्जालो भ यो र प्र सा द लि न ला इ गं गा मा मा स्ना न ग रा भ नि न
व रा ज ग यो गं गा मा स्ना न ग दी गं गा दे षि श्री रु री हर प्र त्य क्ष भे ॥ हे न व रा ज वा स्ना रा ते रि
म रु ता रि ले स्व स्थानी पर मे श्वरी को वृ त्त ग रा ले हा मि सं तो य भ म्भू त ला इ व र दा न दि छे

॥ १३६ ॥

रावण देवमाग जा कै न नरु हाति लाइ राजा घो ज न ला या को क हा मि हा ति छे उ प्रवेश
भैरु क ला सं ता हा आ या स हा मि अ भि शेष दि ला र राजा हो ला स भ नि अ न ध्या न भ या क
न ते रा स्ता मि आ इ म छे उ त ता न क हो ॥ त्यो सु नि स्व स्था नि प र मे श्व री को प्र सा द सौ पि षा
न पि न दि ॥ हे पु त्र श्री ह री ह र का आ ज्ञा ले त रा व ण दे श जा रा व ण दे श को रा जा भ या स
भ नि अ सि का द दि य ठा या जो न इ श्व री को स्म र रा ते ले य नि ग रि ह स उ नै इ श्व री का क
पा ले यो रे श्व रं रा ज ल क्ष्मी पा इ सु वि भ भू अ व य नि जि उ न ज्ञा ल स म्म स्त स्था नी प र मे
श्व री स वै का ह द य मा व स म्म उ नै का क पा ले इ ह लो क मा स ख स प ति पा इ प र लो क मा मो क्ष
हो ला ॥ फे रि सु न ज सै रा त मा च न्द्र मा न भ या सो भा ऊ दे न दि न मा स र्य न भ या सो भा ऊ दे न
त सै म उ व्वा का य नि स ख भा व भ या कि सि न भ या घ र ऊ दे न त स र्थ ले मे रे व इ अव स्ता

॥ स्वामी ॥

॥ १३१ ॥

भयो तिमिरह रुड्डगानिदिदि वैह्रि मिलि परस्पर रण जलक्षी था मिमेरो पुत्र न वराज को सेवा
गरि रऊ भनि च न्यावति रावने वति रा नि दु वेला इ गो मा म हा रा नि ले स पू र्ण ठ ड टि को सा को
ताल सोपि दि इ न्य ॥ यति गो मा म हा रा नि के ऊ ऊ म सु नि ति दु वै रा नि ले विं ति ग मा ॥ हे मा ता त
पा नि का त प स्या ले हा म्रा म्रा मि रा जा भ या हा मि प नि रा नि भ म्भू त पा नि ध न्य ऊ नु ऊ व भ नि
पा उ मा य रि द रा व त ग मा ॥ ता हा या त स दा का ल धी स्त स्था नी पर मे श्व री का व त ग रि र ह्या ॥
हे अ ग स्त उ नि जो न म नु व्य ले एक चि त्त भै स्त स्था नी पर मे श्व री को व त ग ल अ थ वा उ न्का
म हा त्मा ले षि च र मा रा ष ला ले स्का च र मा दा रि ड के हे प नि रु वें न ॥ आ दि सा दि न व ग्र ह
ले प नि स धै य स न्न भै र हं व न ल क्ष्मी ले ते स्का च र मा वा स ग किं नू फे रि यो सं सा र मा
ना ना रोग को भ य प नि रु वें न अ का ल मृ त्यु प नि रु वें न रा ज भ य चो र भ य हा नु भ य प नि

॥ १३१ ॥

॥ स्व. त्री ॥

॥ ११९ ॥

रुवेन अग्नि भय वन जंतु को भय पति रुवेन ॥ वस्त्र रुखा वाल रुखा स्त्रि रुखा गौ रुखा दिना
ना पाष कोना सभै इ रु लोक मा संप ति पा इ प र लोक मा कैला श वा स होला गौरी शंकर का चर
गा र विन्द मा र रु न पा उ ला भ नि रु मा र ले अ ग स्य मु नि ला इ क ह्या को स्व दि क था ने मि षा
र रा पे क्ष त्र मा स्र त्र पौ रा नि क ले शो न का दि अ ठा सि रु ज्जा र क षि रु रु ला इ क रु दा भ या ॥
इ ति श्री स्कं द पुरा णो के दा र रु रा गे मा प मा रु स्म ऊ मा र अ ग स्य स वा दे गो मा च न्द्रा व ति स
वा दे ना म श्री स्व स्या जी पर मे श्व र्या क था वा विं बो ध्या यः ॥ २२ ॥ सम्वत् १८४८ साल मि मि
ति यो ष व दि ५ रो ज ५ मा वि रु म ति नि क टे स्त य पि मा इ दे व स्य ले लि खि त म् ॥ ॥

॥ ११३ ॥



श्री २२८२

2282 I

ASHA ARCHIVES



ASHA ARCHIVES

2282

I